देसहरियाणा

ISSN 2454-6879

मूल्य - 50 /-   अंक - 26, नवम्बर-दिसम्बर, 2019

लोक आख्यानों का दस्तावेज



ISSN 2454-6879

देसहरियाणा

साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का मंच

पता :

देस हरियाणा, 912, सैक्टर-13, कुरुक्षेत्र, (हरियाणा)-136118

संपर्क : संपादकीय - 94164-82156. व्यवस्था - 90501-82156

Website: desharyana.in

ई-मेल : haryanades@gmail.com

सहयोग राशि

व्यक्तिगत: 3 वर्ष 500/, 1 वर्ष 200/-

संस्था: 3 वर्ष 1400/-, 1 वर्ष 500/-

आजीवन: 5000/- संरक्षक :10000/-

देस हरियाणा के ऑनलाईन भुगतान के लिए

Account Name - Satyashodhak Foundation

Bank Name - Allahabad Bank, Kurukshetra

Account No. - 50490177180

IFSC: ALLA0211940

प्रकाशित रचनाओं में प्रस्तुत विचार एवं दृष्टिकोण से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

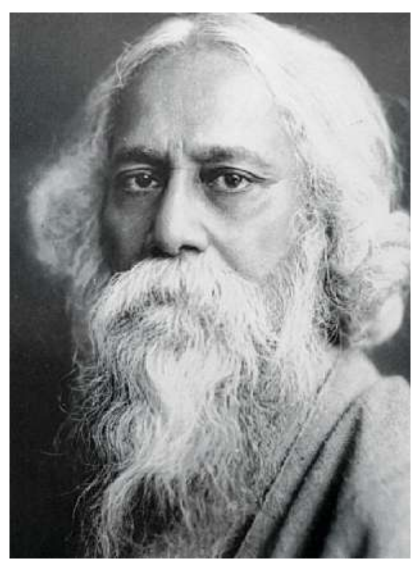
सम्पादक एवं संचालन अव्यवसायिक एवं अवैतनिक, समस्त कानूनी विवादों का न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र न्यायालय होगा।

स्वामी-प्रकाशक - मुद्रक सत्यशोधक फाउंडेशन, 912, सैक्टर-13, कुरुक्षेत्र हरियाणा

अनुक्रम

लोक साहित्य का विशुद्ध अथवा आदिम पाठ कहकर कुछ निर्णय करने का कोई उपाय भी नहीं है, उसका प्रयोजन भी नहीं है। परंपरागत विरासत के पथ से चलते हुए हजारों प्रतिकूलताओं के बीच भी ग्रामीण साहित्य जड़ित-मिश्रित-परिवर्तित होता आ रहा है, ये देशकाल पात्र विशेष के कारण प्रतिक्षण अपने को अवस्थाओं के अनुसार उपयोगी बना लेते हैं।

- रवींद्रनाथ टैगोर



जीवनधाराओं के समन्दर हैं लोक आख्यान

मनुष्य की सबसे आनंददायक क्रिया है - बातें करना और बातें सुनना। बातें सुनने और करने का आदिम युग से ही मनुष्य का साथ बना रहा है। परस्पर संवाद मानव जाति की सामाजिकता और प्रगति का आधार है। अपने अनुभवों-भावों-विचारों को संरक्षित करने और पीढ़ियों को हस्तांतरित करने के लिए मानव अपनी संवाद शैलियों को निरंतर परिष्कृत करता रहा है। इसके लिए अनेकानेक विधियों-तरीकों की खोज करता रहा है। किस्सों, कहानियों, गीतों, गाथाओं, आख्यानों, नाटकों की रचना इसी प्रक्रिया का हिस्सा हैं। मनुष्य ने अपने जीवन-संघर्षों और आकांक्षाओं को इनमें संयोजित किया है और इनकी सामूहिक अभिव्यक्ति की परंपराएं स्थापित की।

आधुनिक युग की भोग-दौड़, आपा-धापी और जीवन में तकनीकी यंत्रों की अत्यधिक उपस्थिति ने मनुष्यों के बीच के सीधे संवाद को कुछ कम किया है। ज्यों-ज्यों मनुष्यों के बीच संवाद घटा है त्यों-त्यों जीवन में तनाव, निराशा और उदासी बढ़ी है और मानव जीवन में आस्था भी घटती गई है। सीधे संवाद के माध्यम से मुनष्य अपने दुख-सुख को बांटता है और इस प्रक्रिया में ही जीवन में उत्साह, ऊर्जा व आस्था का संचार होता है।

कुछ 'अधिक सयाने' लोग बातें करने को 'गप्पबाजी' की संज्ञा देकर बातें करने को वक्त की बरबादी कहते हैं, लेकिन उनको यह नहीं भूलना चाहिए कि बातें करना मानव की ठीक उसी तरह से नैसर्गिक आवश्यकता है जिस तरह सांस लेना। सीधे संवाद को सर्वाधिक प्रभावित किया है मोबाइल नामक यंत्र ने। मोबाइल में प्राण डालने वाली संचार कंपनियों के विज्ञापनों का 'ब्रह्मवाक्य' भी अधिकाधिक बातें करना-करवाना ही है, इसी से वे ग्राहकों को अपनी ओर आर्कषित करती हैं।

तकनीकी यंत्रों को अपना 'सच्चा व विश्वसनीय साथी' मानने की प्रवृति मनुष्य को आत्मकेंद्रित कर रही है। रेलगाड़ी या बस में लोग अपने सहयात्रियों के साथ मौसम से लेकर देश-दुनिया की बातों में मशगूल हो जाते थे और अपनी व्यक्तिगत उलझनों को भी संकेतों में ही सही साझा कर ही लेते थे। आजकल सबके हाथ में मोबाइल नामक ऐसा यंत्र है जिसके होने पर मनुष्य खुद को इतना 'पूर्ण' व 'आत्मनिर्भर' समझता है कि अपने पास-परिवेश कटकर अकेले द्वीप की तरह बैठा या खड़ा रहता है।

बतरस विहीनता हमारे समय की सबसे बड़ी विडम्बना है। शहद से भी मीठे बातों के स्वाद से पूरा युग ही वंचित हो रहा है। इस स्थिति ने मानव की सर्वोत्तम उपलब्धि भाषा पर ही प्रश्नचिह्न लग रहा है। भाषा तो बातचीत से ही फलती-फूलती है।

परम्परागत कथाएं-गाथाएं शताब्दियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी मानव समाज के बीच मौजूद हैं, तो स्वाभाविक है कि समाज में उनको सुनाने-गाने वाले भी कुछ विशेष वर्ग रहे हैं, जिनका पेशा ही कथा वार्ताएं सुनाना रहा। मिरासी, डूम, ढाढी, भाट, चारण, जोगी, भराई आदि विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न जातियां आनुवंशिक तौर पर इस काम में संलग्न रही हैं।

मौखिक तौर पर प्रचलित कथाएं समुद्र की तरह हैं जिनमें समाज की जीवनधाराएं समाहित हैं। इन कथाओं के माध्यम से जीवनधाराओं की रूप-रचना के विविध पहलुओं को समझ सकते हैं। सामूहिक तौर पर की गई बातों में बुद्धि के साथ पूरा शरीर रोमांचित होता है। जब कोई सदेह श्रोता समक्ष होता है, तो यह सदेह श्रोता कथा, वार्ता के विषय, रूप, शैली को प्रभावित व निर्धारित करता है। श्रोता-दर्शक को अनदेखा करके कुछ भी संप्रेषण संभव नहीं है।

'लिखितम को बकतम' से श्रेष्ठ की आधुनिक मान्यता ने मौखिक परंपराओं को अपदस्थ करने में भूमिका निभाई है। मौखिक कथाओं को पुरातन मानने की प्रवृति को भी स्थापित किया है, लेकिन मौखिक कथाओं का अपने श्रोताओं के साथ हमेशा ही जीवंत संबंध होता है इसलिए ये अपने वर्तमान से गहरे से संबंद्ध रहती हैं और प्रासंगिक बनी रहती हैं।

लोक विवेक ही लोक संस्कृति का मूल है । लोक साहित्य के विभिन्न रूपों लोकनाट्य, लोकगाथा, लोकगीत आदि में लोक विवेक ही प्रवाहित होता है। जीवन के विविध अंगों और रूपों में निरंतर पुनः पुनः प्रवाहित होने पर लोक विवेक परंपरा का रूप ग्रहण करता है। दरअसल लोक विवेक को पहचानना ही किसी लोक संस्कृति को समझना है।हर सांस्कृतिक ईकाई का लोक साहित्य विविध रूपों में होता है, जो मनोरंजन के साथ-साथ स्थानीय संस्कृति के मूल्यों का वाहक भी है। किसी समाज के सामूहिक व्यक्तित्व के निर्माण इन रूपों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

हरियाणा का लोक नाट्य स्वांग अथवा सांग है। ऐतिहासिक-पौराणिक आख्यानों के साथ-साथ लोक-प्रचलित प्रेम किस्सों के आधार पर लोक कवियों और गायकों ने सांगों की रचना की है। खोजियों और शोधकों ने सांग की शुरुआत के बारे में कई प्रकार की अटकलें लगाई हैं। किसी ने बारहवीं शताब्दी से तो किसी ने 18वीं शताब्दी से सांग की शुरुआत मानी है। लेकिन इसके समय के बारे में कुछ निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता। परन्तु इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि इसकी उपस्थिति लोक में शताब्दियों से है। यहां हमारा उद्देश्य सांग के इतिहास पर प्रकाश डालना नहीं है।

सांग विधा अभिनय और गायन का मिश्रण है। असल में अभिनय पक्ष बहुत ही सीमित और अधिकांश गायन पर ही टिका है। परंपरागत तौर पर गायक इसको याद कर लेते थे और मेलों-ठेलों में, त्योहार के अवसर पर इनका गायन करते थे।

आर. सी. टेम्पल ने 'दी लीजेंड आफ दि पंजाब' तीन खंडों में प्रकाशित पुस्तक में सांगों को दस्तावेज के रूप में संकलित किया। इस पुस्तक पहला खंड सन् 1884 में, दूसरा खंड सन् 1885 में तथा तीसरा खंड सन् 1900 में प्रकाशित हुआ। आर. सी. टेंपल ने 118 कथाओं को संकलित करने की बात कही है, लेकिन उनकी पुस्तक के तीन खंडों में 59 कथाएं ही उपलब्ध होती हैं। शेष कथाओं का क्या हुआ इसके बारे में कुछ प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। 'दी लीजेंड आफ दि पंजाब' में तत्कालीन पंजाब प्रांत में प्रचलित दंत कथाओं के आधार पर निर्मित विभिन्न रूप हैं। इनमें स्वांग भी हैं, किस्से-कथाएं हैं, भी है, मराठी व हिंदी भाषा के कवि नामदेव का सबद भी है व एक लोक गीत भी है।

लोक साहित्य के संकलन और अध्ययन के बारे में टेंपल ने अपने अनुभव व तत्कालीन लोक साहित्य के अध्ययन की विधियों की सहायता से निर्मित अपने लोक विषयक अध्ययन के संबंध में धारणाएं बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। तीनों खंडों की भूमिकाओं में इस संबंध में विस्तृत प्रकाश डाला है। इनका अविकल अनुवाद इन पन्नों पर आने वाले अंकों में प्रस्तुत करने की कोशिश रहेगी।

अधिकांश कथाएं तो आर.सी. टेंपल ने अपनी देख-रेख में संकलित की हैं, लेकिन कुछ कथाएं मुंशियों ने संकलित की हैं। टेंपल इसके प्रति सचेत थे कि लिपिबद्ध करते समय मूल में परिवर्तन ना हो। लेकिन मूल पाठ में कुछ ना कुछ परिवर्तन होने से बचा नहीं जा सकता। इसके दो कारण थे। एक तो जैसा कि टेंपल ने इसका जिक्र किया है कि ये पढ़े-लिखे 'मुंशी' गायकों की लोक-भाषा का 'शोधन' कर देते थे। दूसरे, इन्हें फारसी लिपि में लिखा जाता था और फारसी से रोमन में लिप्यांतरित किया गया है।

टेंपल ने दंत-कथाओं के पांच तरह के गायकों का जिक्र करते हुए - भाट, मिरासी, ब्राह्मण, चंडाल व आम ग्रामीण- पांच भागों में बांटा है। गायकों के नशा करने की आदत का उन्होंने जिक्र किया है कि कुछ गायक तो नशे के बिना कुछ गाते ही नहीं थे। बहुत कम मेहनताने में वे गाने के लिए मान जाते थे। इसके अलावा उन्होंने यह भी संकेत किया है कि कुछ गायक तो अंग्रेज अधिकारी से प्रशंसा का पत्र पाने के लिए ही गा देते थे । टेंपल ने बताया है कि एक बार में गायक जितना गा देते उसे वे लिपिबद्ध कर लेते। एक बार में लगभग तीन सौ-चार सौ पंक्तियां गा देता है।

असल में आर. सी. टेम्पल ने लोक आख्यानों का संकलन अंग्रेजी पाठकों के लिए किया था, न कि हिंदी अथवा पंजाबी के पाठकों के लिए । इसलिए मूल पाठ के साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद भी दिया है । पाठ में आए किसी घटना, चरित्र, किसी कथा के ऐतिहासिक पौराणिक संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए टिप्पणियां भी दी हैं । इन टिप्पणियों से ज्ञात होता है कि लेखक को भारतीय ऐतिहासिक अथवा पौराणिक कथाओं की विशद जानकारी है। अंग्रेजों ने अपने शासकीय हितों की पूर्ति के लिए लोक साहित्य एकत्रित किया। अपने शासितों की परंपराओं, संस्कृति व समाज के आपसी अंतर्विरोधों को समझकर उनके लिए शासकीय नीतियां बनाने में सहायता मिलती थी। इस संकलन और विश्लेषण में भी यह दृष्टि दिखाई देती है।

टेंपल ने गायकों द्वारा गाई जाने वाली कथाओं को दादी-नानी द्वारा सुनाई जाने वाली कथाओं से अधिक महत्वपूर्ण माना है। इस संबंध में अपना मत प्रकट करते हुए उन्होंने लिखा है कि छंदबद्धता और लयात्मकता के कारण गायक को अधिकांश कथा याद रखनी पड़ती है इसलिए इनमें मिलावट की संभावना कम है। लेकिन समय व परिस्थिति के अनुसार गायकों द्वारा भी पद के पद सम्मिलित कर देने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

'दी लीजेंड आफ दि पंजाब' में हरियाणवी भाषा में कई आख्यान हैं। भाषा की दृष्टि से ये विशेष तौर पर महत्वपूर्ण हैं, इन आख्यानों का समय लगभग वही है जब हिंदी भाषा का आधुनिक स्वरूप निर्मित हो रहा था। इन आख्यानों की भाषायी मिठास अद्भुत है। इनमें से इस अंक में चार सांग और एक गाथागीत इस अंक में पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। शेष आख्यानों को आगामी अंकों में शेष प्रस्तुत किया जाएगा।

इस अंक प्रस्तुत 'स्वांग गूगे राजपूत बागड़ देस का' और 'गोपीचंद' का स्वांग तो स्पष्ट तौर पर बंसीलाल ने प्रस्तुत किया है। 'ढोल' का स्वांग प्रस्तुत किया है बब्याल (अंबाला के निकट) गांव के मैला उठाने वालों ने, तथा 'राजा नल' के स्वांग के प्रस्तोता संबंधी तथ्य की ओर सांग के शोधकों का ध्यान दिलाना चाहते हैं।

आर. सी. टेम्पल द्वारा संकलित 'नल' स्वांग के मंगलाचरण में बालमुकुंद का जिक्र है। सांग के मंगलाचरण में गायक द्वारा अपना और अपने गुरु का नाम लेने की परंपरा है।

मैं लिया हूं सरण, भुजा तुम पकड़ो मोरी ।
कहते बालमुकंद, हाथ तुम्हारी है डोरी ।

लेकिन स्वांग की समाप्ति पर इसमें बंसीलाल द्वारा गाया बताया गया है कि

सांग संपूर्ण करके, माता, पीछे भेंट बणाई ।
कहते बंसी लाल, कुल,मात, तू चार जुगों में दोहाई।

आर. सी. टेम्पल ने मंगलाचरण में प्रस्तुत 'बालमुकुंद' शब्द से अभिप्राय लेखक या गायक का नहीं, बल्कि युधिष्ठर के गुरु ऋषि बृहदस्व से लिया है । ("Balmukund is evidently here the Guru or spiritual adviser of Judishtar and represents the sage Vrihadasva, who repeats the story of Nala to Yudhishtihira to soothe his grief in the orthodox legend of Mahabharta") सांग विधा में मंगलाचरण के शिल्प को देखते हुए आर. सी. टेम्पल द्वारा बालमुकुंद का अर्थ उचित प्रतीत नहीं होता।

हरियाणा के प्राचीन सांगियों में किशनलाल भाट, अलीबख्श, बंसीलाल, शंकरलाल आदि की गिनती होती है। हरियाणवी सांग के इतिहास के बारे में पं. मांगेराम तथा रामकिशन ब्यास की रागनियों को अत्यधिक उद्धरित किया जाता है। पं. मांगेराम की रागनी में दो सौ साल के सांग का इतिहास बताने का दावा है, लेकिन इसमें बंसीलाल के नाम का उल्लेख नहीं है। रामकिशन ब्यास सांग के इतिहास संबंधी रागनी में भी बंसीलाल के नाम का उल्लेख नहीं है, लेकिन इसमें उन्होंने बालमुकुंद का जिक्र किया है।

सन् 1709 में दुबारा सांग फिर छेड़या
बालमुकुंद के चेल्ले गिरधर नै बान्धया बेड़ा
सिबकौर शिष्य का जमना नगर के पास खेड़ा
चेल्ला बण्या किशनलाल भाट का फिर लाग्या गेड़ा
गांव की चौपाल में भी नहीं मिलै ठिकाणा । (रामकिशन ब्यास)

सांग के इतिहासकारों के लिए ये खोज-शोध का विषय हो सकता है कि यह बंसीलाल का स्वांग है अथवा बालमुकुंद का। बालमुकुंद और बंसीलाल में कोई संबंध है।

टेंपल ने 'दि लिडैंज आफ दि पंजाब' की दूसरे खंड में फरीजन (मिस्टर विलीयम फरेजर) से संबंधित दंत कथा दी है। फ्रेजर अंग्रेज अधिकारी था, जिसका 1835 ई. में कत्ल कर दिया गया था। यह दंतकथा अंग्रेजी शासकों के विलासी व क्रूर व्यवहार, भारतीय समाज और अंग्रेजी शासक वर्ग में ऐतिहासिक तनाव और अंग्रेजी शासन के प्रति लोक के दृष्टिकोण को उद्घाटित करती है। इसकी व्यापकता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आर सी टेंपल ने इसके तीन संस्करण अलग अलग क्षेत्रों से संकलित किए हैं। यद्यपि टेंपल ने फ्रेजर की हत्या का कारण कथा में वर्णित कारण से कुछ और बताया है। तथ्यात्मक सच्चाई चाहे कुछ भी हो लेकिन यह तो स्पष्ट है कि यह आम लोगों में प्रचलित थी।

विभिन्न मानव-प्रजातियों की सांस्कृतिक टकराहट के दर्शन भी यहां होते हैं। नाग जाति और आर्यो का संघर्ष कई आख्यानों में है। 'निवल दे' में जनमेजय का नागयज्ञ इसकी ओर संकेत करते हैं। विभिन्न संस्कृतियों की टकराहट और सम्मिश्रण एक सतत प्रक्रिया के दर्शन इनमें हैं। गूगा पीर का व्यक्तित्व और बृहतर समाज में उनकी मान्यता इसका ज्वलंत उदाहरण है। हरियाणा क्षेत्र नाथों-शैवों का क्षेत्र है। सांगों में नाथ पंथ के सिद्धांतों तथा उससे जुड़े महापुरुषों का सांगों में वर्णन यत्र-तत्र आ ही जाता है।

सांगों के बारे में अध्ययन के आरंभ से ही एक शंकालु रवैया रहा है। भद्र समाज में सांगों को अश्लीलता, विलासिता और नग्नता की खान, 'आशिक माशूकों के बेढंगे वर्णन और विलासप्रियता की भूंडी भावना', अपसंस्कृति का स्रोत, सस्ते मनोरंजन के रूप में देखा गया। यहां प्रस्तुत सांग उदात्त कविता है, जिनमें मानव जीवन के समक्ष दरपेश नैतिक संकटों और सामाजिक-पारिवारिक संबंधों की अभिव्यक्ति है। इनमें मौजूद मूल्यों और जीवन का विश्लेषण और मूल्यांकन करना फिलहाल हमारा मकसद नहीं हैं। यहां सिर्फ इनका मूल पाठ प्रस्तुत कर रहे हैं। हरियाणा के लोक साहित्य विशेषकर लोक नाट्य के शोधार्थियों और समाजशास्त्रियों के लिए यह उपयोगी सामग्री है।

इन आख्यानों का लिप्यंतरण किया है प्रोफेसर सुभाष चंद्र, संपादक, देस हरियाणा ने। विपुला ने 'गोपीचंद' सांग के लिप्यंतरण में सहायता की है उनका आभार।

हरियाणा के लोक आख्यानों के दस्तावेज इनके वास्तविक पाठकों को उपलब्ध करवाते हुए अपार खुशी हो रही है। आशा है 'देस हरियाणा' के इस प्रयास से हरियाणवी लोकसाहित्य, भाषा व समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए नई खिड़की खुलेगी।

सुभाष चंद्र



गुरु गूगा का आख्यान

(आर सी टेम्पल ने 'स्वांग गूगे राजपूत बागड़ देस का' को वाल्यूम 1 में संख्या V1 पर प्रस्तुत किया है। यह नाटक अंबाला जिले की जगाधरी तहसील में होली के त्योहार के अवसर पर वार्षिक रूप से मंचित किया गया था।
बंसीलाल ने इसे प्रस्तुत किया है।)

इस काव्य को विश्लेषण करना मुश्किल है। क्षेत्रीय भाषा में इसे स्वांग या छंदबद्ध नाटक कहा जाता है। और यह वास्तव में स्थानीय लोगों द्वारा मंचित किया जाता है। यद्यपि इसमें अन्य पुरुष में पूर्णतः वार्तात्मक काव्यांश द्वारा परिचय दिया गया है और कुछ काव्यांश ऐसे हैं कथा की गति की व्याख्या करते हैं। दूसरी तरफ वास्तविक नाटक की तरह चरित्र बिना किसी परिचय के निरंतर बोलते हैं। व्यवहार में विभिन्न व्यक्तियों को चरित्रों की भूमिका दी जाती है और ये अपने वक्तव्यों के वार्ता और विश्लेषणात्मक हिस्सों को बोलते हैं।

गूगा की पूरी कहानी से घने कुहासे से घिरी है। इन दिनों मुसलमानों के मुख्य संतों में एक है और निम्न जातियां पूजा करती हैं और इसे जाहिर पीर भी कहा जाता है। अपने जीवन में वह हिंदू थे और सन 1000 ई. के आसपास महमूद गजनी के खिलाफ चौहान राजपूतों के नेता थे। संभवतः उसका निवास स्थान बीकानेर में था। यह कथा मुसलमानों के शासन से पहले उसका संबंध काबुल से जोड़ती है, परंतु टाड (इतिहासकार) गजनी राजपूतों के गजनी से संबंध होने से सहमत नहीं हैं। यहां प्रस्तुत कहानी में गूगा का विवाह असम में कामरूप के शासक अहम के वंश की राजकुमारी के साथ होना जिज्ञासा का विषय है। टॉड, मल्कॉम और इलियट सबने गूग्गा का उल्लेख किया है, टॉड ने तीन बार किया, लेकिन हर बार अलग कहानी के साथ।

- आर. सी. टेंपल

स्वांग गूगे राजपूत बागड़ देस का

सारद माता, तू बड़ी। धरते तेरा ध्यान।
किरपा अपणी कीजीए। करो छंद का ज्ञान।
करो छंद का ज्ञान, मात मेरी। मन इच्छा बर पाऊं।
तू है, माता, बुद्ध की दाता, चरणों अब निवाऊं।
करो बुद्ध परगास। आणके निस दिन तुझे मनाऊं।
कर हिरदे मन बाश, सांग गूगे का छंद बणाऊं।
अरी शाकुम्भरी माई।
तेरी है जोत सिवाई,
कहता बंसी लाल ; आणके करो सहाई

बागड़ देस सुहावणा ; जेवर राजा नाम।
रहे धर्म में नित : सदा नहीं पाप से काम।
नहीं पाप से काम : रहे ब्याकुल दिन राती।
नहीं चित को चैन : रैन निंदरा नहीं आती।

राजा जेवर

"हे प्रभूजी। ना आगे संतान : जतन कुछ बण नहीं आवे।
ये करमों की रेख लिखी : अब कौण हटावे ?
ना आगे कोई पुतर राज का थामणहारा।
सोचत हूं दिन रैन : कौण कीनी, करतारा ?
प्रभू, ये क्या गत कीनी ?
हुआ दुख मुझ को भारी :
करम रेख बलवान, नहीं टरती है टारी।"

रानी बाछल

"दोष कौण को दीजीए ? अपणा निरबल भाग।
बिना पुतर, रावजी, लगी बदन में आग।
लगी बदन में आग : सुणो येह बात हमारी।
मैं किस को दूं दोष ? मैं हीं करमों की मारी।
ऐ प्रभूजी। कभी नहीं दीना दान : मन हर का नहीं लीना।
यूं हीं उमर दी खोई : भजन मन में नहीं कीना।
पिछले कीनी पाप : वही अब आगे आए।
जिस बिध लिख दीए अंक, सोई मैं ने भर पाए।"

राजा जेवर

"हे राणी। इस जगत में हर बिन कौण सहाई ?
बिन करणी संसार में कौण पार हो जाए ?
कौण पार हो जाए जगत में ? ओच्छे भाग लिखावें।
बिना पुतर नहीं गती जगत में शकल बेद सब गावें।
इस दुनिया के बीच आणके बिरथा जनम गंवावें।
ये संसार सौपन की माया ; नित सोचे पछतावें।
इक आवत, इक जात है ; करम करे फल पावे।
मैं निर-भाग, करम का हीणा, सोच मुझे नित खावे।"

रानी बाछल

"राजाजी। सुण लीजीए मन मेरे की बात।
बिना पुतर ब्याकुल रहूं, ज्यूं चकवी को रात :
ज्यूं चकवी को रात, राव, मैं रहूं ब्याकुल दिन राती।
ना बाळक खेला आंगण में, भर भरआवे छाती।
क्या, बिधना, तैं लिखी करम में ? नित सीस धनूं पछताती।
मैं निर-भागण पड़ी तड़फती ; ना कुछ पार बसाती।"

राजा जेवर

"हे राणी। सुण लीजीए : क्यूं सोचे दिन रात ?
मन की चिंता दूर कर : भली करें रघुनाथ।
भली करें रघुनाथ। सुणो तुम मन चित लाके।
जब पूरण हो भाग उस से दिन आप बुलाके।
हे राणीजी। करम धरम इक बड़ा ; इन्हीं छोड़ो मत कोई।
इन के बल से सुरग मुक्त दोनों गत होई।
हे राणीजी। जो होती औलाद करम में, तुम से होती।
पड़े स्वात के बूंद, सीप बिन होई ना मोती।"

पंडित रंगाचार

"राव, सोच मत ना करो : भली करें रघबीर।
मन की चिंता दूर कर : मन में रखो धीर।

मन में रखो धीर, राव : अब सोच करो मत भारी।
इस माया संसार बीच में दुख बहोत नर नारी।
होंगे पुतर तीन, महाराजा : मानो बात हमारी।
इक पुतर ऐसा हो, राजा परजा नीवें सारे।
इस चिंता को दूर करो ; हुई पूर्ण आस तुम्हारी।
येह तुझ को बर दीया, राव : मैं सच : मानो कही हमारी।"

इक समे के बीच में पहुंचे गोरखनाथ ;

बाग बीच बिस्तर कीया ; पूर्ण हैं करामात।
पूर्ण हैं करामात : नाथ ने बिस्तर दीया लगाए।
हो गए पूर्ण काम राव के ; भाग जगा छिन माहीं।
जो कुछ करे आप वोह कर्त्ता, उस के हाथ सहाई :
बिना भाग ना मिले जगत में, करा ना बिरथा जाए।

माली आया दौड़के।

माली

"सुणो, राव महाराज ;
आके उतरा बाग में इक सिद्ध है आज।
आके उतरा आज बाग में : पूर्ण भाग तुम्हारी।
चलो हमारे संग, रावजी ; मानो बचन हमारी।
चांद चकोर सूरज की किरणें ऐसी रूप निहारी ?
दर्शन करो ; पाप कट जांगे : मुक्त रूप हो जारी ?"

राजा जेवर

" साधू दर्शन की मुझे रहती सोच हमारी।
अब चलके दर्शन करूं। कैसा है दरवेश, पियारी ?
कैसा है दरवेश, पियारी ? मानी बात तुम्हारी।"

माली

"रथ, घोड़ा और पिनस पालकी, सज की चली सवारी।"
साल, दोशाला, मोती, मूंगे, भर कंचन की थाळी :
हाथ जोड़ प्रणाम करे, धर देनी बैठ अगाड़ी।

राजा जेवर

"साध दर्शन हे दुरलब । करूं मन लाके सेवा।
कटें जनम की पाप ; पार हो जाता खेवा।"

रानी बाछल

"हे बांदी, जल्दी जाओ। ये ही करो तुम कार।
कैसा घुलबा हो रहा महलों के दरबार ?"
महलों के दरबार, री बांदी ? अभी झपटके जाओ।
कैसा शोर हुआ है, बांदी ? जल्दी आण सुणाओ।
जाके पूछो द्वारपाल से : मत दिल में घबराओ।
ये ही बात तुम पूछो जाके : फिर मुझे समझाओ।"

इतनी सुण, बांदी चली : नहीं लगाई बार।
कैसा रौळा मच रहा ? भीड़ जोड़ी पछवार।
भीड़ जोड़ी पछवार : करी है सुंदर सजी सवारी :
रथ, घोड़ा और पिनास पालकी, सोरण जरी अनबारी।

बांदी हीरा देई

"ना घर जनमा पुत्र राव के : हो रही जैसी जीकारी।
द्वारपाल, जल्द से मुझे कहो हकीकत सारी।"

सिपाही

"हीरा देई बांदी, सुणो। कहूं तुम्हारे पास।
इक साधू उतरा बाग में ; है सूरज का परगास :
है सूरज का परगास : खिला है जैसे फूल हजारे ;
मोहन मरवा, राई, चंबेली ; दी रही अजब भारी।
दर्शन करणे लगे राजा ; इस कारण सजी सवारी।
सुण, हीरा देई, बात : कही मैं तुझे हकीकत सारी।"

बांदी हीरा देई

"हे राणी। इस बाग में आ उतरा परमंस :
ऐसी अस्तूता कर रहे, ज्यूं सरवर में हंस।
ज्यूं सरवर का हंस, बाग में उतरा आए।
मैं कहती कर जोड़, करो तुम दर्शन जाए।
ऐसा सुंदर रूप, कहें सब नर और नारी ;
ना इंदरासन बीच रूप किसी को है भारी।
हे राणीजी। सब मिल दर्शन करो। बात येह मान हमारी।
मैं कहती कर जोड़, आस पूर्ण हो तुम्हारी।"

जब राणी ने तुरत ही सोळह की सिंगार,
कड़ी, पंजपाण, झांवरां, सब अबरन लीया सार :
सब अबरण लीया सार : हाथ में मोतीन थाळ सजाया ;
खिल रही जोत अकास गगन, ज्यूं भान निकस छाया,
हाथ जोड़ ओहीं गुरू चरणों में सीस निवाया।

रानी बाछल

"हो तुम्हारी परताप, नाथ। जब सील हो गई काया।"

गुरू गोरखनाथ

"हे माई। तू कौण है ? यहां आई किस काम ?
कौण तुम्हारा नगर है ? कौण तुम्हारा नाम ?
कौण तुम्हारा नाम ? कहो तुम मुख से सच्ची बाणी।
ऐ माई, तू देखी मुझको भले घरों की राणी।"

रानी बाछल

"ना कुछ मन में चाओ।"
रोणके बोली मुख से बाणी।
इतनी कहके बात, नाथ के भरा नैन से पाणी।

रानी बाछल

"हाथ जोड़ बिनती करूं ; सुणो, गुरूजी, बात।
मैं तो बिना औलाद की हूं, ब्याकुल दिन रात।
हूं ब्याकुल दिन रात : रही तन की सुध जाती।
हाथ मळूं, सिर धुनूं, नहीं कुछ पार बसाती।
बिना पुतर, महाराज, रहूं मन बीच उदास,
जैसे जल बिन मीन रहे थल ऊपर पियास।
मैं दोखा दोखी भरी ; करो मेरी प्रतिपाळा।
मुझ पापण का आज करो मुख चंदर उजाळा।"

गुरू गोरखनाथ

" इस माया संसार में दुख है आठों जाम।
हे माई, इस जगत से नहीं मुझे कुछ काम।
नहीं मुझे कुछ काम जगत से ; अलख-पुरुख, अबिनास,
ब्रह्मा वोही, बिसन वोही है, संसार वोही रूप कैलास :
उस का नाम ले : मुक्त हूई लिख, छूट जा जान चौरासी।
जाओ महल के बीच, माई ; क्यूं रुदन करे है येहां सी ?"

रानी बाछल

"हे गुरू गोरखनाथजी, तुम हो किरपा निधान।
मैं दासी हूं चरण की ; पूर्ण कीजो काम।
पूर्ण कीजो काम : ध्यान चरणों से लाऊं।
दीजो मुख से बचन, दान पुतर का पाऊं।
खान पान सब ते जा रहूं ब्याकुल दिन राती,
ज्यूं जंगळ के बीच फिरी है मकना हाथी,
ज्यूं भोजन बिन रही है दुरबल काया।
मैं पापण निरभाग। नहीं सुख मैं ने पाया। "

राणी काछल

"हे बांदी। तुम से कहूं ; येह ही करो तुम कार।
चलो संगत, हम से अभी देखण बाग बहार।
देखण बाग बहार, री बांदी : कहूं तुझ से समझाके,
पान, सुपारी, मेवा, मिसरी, लाओ थाल में पाके।
खबर किसी को ना हो, प्यारी : सुणियो चित लगाके।
जौण बाग में उतरा साधू, कीजूं दर्शन जाके।"

बांदी

"बचन तुम्हारा मानके अभी करूं तत्काल ;
अब तुम्हारे हुकुम को निक करूं नहीं टाळ :
निक करूं, नहीं टाळ ; सुणो, राणी, इक अरजी हमारी।
वा गई दर्शन करण संत के, बाछल बहण तुम्हारी :
जब वोह आवे महल बीच में कहूं हकीकत सारी।
धीरज कर, राणी, मन म्हां : ये मानो कही हमारी।"

जब राणी ने सोच में बैठी संगम रात :

रानी काछल

"हे बांदी, उठ जागीए। हुण लगी प्रभात :
हुण लगी प्रभात। करो सुख। हर सिमरण उठ, प्यारी।
जल से येह भरी धरी सुंदर कंचन की झारी ;
लीया जल्दी अस्नान करूं : क्या करती सोच बिचारी ?"

फिर बसण भोशण राणी संग साखी हुई सारी
आ चरणों में पड़ी।

राणी काछल

"गुरू । होवे पूर्ण आस हमारी।
तुम हो आप दय्या, सुख सागर, नेम धर्म, ब्रह्मचारी।"

गुरू गोरखनाथ

"हे माई, तू कौण है ? कहो मुख सच्ची बात।
कौण नगर से आउणा ? कौण नगर को जात ?
कौण नगर को जात ? बात तू कह दे मुख से, माई।
क्या है काम ? कहो जल्दी से। किस कारण येहां आई ?
तू है कुटल कठोर नार। तैं छलके दुनियां खाये।
मारूं बांस। चली जा यहां से। क्यूं मरती बिन आई ?"

रानी काछल

"हाथ जोड़ बिनती करूं : कीजो मेरी सहाई।
बेड़ा पड़ा समुन्दर में : दीजो पार लंघाए।
दीजो पार लंघाए। कर जोड़। सहाई।
तुम हो पूर्ण, ब्रह्म थारी, माया नहीं पाई।
हो तुम्हारा परताप, रहे जग नाम तुम्हारा।
जो हो जा इक पुतर आप का जी जीकारा।"

गुरू गोरखनाथ

"इक बचन मेरा सुणो : मन में बांधो धीर।
इस चिंता को दूर कर : सदा भजो रघबीर।
सदा भजो रघबीर, बावरी। क्यूं दिल में घबराओ ?
साध संत की सेवा करणी, मन इच्छा फल पाऊं।
येह सागर संसार करम का ; क्यूं नाहक पछताओ ?
येह मानो तुम बचन हमारा। अभी महल को जाओ।"

उस रात नाखण्ड गई सब जग करत आराम ;
राणी महलों से चली धर गोरख का ध्यान :
धर गोरख का ध्यान ; जभी राणी बाग में आई,
हाथ जोड़, आधीन हुई, चरणों में सीस निवाई।

रानी बाछल

"बिना पुतर मैं फिरूं तड़पती ? तन मन हुआ सुदाई ।
करो, नाथ, मन इच्छा पूर्ण : इस कारण चल आई ।"

गुरू गोरखनाथ

"जा का तन तशना अधिक सो अंधा कर दे :
पाप पुन जाणे नहीं चाहत कारण स्नेह :
चाहत कारण स्नेह : कहूं मैं मुख से सच्ची बानी ।
येह दुनिया है खान कपट की : तूं क्यूं हुई दीवानी ?
जो कुछ अंक लिखा कर्त्ता ने, लग गई करम निशानी ।
जा घर। बैठ रहो महलों में, हर से ध्यान लगानी ।"

रानी बाछल

"जो चाहो, सोई करो । तुम सत हो, गोरख ।
इस दुनिया के बीच में नाम म्हारा राख ।
नाम म्हारा राख : हाथ तुम्हारी है डोरी ।
जो चाहो, सो करो । तुम्हें किस की है चोरी ?
भू सागर में बही । करो मेरा नसतारा ।
धीरग जीऊं जगत बीच ; बिना पुतर है हारा ।"

रानी काछल

"हाथ जोड़ बिनती करूं, हे गुरू गोरखनाथ ।
बहोत दिनों सेवा करी : लाज तुम्हारे हाथ ।
लाज तुम्हारे हाथ, गुरू । मैं तुम से अरज लगाई :
जिस पर किरपा हुई तुम्हारी, पार करो छिनमाए ।
धन धन भाग पूर्ण हैं उन को, जिस घर जनम ले आए ।
अमर नाम उन का है जग में । धन है जनती माई ।"

झोली में से नाथ ने दो फल लिए निकाल ।

गुरू गोरखनाथ

"जा माई, तुझ को दीए । जन्मेंगे दो लाल :
जन्मेंगे दो लाल । जाओ, अब मत कीजो देरी ।
जाण लीया बहोत दिनों सेवा करी घेड़ी ।
फिर कभी आना नहीं यहां से । कही मानीए मेरी ।
किस किस को दें पुतर ? डोलती देना फिरी बहोतेरी ।"

भर लीया गड़वा दूध का : लीया आपणे हाथ :

रानी बाछल

"दय्या करो हमेशा अपणी, आई गुरू गोरखनाथ ।"

रागनी

"करो किरपा, गुरू मेरे ।
चरण की दासी हूं तेरी ।"
येह ही कह रो पड़ी राणी ।
नैन में भर आया पाणी ।
"पुतर बिन हीं हूं नारी ।
रैन चकवी को ज्यूं भारी,
येह ही गत हो रही मेरी ।
गुरू, मैं दासी हूं तेरी ।
करो पूर्ण मेरी आसा ।
मेट मन का शकल सांसा ।"

गुरु गोरखनाथ

"जा, लंडी की। भाग जा । जो जीवत चाहे प्राण ।
तिरया को नहीं मारणा ; होत धर्म की हाण ।
होत धर्म की हाण । चली जा । मत ना सूरत दिखलावे ।
कल दीनी दो फल तेरे को ; जरा लाज नहीं आवे ।
इस दुनिया से रहे अकेला : ना किसी को पत्यावे ।
इस कल जुग का येह ही रूप है : सब धर्म उड़ हो जावे ।"

रानी बाछल

" झूठ बचन बोलूं नहीं, हे गुरू गोरखनाथ ।
कोई तुम को छल ले गई तिरया चंचल जात ।
तिरिया चंचल जात अकल हर ले गई तुम्हारी ।
क्यूं भोळे, महाराज ? उलट किस्मत गई म्हारी ।
ना तुम्हारा कुछ दोष : फिरूं करमों की मारी ।
ज्यूं चकवी को रैन हुई, ऐसी गत म्हारी ।
ज्यूं यतीम बिन रैन रहे सब अबरण फीका ।
ज्यूं जल बिन रहे मीन, हाल बीते मेरी जी का ।

गुरु गोरखनाथ

"हे राणी, रोईए मती । क्यूं सोचे हर बार ?
जा । तेरे सत होवेगा गूगा राजकुंवार ।
गूगा राजकुंवार होवेगा, सूर, बीर, कल्लाधारी ।
जनमत सार लगे गीन पर, जिस से परजा भूंई सारी ।
घर घर थापी दी नगर में : गावें मंगल नारी ।
जो हम को वो ले गई छलके, है पापण हत्यारी ।
जनमत सार मरेगी जननी : पड़ी निपट अती भारी :
बारह बरस की हुई उमर की । राखीए याद हमारी ।"

रानी बाछल

"आज मुझे येह बर हुआ, मन में कीया आनंद ।
जनम जनम के कट गए मेरे शकल दुख फंद ।"

रागनी

" कटे दुख जनम जनम के सारे ।
भाग निरमल हुए म्हारे ।
हुई किरपा गुरू तुहारी ।
फिरूं थी करम की मारी :
राख, लज्जा लीए म्हारी ।
गुरू । मैं दासी हूं तुहारी ।
बिपत में सुख मुझे दीना :
सो फल जग में हुआ जीना ।"

सबीर देई

"हे बाछल। इस जगत में तैं दी लाज गंवाए ।
जोगी राखा बाग में : नित उठ उस पर जाए ।
नित उठ उस पर जाए : भूरी जरा लाज नहीं आए ।
नित उठ ताना दे हैं सरीके : हो गई जगत हंसाई ।
खोई दी कुल की मरजादा जब से बियाही आई ।
घर घर चरचा रहे रातां : हंसते लोग लगाए ।
इस जीने से मरणा बेहतर : अब क्यूं सूरत दिखाई ?
ऐसा जुल्म कीया तैं, पापण : जरा लाज नहीं आई ।"

रानी बाछल

"पाप पुन जाणूं नहीं : सुणो हमारी बात ।
क्यूं खोटे मुख से कहे ? ना आवे कुछ हाथ ।
ना आवे कुछ हाथ : कहे मुख खोटी बाणी ।
क्यूं करती बदनाम : आप हो, बेटी, सयाणी ।

बिन देखण, बिन सुणण, कहे जो मुख से बाणी ।
या ले । निसचे जान । नरक में जाए प्राणी ।
बिगड़त है परलोक धरम अपणा जो हारे ।
उन का सत ना रहे कहा पती का जो डारे ।"

सबीर देई

"जो बातां तैं ने करी : ऐसी करी ना कोई ।
बागड़ देस चौहान की दी लाज सब खोई ।
दी लाज सब खोई, बहू : मैं सुण काछल से आई ।
आवणदी जेवर भय्या को दूं महलों से खड़वाई ।
नहीं काम महलों में तेरा : जित चाहे उत जाईए ।
क्या मुखड़ा दिखलावे जग में : मरो, जहर बस खाईए ।"

रानी बाछल

"जो करणी सो कर चुको । मत ना कीजो टार ।
जो मुकट में लिख दीया ना कोई मेटणहार ।
ना कोई मेटणहार : करो जो तुम को भावे ।
तुझ को तीन तलाक महल से ना खड़वावे ।
जो तू मुख से फेर कहेगी खोटी बानी,
मरूंगी कटारी खाए : तजूंगी जिंदगानी ।
ना जीऊं पल इक : प्राण छिन में खो दूंगी ।
धुर दरगाहों के बीच पकड़ पल्लू तेरा लूंगी ।"

सबीर देई

"अरे भाई जेवर मेरे । कहूं तुम हीं से आज ।
बागड़ देस चौहान की तार धरी है लाज ।
तार धरी है लाज बैरण में : समझाऊं तुझ कोई ।
ऐसा जुल्म कीया बाछल ने जग में हुआ ना हुई ।
जोगी रख बाग में : ले भोजन नित जाए :
आधी रात निखड़ गई थी जब महलों में आई ।
जुल्म इस ने कीया भारी :
लाज सब खोई हमारी ।
दे महलों से काढ़ ।
नहीं, उस को दे मारी ।"

राजा जेवर

"सुणके तुम्हारे बचन को, गीया क्रोध तन छाए :
अब जीवत छोडूं नहीं : दूंगा प्राण गंवाए ।
दूंगा प्राण गंवाए : अभी महलों से दूं खड़वाय ।
मार कोडूं, खाल उड़ा दूं : रहा क्रोध तन छाय ।
मैं जाणूं था है सतवंती : ओगुण रही छिपाय ।
तिरिया जात अकल मत हीणी ; ना मुख करो बड़ाय ।
महा कपट की खान जाण लीए । होगी जगत हंसाय ।
इतनी ही संजोग लिखा था : बीधना बात बणाई ।

सबीर देई

ऐ भाई, सोचे मती : कीजो इक उपाय ।
क्या ? तू भिजवा उस के बाप को : नहीं दीजो जान गंवाय ।
नहीं दीजो जान गंवाय : बरन मैं कहूं तुझे समझाके ।
नहीं चोरी की बात रही : तू पूछ महल में जाके ।
देख । तुरत मुकरेगी राणी, सौ सौ कसमें खाके ।
मत ना करो इतबार किसी का : मारे जहर खिलाके ।
मत करो सोच बिचार : बरन क्या हाथ लगे पछताके ?
अनहोणी हुई रीत हमारी इसी जगत में आके ।"

राजा जेवर

" इतना ही संजोग था : बिधना रची ऊपार ।"

झट खूंटी से तारके लीया हाथ कटार ।
लीया हाथ कटार ।

राजा जेवर

"पियारी, कधी काम नहीं आया ।
ऐ परीर सार, भाई, मैं जिस खातिर तू हटाया ।"
ऐसी कहके बात, राव के नैंनों में जल छाया ।
नहीं मियान को छोड़े खांडा । हे गोरख की माया ।

राणी बाछल

"बिना खता, तकसीर बिन, क्यूं मारो महाराज ?
कौण पाप हम से हुआ ? क्या बिगड़ा कुछ काज ?
क्या बिगड़ा कुछ काज, पति ? सुण अरज हमारी ।

क्यूं तैं कीना क्रोध ? नीर नैनों से जारी ?
क्यूं लीया खांडा हाथ में ? सुरखी क्यूं छाई ?
दीजीए साच बताय। तुम हीं है राम दोहाई ।"

राजा जेवर

"जो, राणी, तू ने करी ऐसी करी ना कोई ।
बांह पकड़ धार दीना अधर डबोई ।
दीना अधर डबोई : तू है कमजात लुगाई ।
जब से प्रीत कसी जोगी से, हो गई जगत हंसाई ।
येह बिधना के हाथ बात है : जित चाहे आवत जाय ।
हे पापण निरभाग, समझ ले : तुझे सोच नहीं आई ।"

रानी बाछल

"कौण बिधाता दुख दीया ? कीजो आण सहाई ?
क्यूं बिपता दीनी मुझे, जो दुख सिहा ना जाय ?
जो दुख सिहा ना जाय, बिधी : तैं क्या गत करी हमारी ?
टप टप आंसू पड़े धरण पर : नीर नैन से जारी ।"
किस बिध करत बिलाप महल में, जभी कूक मुख मारी ।

रानी बाछल

"येह मन उठत बियोग : मरूं, मैं तन में खाय कटारी ।"
चली महल से बाहर निकस ; झट करी तुरत असवारी ।

रानी बाछल

"लिखी करम की रेख, देखीयो, येह गत हुई हमारी ।
हे प्रभू। सुण लीजीए । लाज तुम्हारे हाथ ।
बिना बुलाई मैं चली : क्या कहेंगे पितू मात ?
क्या कहेंगे पितू मात मुझे ? 'अब किस कारण तू आई'?"
गढ़ गजनी के हुई रस्ता, लंबा कूंच कराय ।
इस बिध करत बिचार : भान झट गीया सुख पर आई ।

रानी बाछल

"चार घड़ी बिश्राम करो ; यहां जल, पिओ, लो नहाय।
येह बिपता बण घोर है : गरजी आण पड़ी मुझ पाय।
क्या जाणूं थी ऐसी होगी ? देती प्राण गंवाय ।"

गाड़ीवान

"चार घड़ी बिश्राम कर : सिखर भान गीया आय ।
मैं इन बैलों को अभी यहां लाऊं जल पियाय ।"
यहां लाऊं जल पियाय।"

बैल से झट सागर पे आया :

लगे पीवण पाणी सागर में भचीर ढांग लगाया ।
काट-सर गिर पड़े धरण पर : भवर बैकुण्ठ लोक को धाया ।
लगा सीस धरणी से मारण : कूक मार मुख रोया ।

गाड़ीवान

"ऐ बाछल, सुण ले मुझ को : भावी ने आण दबाया ।
तू तो फिरी करणे की मारी । मैं क्या पाप कमाया ?"

रानी बाछल

"हे भावी, तैं क्या करी, इस जंगळ में आय ?
बैल हमारे मर गए : लीए सर्प ने खाय।
लीए सर्प ने खाय : देई बिपता क्यूं भारी ?
ना जीवण की आस : चली अब जान हमारी।
इस जंगळ के बीच नहीं कोई हमरा साथी।
हाथ मळूं, सिर धुनूं : घड़ी वो मेरे हाथ ना आती।"

इस बिध करत बिलाप, जब तन मुरछा गई आय।
जब गूगे ने उदर म्हां परचा दीया लगाय।
परचा दीया लगाय।

गूगा

"सोच मत करणी मात हमारी ।
गाड़ी नीचे खड़ा नीब : इक तोड़ो उस की डाळी ;
ले गोरख का नाम : आण सुध लेगा अभी तुम्हारी ।
कौण चीज है जहर । उतर जाय, लगे ना पल की देरी ।
इक टका धर गुरू गोरख का : हो पूर्ण आस तुम्हारी ।
इतना काम करो, माता : येह मानो कही हमारी ।"

रानी बाछल

"येह सुपना मुझ को आया : क्या कहूं ? कही ना जाए ।
गाडी नीचे नीब का पेड़ा दीया बताय ।
पेड़ा दीया बताय नीब का : ऐसा सुपना आया ।
है इक बाळक बड़ा सोहणा सा : पास हमारे आया ।
भोजा पकड़के कर लीए बैठे, येह मुख से फरमाया ;
'गुर गोरख का नाम बता । गए अंतर ध्यान लगाय' ।"

कलाम रानी बाछल का गुरू गोरखनाथ से

हे गुरू गोरखनाथ जी । करीए मेरी सहाई ।"

लेकर डाळी नीब की : धर दीना टका छोहाई ।
धर दीना टका छोहाई ; जभी मुख गोरखनाथ मनाया ।
पढ़ पढ़ मंतर अस्ट कुली के जब गाडर को गाया ।
उतरा जहर जभी इक छिन में, जब ओह ने सीस हिलाया ।
तुरत खड़े हो गए बैल । गूगे ने परचा लाया ।

रानी बाछल

"किरपा हुई गोरखनाथ की : सारी हमारी काज ;
सब जग पालणहार हो । बड़े गरीब नवाज ।
बड़े गरीब नवाज, नाथजी । पहिले तुझे मनाऊं ।
अब जान लीया निस्चय : नित चरणों ध्यान लगाऊं ।
करी किरपा मुझ ऊपर तुम ही । मैं बाबल घर जाऊं ।
मिल दसौटा मुझ बिरहण को, फिर ना हटके आऊं ।"

जब राणी वहां से चली, धर गोरख का ध्यान ;
मजल मजल कर, आ गई गढ़ गजनी अस्थान ।
गढ़ गजनी अस्थान, जभी राणी महलों में आई,
भोजा पसार मिली माता से ; पड़ी धरण पर जाय,
उमंग उमंग भरावे छाती । क्या कहूं ? कही जाय ।

रानी बाछल

"वा दिन क्यूं ना दी मार मैं जिस दिन जनम ले आई ?"

माता रानी बाछल की

"हे बेटी, क्यूं रोती ? क्यूं मन कीया उदास ?
कौण बात की दुख तुझे ? कहो हमारे पास ।
कहो हमारे पास, ऐ बेटी । क्यूं मन उदन लगाय ?
क्या पती, ननद, बहिन तेरी ने मुख भर तान सुणाय ? "
कधी नहीं इतना दुख पाया जब से जनम ले आई ।
अब मुख से कह दे, तू बेटी । किस कारण चल आई ? "

रानी बाछल

"हे माता, सुण लीजीए । कहूं, तुम्हें समझाय ।
जोगी उतरा आणके, करी सेवा मन लाय ।
करी सेवा मन लाय नाथ की : मन चरणों चित लाय ।
ननद मेरी ने जा राजा से ऐसी चुगली कही ।
'जोगी राखके, तार दीया है : सारा माल लुटाय ।
या तू दीजीए मार, नहीं महलों से दी खड़वाय ।'
बड़ी सोच रहती मुझे , ना जीवण की आस ।
नहीं बाळक पैदा हुआ, लगा बारवीं मास ।
लगा बारवीं मास, री माता । क्या गत हुई हमारी ।
जब से पड़ा घर्ब में मेरे या गत हुई हमारी ।
त्याग दी राजा ने मुझ को, ऐसी बात बिचारी ।
मैं निर-भाग जनम की । ऐसी हूं पापण हत्यारी ।"

कलाम गूगे का शिकम में

"मात हमारी को रही या चिंता दिन रात ।
उस का दुख निवार दो, हे गुरू गोरखनाथ ।
हे गुरू गोरखनाथ । आणके कीजो बीग सहाई ।
मात हमारी मन अपणे में रही बहोत दुख पाय ।
होगा मुझ को तान जगत में, जो येहां जनम ले आय ।
पिता मेरे को दे परचा, मेरी माता को ले जाय ।
अरज सुण लीजो म्हारी, ध्यान चरणों से लाया ।
हे गुरू गोरखनाथ । बड़ा दुख पाया ।"

राजा जेवर

"सोवण था सुख चैन में, सुख से आसन लाय ।
नहीं होस तन की रही, पड़ा धरण पर जाय :
पड़ा धरण पर जाय ; मेरी सब रही सुध जाती ।
ब्याकुल हुआ, होस नहीं मुझ को, ना मुख बरणी जाती ?
कहे मुझ को, 'सुण, मूरख राजा ; क्यूं अकल रही जाती ?

जो राणी को नहीं लावेगा, मार पड़े दिन राती।' "

हाथ जोड़ मंतरी कहे।

मंत्री

"सुणो राव महाराज।
राणी को लाओ अभी सिध होई सब काज।
सिध होई सब काज, रावजी। मानो बात हमारी।
जो राणी को नहीं लाओगे जाएगी जान तुम्हारी।
तूं हर चौहान बैर लग जाएगा : जल्दी करो तैयारी।
रथ हाथी, और पिनस पालकी, लेजा सब असवारी।"
इतनी सुणकर बात, राव ने मन में येह ही बिचारी :

राजा जेवर

"गणपत देओ मनाए, देख महूरत को करूं तैयारी।
आद सारदा सिमरके धरा गणपत का ध्यान ;
अस्ट सिद्ध नौ निध के बर दायक हनुमान।
बर दायक हनुमान । राखीयो। येह ही लाज तुम्हारी।"

गढ़ गजनी के हो लिए रस्ता ; कूंच मजल कीया भारी।
जा पहुंचे हैं बाग बीच में, सुंदर सजी सवारी।
जब येह खबर हुई राजा पर, खुशी हुई मन भारी।
इतनी सुण राजा चले, ले मंतरी को संग :
हाथ जोड़ आगे खड़ा, मन में बहोत उमंग।
मन में बहोत उमंग।

राजा चंद्रभान

" बड़ा जगत में भाग हमारा।
बड़ी किरपा हुई हम पर, राजा : दर्शन हुआ तुम्हारा।
कुशल तुम्हारी देस । कुशल है सब परवार तुम्हारा।
बहोत दिनों से मिलणे की नित कर रहा सोच बिचारा।
अब पूर्ण हुई आस हमारी महलों में पग धारा।
हाथ जोड़के पड़े चरण में : मैं हूं दास तुम्हारा।"

राजा जेवर

"अब रुखसत मूहे दीजो। सुणो राव महाराज।
अब हर ने पूर्ण कीये शकल तुम्हारी काज :
शकल तुम्हारी काज, राव। इक मानो बात हमारी।
बहोत रोज हो गए, महाराज ; जल्दी करो तैयारी।
अब इच्छा हैगी चलने की ; मुझे सोच है भारी।
छन-छन होत, आ बेर मेरे को : सोच रहे नर नारी।
हाथ जोड़ आधीन कहूं : अब मुख से बारम बारी।
आईए महल से बाहिर, राव : अब 'राम राम' लो हमारी।"
जब राजा वहां से चले, मन में बहोत उमंग,
दाहिने तीतर बोलता, और बावें रहे भूहंग।

पंडित रंगाचार

"बावें रहे भूमंग, राव : मैं चंगा शुगन बिचारा।
होगा पुतर कल्लाधारा : है पूर्ण भाग तुम्हारा।
खूब तरह से खोज खोज जोतिष का अंक निकाला।
जनमत सार देख, महाराज : नीवेगा जग सारा।
भादों तीथ है अष्टमी, जिन में जाहिर दीवान।
फूलों के पंखे चढे और नीले छड़ी निसान।
नीले छड़ी निसान।"

राव ने जनम लीया अध-राती।
जी जीकार हुई महलों में : परिआं मंगल गाती।
नौबत-खाना बजें राव के : इक आवे, इक जाते।
घर घर हुआ आनंद : कहे कोई, 'ना करमों का साथी।'
राव ने भले बिचारे :
दान कीया है भारी :
बागड़ देस अनंत रहे :
हो जी जीकारी।

राजा जेवर

"हे मंतरी तुम से कहूं : कर हिरदे में ज्ञान।
राज तिलक दे कंवर को : कहा हमारा मान।
कहा हमारा मान : अभी पंडित को बीग बुलाओ।
जब का निकसे लगन महूरत, सो हम को बतलाओ।
रहे रात दिन सोच मुझे : येह सुणा मेरी मनाओ।
मंगल चार करो महलों में : बाजे सुभे बजाओ।"

पंडित रंगाचार

"बचन तुम्हारा मानके, अभी चलूं तत काल।
जो राजा का हुकुम हो कैसे कर दूं टाळ ?
कैसे कर दूं टाळ ? बचन मैं मानूं तुहारे।
ले यूं पुशतक हाथ, चलूं मैं संग तुम्हारे।
किस कारण में आज राव ने बीग बुलाया ?
कहो हमारे पास : नहीं ? क्यूं भेद बताया ?
आए राज दरबार, कहूं मुख इमरत बाणी :
'कहो मुख से, महाराज, आप जो मन में ठाणी।'

राजा जेवर

"चरण तुम्हारे मैं लगूं, हे पंडित दुजराज।
देख महाराज खोजके राज तिलक का साज।
राज तिलक का साज : येह है अबलाख हमारी,
जो कीजोगे तिलक खुश हैं सब नर नारी।
येह जग आवण जाण, बणी झूठी रुशनाई।
कहत, मुनि, जन, संत, बैद ने निस्चये गाए।
ना पितू, माता, भ्रात : नहीं अपणा है कोई :
सब स्वारथ के नीत : जनम येह ब्रिथा जाय।"

पंडित रंगाचार

"खूब बात तुम ने कही : मैं ने लीए बिचार ।
आज महूरत आसल से : करो राज का कार ।
करो राज का कार, राव : मेरे येह ही समझ में आई ।
इस लड़के सूरज आठों गाए आज से आई ।
होगी बहोत आनंद, राव ; कुछ दीजो दान कराय ।
नहीं करणी कुछ सोच, राव ; कुछ भली करें रघाय ।"

रानी बाछल

"हे राजा। सुण लीजीए : कहूं तुम्हारे पास।
उस दिन पंडित ने कहा लगा दूसरा मास।
लगा दूसरा मास, राव ; सुण अरज हमारी।
अब, कहूं, गए हो भूल जौण हिरदे में धारी।
मैं कहती, कर जोड़ ; अरज मेरी सुण लीजो।
दे गद्दी बिठलाय। देर पल की ना कीजो।"

राजा जेवर

"गणपत देव मनाके लेणी पंच बुलाय ।
हाथ जोड़ तुम से कहूं करीयो मेरी सहाई ।
करीयो मेरी सहाई : बिप्र के चरणों सीस निवाया ।
देख महूरत लगन घड़ी : क्या मैं तुम को फरमाया ।
अब ना कीजो देर, गुरू : मैं चरणों सीस निवाया ।
हात जोड़के खड़ा अगाड़ी, बार बार समझाया ।"

प्रात हुई : उठकर जभी, ऐसी करी बिचार।

गूगा

"या मेरे मन में आई, कहीं चलें शिकार।
कहीं चलें शिकार : आज ऐसे मन को भाय।
दीना घोड़ा छेड़ चला, चलूं मैं इस जंगळ के माईं
हम छत्री राजपूत, फिरे बिन ना कभी बैठा जाय।"

हो येहां भान सरछाया, तन मुरछा गए आय।
दीना घोड़ा छेड़, राव झट खुई पर गए आय।

गूगा

"हे दादी। मुझे पाणी पीला दे। नहीं मुख बोला जाय।
मुझे पाणी दे पिआए,
कहूं में तुम्हारे तैं।
हुआ हाल बेहाल।
नहीं मुख बोला जाय।"

ब्राह्मणी

"हे बेटा गूगा मेरे, कहूं तुम्हें समझाय।
माटी का बरतन मेरा : किस बिध देऊं पिलाय ?
किस बिध देऊं पिलाय, ऐ बेटा ? सुण ले बात हमारी।
जो लग जागे छींट बिगड़ जा है माटी की झारी।"
इस बिध कहके बात, जभी चलणे की करी तैयारी।
ठा कर दोगड़ धरे सीस, मन करती सोच बिचारी।
इतनी सुणकर बात, जब धर गोरख का ध्यान,
झट कांधे से तारके लीनी हाथ कुमान।
लीनी हाथ कुमान, जभी मन क्रोध हुआ है भारी ;

मारे खैंच गुलेल, जभी ये फूट गई हर झारी।
भीज गए सब बसन, जभी मन रोण करी है भारी।
जितने थे वहां खड़े कुईं पे सोच करें अति भारी।

ब्राह्मणी

"जैसी तैं करी वैसे, करी ना कोय।
ना खाई, ना बिलसाई : "

यूं कहती रो रोय।

रागनी

"कहूं मुख से येह ही बाणी :
ना हो जग में तेरी जिवाणी।
मरो, गूगा, तेरा याणा।
नहीं टुक हो कभी सयाणा।
लगो धोखा तुझे धन का।
हाल देखो मेरे तन का ;
फोड़ दो घड़े दीय म्हारे :
तार घरट लीए सारे।"

रानी बाछल

"हाथ जोड़ बिनती करूं : मत ना हो दिलगीर।
जो भीज गए हैं सूतरू, लेजा, रेशम चीर।
लेजा रेशम चीर : फूट गई गागीर तेरी ;
वा माटी की गई : जाओ कठोर ले कलस झारी।
बोले बचन कठोर : नहीं लरजी है काया।
यो बाळक नादान, इन्हीं बरजो भां कोई।
ना इन को कुछ ज्ञान : करें मन आवे सोई।"

राजा संजा

"हे पंडित, सुण लीजीए : वा मुझ को अबलाख।
छरियाल राजकुंवार का जाए करो कहीं साक।
जाए करो कहीं साक : कहीं देखो सुंदर राजकुंवारा।
जा जल्दी से : देर करो मत : मानो कहा हमारा।
है इक भूप देस बागड़ का ; ऐसा जेवर नाम उचारा :
हो कुल चंगा सीलवंत : कोई अच्छा हो घरबारा।
आगे भाग रहा बेटी का : नहीं किसी का चारा।
जल्दी जा : मत देर करो : अब मत कर सोच बिचारा।"

पंडित गुणमान

"खूब बात तुम ने कही : पूर्ण हो गई काज।
गणपत देओ मनायके। सिद्ध करूं, महाराज ।
सिद्ध करूं, महाराज । आज मैं गणपत देओ मनाया।
पूरब, पच्छम, उत्तर, दक्खन ; चार दिस्सा फिराया।
छेह महीना हो गए फिरते, नहीं मुझे भर पाया।
ऐ सिरियल। तू भी दुख भरीए, जैसा मैं दुख पाया।
कौण घड़ी खोटी थी शाइद में घर से चल आया ?"
इस बिध सोच हुई मन में, चल घर जेवर के आया।

राजा जेवर

"चरण तुम्हारे मैं लगूं, हे पंडित गुणमान।
कौण देस से आउणा ? कौण नगर अस्थान ?
कौण नगर अस्थान ? कहो तुम मुख से इमरत बानी।
रहो सुख से नित महल बीच में, हे पंडित सुरग्यानी।
क्यूं नित उठ रही सोच तेरे को ? नहीं भावे आन पाणी।
कह दे सच्ची बात आप मुख, जो हिरदे में ठाणी।"

पंडित गुणमान

"सात समंदर पार है धूपनगर अस्थान।
राजा संजा नाम है, जिस का करूं बखान।
जिस का करूं बखान, राव : मैं चार खूंट फिर आया।
येह बिधना के हाथ, राव : जी आज मुझे पराया।
करूं सगाई गूगे की ; मैं इस कारण चल आया।
तिलक करूं राजा के मस्तक : येह मेरे मन भाया।"

खबर हुई येह महल में : खुश हुई मन माहीं।
भाईबंद सब नगर के लीनी तुरत बुलाय।
लीनी तुरत बुलाय।

राजा जेवर

"लाज येह हाथ तुम्हारे, भाई।
जिस बिध उस से समझ तुम्हारी, क्यूं नहीं हमें सुणाई।

आई लछमी को नहीं हटाऊं, लूंगा मन चित लाय।"

हो रही मंगलचार महल : गूगे की हुई सगाई।

पंडित गुणमान

"हे राजा, सुण लीजीए, पूर्ण हुए सब काम।
रुखसत हम को दीजीए ; खुशी रहो जुजमान।
खुशी रहो जुजमान । तुम्हारी सदा रहो राजधानी।
या है मेरी सीस, रावजी : सो फल हमारी बाणी।
हीरे, मोती, लाल, जवाहिर : ना मुख जात बखाणी।
करी सगाई बिदा हुआ : मेरे मन की ब्रहम मिटाणी।"

रानी बाछल

"हे भावी। तैं क्या करी ? क्यूं बिपता दीए डार ?
मन की मन म्हां रह गई। पियाजी गए सुरग सिधार।
हे पियाजी, तुम गए सुरग सिधार । कौण गत हुई, जी, हमारी ?
ना कोई थांबणहार । दी बिपता क्यूं भारी ?
ऐ प्रभूजी। सुख में दुख दे दीया। नहीं करमों का साथी।
नहीं निकट हैं प्राण : पड़ी तड़फूं दिन राती।
हो गए अंग बे-ढंग। हमें कित छोड़ो जाय ?
इक बार मुख से बोल, हमें दीजो बतलाय ?"

राजा संजा

"हुई सोच मुझ को घणी : जगी बदन में आग।"
ऐ बेटी सिरियल मेरी। खोटी तेरी भाग।
खोटी तेरी भाग, री बेटी, जिस दिन से तू जाई।
नहीं रहा सुख उन के घर में, जब करी सगाई।
है निरभाग जनम की हीणी खोटी किस्मत लाई।
रह गई मन की मन में मेरे, 'मैं दूं उस को परणाई।'
येह बिधना के हाथ : नहीं कुछ होती मन की चाई।"

जब ऐसी चिट्ठी लिखी, मन में करत बियोग।

राजा संजा की चिट्ठी

"हम नाता करते नहीं : ना दे नाम संजोग।
ना दे नाम संजोग, रावजी : सुणीयो बात हमारी।
नहीं करें हम बियाह तुम्हारी : 'राम राम' लो हमारी।"

इस बिध चिट्ठी लिखी राव ने : दीए बात कह सारी।
इतनी सुणके बात राणी ने, जभी कूक मुख मारी।

रानी बाछल

"ऐ प्रभू। तैं क्या दी बिपता ? राजा मरे पछतारी :
नहीं जाणूं थी ऐसी होगी जग में हांस हमारी।"

गूगा

"हे माता, क्यूं रोती ? क्यूं हुई हाल बे-हाल ?
क्यूं मुख से नहीं बोलती ? क्यूं पाड़ै सिर बाळ ?
क्यूं पाड़ै सिर बाळ, री माता ? क्यूं मन रोण लगाय ?
पिछली बातां, हे माता, क्या याद तुम्हारी आई ?
दे हम को बतलाय, री माता। तुझ को नाथ दोहाई।
क्या ? किसी ने तुझ को मुख से कोई खोटी बात सुणाई।

रानी बाछल

"हे बेटा, सुण लीजीए मन मेरे की बात :
हुई सगाई हट गई : यूं सोचूं दिन रात।
यूं सोचूं दिन रात, कंवर : मेरी खोटी किस्मत आई।
पिता तुम्हारे सुरग सिधारे जब येह हटी सगाई।
कीया किसी भाई दुश्मन ने, जा खोटी खरी सुणाई।
ना जीवणे का धर्म हमारा रहा जगत के माहीं।"

माता का सुणके बचन गीया क्रोध तम छाय :
जा जंगळ बयाबान में लीनी बीन बनाय।
लीनी बीन बनाय राव, जब गोरखनाथ मनावे।
कहीं तरवर की बैठ छाऊं में राग भैरवी गावे :
छेह राग, छत्तीस रागनी, सभी बीन में गावे।
मोह लीए परसु पंछी बण के मुरली अधर बजावे।
जब बासक ने आवाज सुणी है, मन अपणे खणसावे।

बासक नाग

"ऐसा कौण बली हुआ जग में, सोते नाग जगावे ?
कौण बली पैदा हुआ, दी मुख बीन बजाय ?

मृत-मंडल के बीच में दीए सब नाग जगाय।
दीए सब नाग जगावे। खबर जल्द से जाकर लाओ।
क्यूं दी बीन बजाय ? ये ही सब हाल पूछके आओ।
'क्या बिपता तुम पर पड़ी ? मुख से बोल सुणाओ।'
सभी बात पूछो : येह जाके जरा देर मत लाओ।"

तातीग नाग

"ऐ भाई, तू कौण है ? कहो मुख साची बात।
कौण तुम्हारा नगर है ? कौण तुम्हारी जात।
कौण तुम्हारी जात ? हमें तू दे साची बतलाय।"
इस जंगळ बयाबान बीच में क्यूं तैं बीन बजाय ?
मैं भेजा राजा बासक ने, कहीए, तुम्हारी तैं।
नहीं, मारूं फुंकार कोप के, तुरत भशण हो जाय।"

गूगा

"पोता राजा अमर का, गरड डरेड़ा गांओ,
बेटा जेवर राव का, गूगा मेरा नांओ।
गूगा मेरा नाम : गोरखनाथ ने येह है टहराया।"
हुई सगाई हट गई मेरी, इस कारण चल आया।
सात समन्दरों पार कहीं हैं ; संजा नाम बताया।
बीहड़ पड़े में याद करें हम । इस कारण चल आया।"

बासक नाग

"हे तातीग, तुम से कहूं ; अब सुणीए मन लाय :
जो गूगे का हुकुम है, अभी करो तुम जाय।
अभी करो तुम जाय ; देर पल का ना मती लगाओ।
है गोरख का चेला पियारी, उस का हुकुम बजाओ।
बिना हुकुम जाणा नहीं, भाई : क्यूं सोचो पछताओ ?
अभी खबर लाओ जल्द से, पास हमारे आओ।"

तातीग नाग

"जो बात तुम ने कही मैं ली खूब बिचार।
जो मुख से तुम ने कही, सोई करूंगा कार।
सोई करूंगा कार आप ने जो मुख से फरमाया।
जहां कहीं बीहड़ पड़े, महाराज, करीए मेरी सहाई।"

इतनी कहके मुख अपने से चल गूगे पे आया।
हाथ जोड़ परणाम करी, चरणों में सीस निवाया।

तातीग नाग

"जो कुछ हुकुम कहो मुख सती : पास तुम्हारे आया।
मैं बासक ने तुम पे भिजा, बिन सुणे उठ ध्याया।"

गूगा

"हे भाई, तुम से कहूं : ऐसा कीजो काम।
सात समुन्दरों पार है ; धूपनगर है नाम।
धूपनगर है नाम ; राव की सिरियल राजदुलारी।
करी सगाई ; मुकर गीया है । वा है मांग हमारी।
ये इतना ही काम हमारा ; कही हकीकत सारी।
कारू देस, कामछया देबी, ईलम गजब है भारी।"

तातीग नाग

"धूपनगर आस्थान का सुणूं जभी से नाम,
रोम रोम में बस गीया, आए बदन में प्राण।
आए बदन में प्राण ; अभी मैं धूपनगर को जाऊं।
इक फिर का है रस्ता, ना दिल में घबराऊं।
लूंगा काया पलट सर्प की, ब्राह्मण का रूप बणाऊं।
इस बिध महलों बीच जाय सिरियल का दर्शन पाऊं।"

गूगा

"जो चाहो सो ही करो, है तुम्हारा इख्तियार।
लाज हमारी राख ले, और बियाह दे सिरियल नार।
बियाह दे सिरियल नार, हमारी सब सुध बिसारे।
मुख से करते तान सरीके जब से हुई सगाई।
ऐसी खोटी बोली बाणी मुख से लोग लगाय।
नित उठ रोण करी है बाछल, येह दुख सहा न जाय।"

जब इतने मुख से सुणे, भरा नैन में नीर।

तातीग नाग

"हे गुरू गोरखनाथजी, आण बंधाओ धीर।
आण बंधाओं धीर ; नीर नैनों से जारी।
इस बिपता के बीच आण सुध ले हमारी।"

छोड़ दीया सब देस नगर संजा के आया :
फिरके चारों तरफ, और बाग में बिस्तर लाया।
सात सहेली संगत हैं सिरियल राजकंवार,
आवत देखी बाग में, ली धरती निचकार।
ली धरती निचकार ; बणा कोई है बुढ़ा ब्रह्मेचारी।
हाथ लाठीया, कांधे धोती, जब दुरबल दे धारी।

तातीग नाग

" दीजो दान । महा पुन होगा । हूं बुढ़ा ब्रह्मचारी ।
धर्म फैले बाबल घर तेरे । येह है आसीस हमारी ।"

सिरियल राजकंवार

"येह ब्राह्मण क्या मांगता ? और हो रहा हाल बेहाल।
अरी सहेली पूछीए । क्यूं पड़ा हमारे खियाल ?
पड़ा हमारे खियाल, री बांदी ? पूछो उस को जाय।"

नौ माशे का अंगुस्ताना दीना काढ़ लगाय।

सिरियल राजकुंवार

"हे बुड्ढे, तू ठा ले इस को। दीया तुम्हारे तांईं ।"

तातीग नाग

"मैला दान नहीं लेणे का, येह निर-फल हो जाय।"
जब सिरियल झूलण लगी, गा रही राग तिलार ;
बहोत खुशी मन को हुई, अब दाऊ लगाकर तार ।

दाऊ लगाकर तार, जभी येह पल्ट ली झीकाया ?
उड़के जा बैठा डाळी पर, बसीर रूप बणाया।
सहज सहज कर लगा उतरणे, रचके अपणी माया ;
पलक उठाके देखी सिरियल, पड़ी धरण भय खाया।

तातीग नाग

"हे प्रभू, तैं क्या करी आज हमारे साथ ?"
लगा दाऊं, खाली गए, रोए मळ मळ हाथ :
रोए मळ मळ हाथ।

तातीग नाग

"बात येह गई : हाथ ना आवे।
और जतन क्या करूं आज मैं ? ना कुछ पार बसावे।
ऐसा करता जतन आज में, जो मेरे मन भावे ;
जो लग जाता दाऊं हमारा सब सूना मिट जावे।"

सिरियल राजकंवार

"आके सरवर ताल पर लगी सखी सब नहाण :
खाई थी, पर बच गई ; लीए बचा तन प्राण।
लीए बचा तन प्राण, सखी ; मैं क्या कहूं मुख से बाणी ?
देख सूरत भय लगा, मेरे को काळ निशानी।
थी गुडीयों में नागदाउं, मेरे नहीं किसी ने आनी।"

इतनी कह मुख रोण करी ; है भरा नैन में पाणी।
जब सिरियल ने तुरत ही बिस्तर लीए उतार ;
लगी सहेली नहाण सब करके मन म्हां पियार :
करके मन म्हां पियार। जभी मुख गोरखनाथ मनाया।
नहीं लगाई बार, तुरत ही बसीर रूप बणाया।
जाय बड़्या पाणी के भीतर, नजर कहीं नहीं आया।

तातीग नाग

"फिरूं ढूंढता सिरियल को, मैं जिस कारण चल आया।"

जब वहां दाऊ लगा ऐसा गुण्ठ पे डंक लगाया।
पीड़ हुई तन को उस के भारी ; इतना दुख पाया।
इतनी बात कही सिरियल को काढ़ फणा दिखलाया।

सिरियल राजकंवार

"खाए ली मैं इस बसीर ने, जभी जहर चढ़आया ।
इस बसीर ने खाए ।
जहर तन में चढ़आए।
नहीं बचती है जान।
काळ ने आण दबाय।"

उदन करी, ब्याकुल हुई, पड़ी धरण पर जाय।
सिरियल खाए सर्प ने, गीया जहर तन छाय।

गीया जहर तन छाय, जभी राजा पे खबर पहुंचाई।

सहेली

"सिरियल राजकुंवार तुम्हारी अभी सर्प ने खाइ।
ना आवे मुख सांस, पड़ी है तन की सुध बिसराइ।
नहीं बचण की आस, रावजी ; मैं कहि तुम्हारे तैं।"

राजा संजा

"जब जनमी क्यूं ना मरी, सिरियल राजकुंवार ?
अब मुझ को दुख दी चली। क्या कीनी करतार ?
क्या कीनी करतार ? हुआ दुख मुझ को भारी।
इक बार मुख से बोल, मेरी प्राणों की पियारी ? "

हो गिया महल अंधेर, रोण करते नर नारी ;
सब ब्याकुल हुए पड़े, करें मुख 'हा हा' कारी।
'नहीं मानीं तैं कही : बाग में पेखण आई :
थी खोटी वोह घड़ी, ली बसीर ने खाइ।'

तातीग नाग

"मैं तुम से यूं पूछता, कहो मुख से बात :
ना चुड़ियां कड़ियां थारी। क्यूं नहीं नाक में नाथ ?
क्यूं नहीं नाक में नाथ ? देस में भोंडी चाल तुम्हारी।
ना मुख से करे बैन ; नैन में भरे नीर क्यूं थारी ?
टप टप आंसू पड़े नैन से, बसन भीज गई सारी।
ऐसी घर घर फिरो डौलती, ज्यूं फिरती हत्यारी।"

पनहारी

"हे दादा, सुण लीजीए : मुख से कही ना जाइ।
सिरियल, बेटी राव की, ली सर्प ने खाइ।
ली सरप ने खाइ ; नगर में इस बिध सोग हो आइ :
देस देस के आय गारड़ू, ना कुछ पार बसाइ।
गरड डरेड़ा मांग ली, हटी रही बिना परणाई।
जाकर नहाण लगी सागर पे, खोटी किस्मत आई।"

तातीग नाग

"पनहारी, सुण लीजीए । कहो राजा पे जाइ,

'आया है इक गारड़ू ; लीजो उस से बुलाइ :
लीजो उस से बुलाइ, रावजी, कहूं तुम्हारे तैं।
वोह कहता है मुख अपने से, दूंगा उस से जिवाइ ;
है क्या चीज जहर मेरे आगे ? दूंगा तुरत उड़ाइ ;



गए सांस पैदा कर दूं : इक है बिधिआ मुझ पाई' ।"
इतणी सुणके, राव के आ गए प्राण ।

राजा संजा

"लाओ जल्द से अभी ; है पंडित गुणवान ।"

रागनी

"अभी जल्द से ले आओ ।
देर पल की मती लाओ ।
चलो, पंडित महाराजा,
हाथ तुम्हारे रहे लाजा ।
शकल दुख कट गई हमारी :
गुरू दर्शन की थारी ।"
चीर मुख से जभी तारी,
आवण मन में क्या भारी ?

तातीग नाग

"आण सहाई कीजो, हे गुरू गोरखनाथ ।
अब इस को बैठी करो, लाज तुम्हारे हाथ ।
लाज तुम्हारे हाथ ।"

नींब की डाळी ली मंगाई ।
पहले लीया लिखाइ जभी गूगे का बियाह सगाई ।
पढ़ पढ़ मंतर, लगा झाड़ने, जब सिरियल मुसकाई ।
ले गए गोण्ठ मुख अपने में, लीया चूस छिन माईं ।

राजा संजा

"हाथ जोड़ बिनती करूं, चरणों सीस निवाइ :
सिरियल राजकंवार की दीए हैं प्राण बचाइ ।
दीए हैं प्राण बचाइ । बात मैं कह दी अपणी मन की ।
सात रोज का बियाह दीया मैं, कमी नहीं कोई धन की ।
चले आओ, ले खतके बियाहण ; समझ लीए, है मन की ।
पूर्ण आस हुई है म्हारी, देर नहीं छण पल की ।"
जब चिट्ठी बियाह की ली, पूर्ण हुए सब काम ।
चलणे की तय्यारी करी, धरा गुरू का ध्यान ।

तातीग नाग

"धरा गुरू का ध्यान, चला, मैं इक फिर में आया ।
सब चिंता हुई दूर हमारी ; मन इच्छा फल पाया ।
येह है चिट्ठी बियाह की अपणी । क्यूं दिल में घबराया ?"
सात रोज रह गए फिरे में, जब मन म्हां भय खाया ।

गूगा

"आण खबर लीजो अभी, हे गुरू गोरखनाथ ।
भूड़ पड़े के बीच में । लाज तुम्हारे हाथ ।"

रागनी

"लाज राखो, गुरू, म्हारी,
करो अब बियाह की तय्यारी ।
सोच मुझ को हुई भारी :
बिपत ऐसी मुझे डारी ।
पार कीजो मेरा खेवा ।
तू है पत । राखीए दीवा ।
भगत तैं ने सभी तारी ।
मेरी बार क्यूं हुई नियारी ?"

गुरू गोरखनाथ

"क्यूं सोचे भू में पड़ा ? मन में बांधो धीर ।
उठ जल्दी : अस्नान कर : ओढ़ बसंती चीर ।
ओढ़ बसंती चीर, बाओरे । क्यूं मन रोण लगाइ ?"

ले गूगे को संग जभी इक छिण में पहुंचे जाइ,
धूपनगर के गौरे जाके तंबू दिए लगाइ ।
हेम नाथ और खेम नाथ, हैं येह मेरे गुर भाई :
लीया चौतरफा घेर, आणके ऐसी नाढ़ बजाइ :
रथ, हाथी और पीनस पालकी, ना गिणती गिणती गाइ ।
देख बरात होश गए सब के ।

राजा संजा

"येह क्या आफत आई ?
नहीं जाणूं था ऐसी होगी । खोटी किस्मत आई ।
हाथ जोड़ बिनती करूं, तुम सिर का सिरताज ।
मैं तुम को बेटी दी : राख हमारी लाज ।
राख हमारी लाज : आज मैं दामणगीर तुम्हारा :

चाहे राखो, चाहे मारो मुझ को, करो मेरा निस्तारा।
येह जितणे जती सती संत हैं, मैं करूं दर्शन इक बारा।
मैं आधीन् सरण ली तुम्हारी, कहूं मुख बारम बारा।"
जब राजा ने तुरत ही हाथी लीए संगार :
हीरे, मोती लाल ही, भर लीए कंचन थार।
भर लीए कंचन थार ; राव ने हाथ में ठाया :
ले गोरख के धरा अगाड़ी, चरणों सीस निवाया।
लीए जनेत, करी सेवल, भोजन खूब जमाया।
करक लगन में हैंगे फेरे ; पंडित ने बतलाया।

पंडित गुणमान

"हे राजा, सुण लीजीओ : मान हमारी बात।
लगन समां अब आ गीया, रही फिर इक रात।
रही फिर इक रात, राव : मैं देखा लगन लगाइ।"

जब पंडित ने बेदी रचके गोरख लीया बुलाइ।
गोरी सुत करके पूजण, फेरी दीए दीवाय।
गा रही मंगलाचार सखी, सब साज आरता लाइ :
कोई गोरी, कोई पतळी सुंदर, नैनों में छव छाइ।
मन में हुआ आनंद, 'आज सिरियल का बियाह रचाइ'।
बिदा हुए, घर को चले. बहोच कीया हेत पियार।

रानी

"हे सिरियल, मेरी लाडली, गळ भायां ले डार।
गळ भायां ले डार। आज हम से हुई नियारी।
झट गीया हम से नेह, हुआ दुख मुझ को भारी।
हो गीया महल अंधेर, मेरी प्राणों का पियारी।
ना जीवण पल इक : मरूंगी खाय कटारी।"

सिरियल राजकुंवार

"हे माता, सुण लीजीए मुझ भरण की बात।
मैं तुम बिन कैसे जीऊं ; बछड़ गए पितु मात।
बछड़ गए पितु मात ; आज से येह गत हुई हमारी।
हे माता, मैं प्राण तजूंगी ; ना हुई इक पल नियारी।"

इतनी कहके बात, मात के गळ में भायां डारी।
कभी नहीं भछड़ी थी इक पल, जब से सूरत संभाळी।

सिरियल राजकुंवार

"कहां गई मेरी संग सहेली ? थी प्राणों की प्यारी।"
ना मन की रही होश, रोणकर भूल गई सुध सारी।

गुरू गोरखनाथ

"'राम राम' सब को कहूं, जितने भूप नरेस।
दूध पुतर, धन सब फळों, खुशी तुम्हारा देस।
खुशी तुम्हारा देस, रावजी ; येह ही असीस हमारा।"

हाथ जोड़ परणाम करे, झट बीड़ ली असवारी :
आइ गए हैं गरद डरेडे, खुशी हुई नर नारी।

गुरू गोरखनाथ

"हे बाछल, मैं ला दी बियाह के सिरियल बहू तुम्हारी।
रहो खुश महलों में अपणे, मिट गई सोच तुम्हारी।"

इतनी कहके, चले नाथ जी, मन में येह ही बिचार।

गूगा

"हे माता, तुम से कहूं, जोड़ अगाड़ी हाथ :
उन जौडों को मिलण की है चिंता दिन रात।
है चिंता दिन रात, मात री, मन में येह ही हमारी।
वोह भाई मावसी के बेटे, हैंगे प्राण हमारी।
बिन देखे नहीं चैन मुझे । वे हैं सूरत मितवारे।
जब से मेरा जनम हुआ, मैं इक दिन नहीं बिसारे।"
लीए बिठा गोदी में अपणी, हित करते पुचकारी।

गूगा

"बिन देखे नहीं चैन मुझे ; मैं कहता पास तुम्हारे।"

सुरजन

" हे भाई, तुम्हारे बिना नहीं हमें चित चैन।
बिन देखे कैसे जीएं ? ना नकसे मुख बैन।
ना नकसे मुख बैन। रही है बिना पती जूं नारी :

जैसी रैन ससा बिना सुनी, या गत हुई हमारी :
बिन दीपक सूना है मंदर, कौण करे रखवाळी ?
हे भाई, हम को दीजो, कुछ आवे समझ में तुम्हारी।"

गूगा

"ऐ भाई, तैं क्या कही ऐसी खोटी बात ?
क्यूं बोलो कड़वे बचन ? ना आवे कुछ हाथ ।
ना आवे कुछ हाथ। अरे भाई, किस ने तुझे बहकाया ?
लाख बार समझाया तुझ को, नहीं समझ में आया।
हे मूरख, नादान, देख। क्या बातां कहके लाया ?
बहोत दिनों से रहे फिकर येह ना मन को समझाया।"

सुरजन

"आधा मुझे बटाए दे, ना इस में कुछ जोर :
तू अपणा मन समझ ले, बोले बचन खोड़।
बोले बचन खोड़, बरण ; तैं क्या मन में जाणी ?
हम लें आधों आध बटाए, बोले खोटी बाणी।
जा पूछो अब मां बाछल को ; वो क्या हैगी याणी ?
'इन को मिले जवाब', आज तैं येह हिरदे में ठाणी।
जो मुख से कुछ बुरी कहेगा, खुस जागी राजधाणी।
इन बातों में हाथ ना आवे, जो तैं मन में ठाणी।"

गूगा

"हे माता, सुण लीजीए मन मेरे की बात।
सुरजन ने मुझ को बुरी आण सुणाई बात।
आण सुणाई बात ; कहूं, सुण, माता, पास तुम्हारे।
छाहीए रही सुरखी नैनों में, बोले बचन करारे :
'या तू बांट हमें दे आधा, भला चाहे जो पियारी।'
ले मन सोच बिचार, मात : मैं कह दी पास तुम्हारे।
समझाओ उन को बुलवाके, मत हो बीरण नियारी।
जो तुम्हारी वोह कही मान लें, मत करीयो सोच बिचारी।"

रानी बाछल

"ऐ बेटा सुरजन मेरे, क्यूं होता दिलगीर ?
राज करो, बेटा, रहो मन में बांधो धीर।
मन में बांधो धीर : पुतर, मैं तुम पर वारी।
मान मात के बचन, मती कर सोच बिचारी।
झूटा संसार हुआ : बणी सब झूटी माया।
झूटा है संसार, झूठ के बस में आया।
झूठा पती, सुत, नार : झूठ ने धर्म गंवाया।
इस माया के बीच आणके मन भर माया।"

सुरजन

" हे माता, ऐसी कही ज्ञान तथ की बात :
क्यूं नहीं हमें दिवाती ? जो ऐसी है धरमात।
जो ऐसी है धरमात : मात, हमें ज्ञान सुणाई।
है तेरे इख्तियार, मात री, जो तुम्हारे मन भावे।
हम को कहती बार बार, नहीं गूगे को समझावे।
क्यूं बदनामी ले नाहक ? मैं सोच और पछतावे।"

हाथ जोड़ आगे खड़ा, कर मन में हित पियार।

सुरजन

"आ, भाई, खिलण चलें हम तुम आज शिकार।
हम तुम आज शिकार : हमारे ऐसी मन में आई।
हम छत्री राजपूत ; हमारा येह ही धर्म है, भाई।"

ऐसा गेरा जाळ आणके, तुरत लीया भरमाए।
हो घोड़े असवार पार, पल की ना तुरत लगाई।
इस जंगळ बियाबान बीच में ना कुछ दीया दिखाई।
खेल रहा सर काळ, फिरें यूं तीनों हुए सूदाई।

गूगा

"हे, भाई सुरजन मेरे, हुआ चित बेहाल।
लगी पियास, ब्याकुल हुए ; कीजे कौन अहवाल ?
कीजे कौण अहवाल ? आज येह हुई कौण गत म्हारी ?
ना जाणूं इस जंगळ में अब जाएगी जान हमारी।
लीया काळ ने घेर आणके, गीया भूल सुध सारी।
हे गुरू गोरखनाथ, बात येह, ऐसी कौण बिचारी ?"

उरजन

"हे भाई, सुण लीजीए ; क्यूं दिल में घबराइ ?

कौण सोच तुम को हुई ? दीजो सच बताइ।
दीजो सच बताइ : आज क्यूं मन में सोच बताइ।"
जब उरजन ने तुरत बिठाके बातों राव भरमाइ ;
जब सुरजन ने खैंच मियान से पहली वार चलाई।
है बिधना के हाथ बात ; झट लीना राव बचाई।
फिर दूसरी कीया वार, जब ना कुछ पार बसाइ।

सुरजन व उरजन

"बिन मारे हम नहीं छोडेंगे ; देंगे प्राण गंवाई।"

गूगा

"हे गुरू गोरखनाथजी, क्या मुझ को गीए भूल ?
क्या ? मेरे बेर सो गए ? बैठ रहे कहीं टूल ?
बैठ रहे कहीं टूल ? आणके लीजो खबर हमारी।
फिर आके क्या करो, गुरू, जब जाएगी जान हमारी ?
'अब की वार लगा है मेरा', कहता हूं ललकारी।"

खैंच मियान से, लीया हाथ में झट उरजन के मारे।
दूजा वार कीया जल्दी से, लीना सीस उतारे।
लाए लीया, घोड़े के हन्ने धर दिया, जाए अगाड़ी।

गूगा

"लीए सूरत पहचान, मां मेरे। मत ना कीजीए देरी।
हाथ जोड़के खड़ा अगाड़ी, 'राम राम' ले मेरे।"

देख सूरत को रो पड़ी, लीनी जभी पहचान।
हो ब्याकुल धरणी पड़ी, ना तन में रही प्राण :
ना तन में रही प्राण।

रानी बाछल

"ऐ बेटा, येह क्या जुल्म गुजारी ?
क्यूंकर तेरे हाथ बगे थे, हे पापी, हत्यारी।
ऐसा जुल्म कीया है तैं ने, नहीं लरजी नैन हमारे।
ना अपणा दर्शन दिखालावे। ना देखो आण हमारे।"

गूगा

"हे माता, तुम से कहूं, मन में साची जाण।
कहे बचन ; फिरते नहीं ; हमें गुरू की आण।
हमें गुरू की आण, री माता ; जो तैं बचन उचारा।
हम छत्री राजपूत जाण ले, येह ही धर्म हमारा।
है साखी भगवान, नहीं मां दर्शन करूं तुम्हारा।
सात जनम लग रहे नरक, कहा मात पिता का डाला।
हाथ जोड़ बिनती करूं, सुणो, धरतरी मात।
मुझ को आप समाइ ले, नहीं करूं प्राण अब घात।
नहीं करूं प्राण अब घात। नहीं कोई जग में मेरा।
मैं तेरे ली सरण : काळ ने मुझ को घेरा।
मत ना कीजीए देर ; मुझे ले आज समाइ।
मुझ को तीन तलाक मिलूं माता को जाए।
या तू ओट सराप ; जहां भिजे, वहां जाऊं।
दीजीए मुझे बताइ, पकड़ तेरे पे लाऊं।"

धरती माता

"हे बेटा, तुम से कहूं, क्यूं तू हुआ नादान ?
मुसलमान नीचे गड़े, हिंदू चले मसान।
हिंदू चले मसान, रे बेटा, तुझ को दीया बताइ।
जाओ पास रत्तन हाजी के ; लो कलीमा पढ़वाइ।
जो इतना करे काम, जभी मैं तुझ को लूं समाइ।
सिरियल दे सराप मुझे, राजा संजा की जाई।"

गूगा

"माता ने मुझ को कही ऐसी खोटी बात ;
क्या तुझ पे बरणन करूं ? सुणो, धरतरी मात।
सुणो धरतरी मात ; मुझे क्यूं बार बार भटकावे।
'गुरू गोरखनाथ की ऋण तुझ पे जो तू हटके आवे।
जैसी मैं तड़फूं जोडों को ऐसा तू दुख पावे।'
दीया सराप मुझ माता ने, उस को कौण हटावे ?"

धरती माता

"हे बेटा, जल्दी जाओ ; तुझ को दीया बताइ ;
इसी वक्त अजमेर में, बेटा, ध्यान लगाइ।
बेटा, ध्यान लगाइ, अभी जा : मत ना देर लगाओ।

है ख्वाजा खिदर इज्जत का पूरा : पास उस के जाओ।
ना बोलो कुछ मुख अपने से, सारा हाल बताओ।
होगी पूर्ण आस तुम्हारी ; जा, कलीमा पढ़ आओ।"

गूगा

"हे माता, साची कही तन में गई समाइ।
अब पहुचूं इक फिर में ; गए मेरे मन भाइ।
गइ मेरे मन भाइ, अभी चलने की करूं तय्यारी।
आगे जाऊं अजमेर बीच, हो पूर्ण आस हमारी।"

रत्तन हाजी और ख्वाजा खिदर, जो देखे खड़े अगाड़ी।
हाथ जोड़ आधीन हुइ ; कहे :

गूगा

"सुणीयो बात हमारी।
बहोत दिनों से मिलणे की येह तो मुझ को इंतजारी।
दे कलीमा पढ़ो। हाइ, मुझे माता ने बोली मारी।"

रत्तन हाजी

"हे भाई, तू कौण है ? क्यूं दिल में घबराइ ?
कौण तुम्हारा नाम है ? दीजो सएच बताय।"

रागनी

"हमें बतलाय दे, भाई ;
देर इतनी क्यूं तैं लाई ?
जात, क्या नाम है तेरा ?
तुझे क्या वहम ने घेरा ?
पढ़ण कलीमा तू है आया।
जात, नहीं नाम बतलाया।"

गूगा

"हूं गोरखनाथ का : बागड़ है अस्थान।
गूगा मेरा नाम है, जाणे मुल्क जहान :
जाणे मुल्क जहान। मेरे थे दो माइ के जाए।
कीया कपट मुझ से इक भारी ; ले जंगळ में आए।
पहले मुझ को लगा मारणे, फिर मैं मार गंवाया।
ले दोनों के सीस, जभी माता को आण दिखाय।
देखत सार जभी माता ने खोटे बचन सुणाय :
'जो मुझ को मुख आण दिखावे पड़े नरक में जाय'।"

रत्तन हाजी

"जब इतनी बिपता सुणी गई मेरे मन भाइ।
आ बच्चा, यहां बैठ जा : कलीमा दूं पढ़ाइ।
कलीमा दूं पढ़ाइ, जभी कानों में आजान सुणाइ।
हिंदू या शेख मुसलमान जब कलीमा दीया पढ़ाइ।
जा, बच्चा, गरड डेरेडे, लेगी तोहे समाइ।
हम नहीं हूं गुनाहगार किसी से : करमों येह ही लिखाइ।"

गूगा

"आजान सुणे, कलीमा पढ़ा, आया तुम्हारे पास।
हे माता, मन की मेरी पूरण कर दे आस।
पूरण कर दे आस, री माता ; बहोता दुख पाया।
जिन का सत रहा है, जग में फिर ना हटके आया।
देख हरि चंद ; सत के कारण नहीं अपणा धर्म गंवाया।"

इतनी कहके बात जभी झट धरती बीच समाया।

सारद सीस निवाके, धरूं गणपत का ध्यान।
सांग संपूर्ण कर दीया ; करो मेरा कल्याण।
करो मेरा कल्याण, मात । मैं मन इच्छा भर पाया।
जिस दिन मैं सरण ली है भूले छंद बताया।
सात दीप, नव खंड बीच में नहीं पाई तेरी माया।
कहता बंसीलाल ; मात, गूगे का सांग बणाया।
मात, मेरी करो सहाई,
चार बेदों में गाई,
जो धरते हैं ध्यान,
ज्ञान दीजो, महा माई।

***





राजा गोपी चंद का आख्यान

(जैसा अंबाला जिले की जगाधरी तहसील में मंचित गया)

यह पंजाबियों के सर्वाधिक लोकप्रिय स्वांग अथवा छंदबद्ध नाटकों में से है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संस्कृत के महान लेखक भतृहरि की स्मृति के इर्द-गिर्द एकत्रित आख्यान चक्र से संबंधित है। गोपीचंद को उसके भानजे के तौर पर जाना जाता है। और आमतौर पर गोपीचंद भरथरी अथवा भरतली के नाम से जाना जाता है।

गोपी चन्द की कथाएं भर्तृहरि जैसी हैं, जिसमें वे अपना राज्य छोड़कर धार्मिक पुरुष बन गए। यह भी प्रसिद्ध है कि भर्तृहरि विक्रमादित्य के बड़े भाई थे, उसके लिये उन्होंने त्याग किया।

कथा में गोपी चन्द की राजधानी को धारनगर कहा जाता है, जिसे मैं धार, विक्रमादित्य का सिंहांसन समझता हूं। यद्यपि नायक के देश को गौड़ बंगाला या बेंगाल कहा जाता है, जबकि गायक हमेशा पानीपत को धरानगर समझते हैं। - आर. सी. टेम्पल

स्वांग राजा गोपी चंद

सिभ के सुत गज बदन हैं । चरण निवाऊं सीस ।
पैर पदम गौरापति, किरपा करो जगदीस ।
किरपा करो जगदीस । मात मेरी करो कण्ठ में बासा।
छंद ज्ञान और सुर करो : आणके देखें लोग तमाशा।
गोपी चंद के सांग कहण की दिल को लग रही आसा।

रहते शहर उज्जैन राव नित करते भोग बिलासा ।
गौड़ बंगाला, देस जिन्हों का त्याग दीया बिसवासा ।

कहते बंसी लाल, " मात मेरी। पूर्ण कीजो आसा।"

मुकताल

" मात शाकुम्भरी, माई,
आणके करो सहाई।
मैं मूरख अज्ञान,
बुद्ध दीजो, महा माई।"
गोपी चंद महलों चले, धर गणपत का ध्यान,
आ उतरे रणवास में करण लगे अस्नान ;
करण लगे अस्नान राव ने, चन्दन चौक बिछाई।
चमकत बदन कनक जैसा, और मुख चंदर की नियाई।
निकसा भान गगन में सुरज की इक जोत छिप छाई।
हे मिरग नैन, कंठ कोयल, मुख ना ऊपमा कही जाई।
मोरी बैठी, नैन निहारी मैनावंती माई :
टप टप आंसू पड़े धरण पर, थमती नहीं थमाई :

रानी मैनावंती

"अदभुत रूप निहारी।
भरोसा हर का बिहारी,
रहूं चरण लो लीन।
मदन, मोहन, गिरधारी।"

गोपीचंद

"पुरवा पछवा है नहीं, हे दाता, क्या कीन ?
नहीं गगन में बादरी, बूंद पड़ी दो तीन।
बूंद पड़ी दो तीन : बूंदीआं कौण दिसा से आई ?"

सीस उठाके देखण लागे, ना कुछ दीया दिखाई।
जो देख मोरी में बैठी मैनावंती माई।

राजा गोपी चंद

"क्या रणवास किसी राणी ने खोटी बात सुणाई ?
खाल कढ़ाके भूस भरवा दूं ; दूं भौंरी गिरवाइ।
साची बात बता दे, माता ; क्यूं मन रुदन लगाई ?
मैं गोपी चंद राजा,
जगत के सारूं काजा,
वे त्रिलोकीनाथ,
हाथ उन के है लाजा ?"

रानी मैनावंती

ऐ बेटा, सुण लीजीए ; कहूं ज्ञान की बात ।
देख तुम्हारे रूप को मैं सोचूं दिन रात ।
मैं सोचूं दिन रात : पुतर, मैं तुझ को बचन सुणाया।
पिता तेरे की सुंदर मुरती जळके होगी छाया।
लीजो जोग, सुफल हो जग में, अमर रहेगी काया।
येह सुपना संसार जगत है झूठा जाळ बणाया।
सत कारण जाएके हरी चंद फिर जनम नहीं पाया।
धरू, पहलाद, नार गौतम की ना मेहीन सत डिगाया।
पुतर, तू जोगी हो जा,
मान ले कही हमारी।
ये कंचन सी देह,
अमर हो जागी थारी।"

राजा गोपी चंद

" ऐ माता, तैं सच कही, है झूठा जंजाळ।
येह सोळह सौ राणीआं, इन का कौण अहवाळ ?
इन का कौन अहवाळ ? नहीं कन्यां परणाई।

तू हुई निपट नादान, दय्या तुझ को नहीं आई।
ऐ माता री, ना आगे पुतर राज का थामणहारा।"
ऐसे कहके बचन नैन से आंसू डारा।

राजा गोपी चंद

" ऐसा बचन कठोर, मात, हम से कह दीना।
मात पिता सुत जोग कहो किस किस ने दीना ?
सुणो मैनावंती माई,
अकल तैं कहां गंवाई ?
हम को देती जोग।
दय्या तुझ को नहीं आई।"

रानी मैनावंती

"बेटा, तैं जाणे नहीं, राम नाम है अमोल।
फिर जनम पावे नहीं जो हर के आण कोल।
जो हर के आण कोल, राम पध ऐसा पियारा।
महमान है परम पाल, निगम पावे नहीं पूरा।
ऐ बेटा रे, जग में है श्री राम बोल, दूजा नहीं कोई।
क्यूं नहीं लेते जोग, मुक्त दोनों गत होई ?
कीया भरतरी जोग ज्ञान से मन चित्त लाया।
चौरासी हुई सिद्ध, नाम हर का गुण गाया।

राजा गोपी चंद

" ऐ माता येह चरज क्या ? हम से कहा ना जाए।
परदे अंदर तू रहे, कहूं तुम्हें समझाए।
कहूं तुम्हें समझाए : ज्ञान किस से तू लाई ?
कौण गुरू तैं कीया ? मुझ से दे भेद बताए।
मुझको येह संदेह है, कहीं जाणे ना पाए ?
आठ पहर दिन रैन रही चिंता नित यहाईं।
तूं राजों की सुतिया, कीए तैं भोग बिलासा ;
कहे अगम की बात : बड़ा येह अजब तमाशा।"

रानी मैनावंती

" ऐ बेटा, सुण लीजीए किस से पाया ज्ञान।
है गुरू मेरा गोरख जती ; सत सत करके जाण।
सत सत करके जाण ; रे बेटा, गुरू गोरख मैं पाया।
चर्पट नाथ मेरा गुर भाई, जोग पंथ में ध्याया।
परदा अंदर बैठ, कंवर, हर चरणन चित्त लाया।
अंतर जोग कमाओ, बेटा, सुखी रहेगी काया।"

राजा गोपी चंद

" ऐ माता, हम जात हैं, जोगी होण फकीर।"
इतनी कहके चल पड़े, नैनों ढळते नीर।
नैनों ढळते नीर, कंवर जी, चले बाग में आए,
जहां बैठे थे नाथ जलंधर, जुक्के सीस निवाए।

राजा गोपी चंद

" हे गुर देओ। करो तुम किरपा। माता ने तुम्हें बताए।
कान फाड़के मुंदरा डालो, जोग लेण को आए।
नाथ, चेला कर लीजो ;
जोग का रस्ता दीजो ;
चीरो मेरे कान ;
आज, गुर, किरपा कीजो।"

जलंधर नाथ

"जा लंडी के, भाग जा। क्यूं चिरवावे कान ?
बाली उमर नादान हैः तू क्या जाणे ज्ञान?
तू क्या जाणे ज्ञान ? बावरे, किस ने तुझे बहकाया ?
क्या कुछ तुझ पर भीड़ पड़ी है, जोग लेण को आया?
ना कोई दिन राज कीया है ना कोई दिन खाया ?
जाओ महल को, बैठ, राव जीः क्यूं फिरता भरमाया ?
अभी जल्दी से जाओ।
काहेको जोग कमाओ ?
छत्तीस भोजन छोड़।
नहीं सुख इस में पाओ।"

राजा गोपीचंद

" ना मुझ पर कुछ भीड़, ना हम हैं दिलगीर,
माता ने समझाएके लाया बदन तीर।
लाया बदन में तीरः येह मैं माता ने समझाया ;
'कंचन काया जळी पिता की' येह दिष्टांत बताया
अगम-निगम का ज्ञान सुणाके तख्त राज छुटवाया
ऐ गुर देओ, करो किरपाः मैं जोग लेण को आया।"

जलंधर नाथ

ऐसी तोरी माता बावरी होगी निपट नादान
तुझ को जोग दिवाउती, और बड़ा बतावे ज्ञान
बड़ा बतावे ज्ञान। इक तेरी बाली ऊमर अलमस्ता
जोग पंथ येह बड़ा कठन है ; क्यूं नाहक में फंसता ?
राज करो, घर बैठो जाके : बड़ा कठन येह रस्ता।
अलबत जोग नहीं सिधणे का, बड़ा बिकट येह रस्ता।"

राजा गोपीचंद

"अजी नाथ, सुण लीजो, मैं हूं निपट नादान।
जोग पंथ से ना टळूं, जो हो प्रभात समान।
जो हो प्रभात समान, नाथ, मैं अलबत जोगी हूंगा।
ऐ गुर देओ, किरपा करो : मैं चरण कंवल चित दूंगा।
जौण सीख बतलाओ मुझ को, वही सीख मैं लूंगा।
भशम रमाई, कानों में मुंदरा, तुम्हारी टहल करूंगा।"

जलंधर नाथ

" है कौण ऊमर, राजा, तेरी? कीया जोग का खियाल ?
जाओ, कहूं, घर आपणे, चलो नीत की चाल।
चलो नीत की चाल, रावजीः तुम आपणे घर जाओ।
छत्तीस भोजन छोड़, कंवर, क्यूं जोग पंथ में आओ?

हमरा दीठ नहीं पड़ता हैः घर अपणे को जाओ।
राज नीत का ध्यान लगाकर बैठे राज कमाओ।"

राजा गोपीचंद

" ना जाणूं मैं नीत को, लगा जिगर में ज्ञान।
अब गद्दी बैठूं नहीं, तेरे चरण से ध्यान।
तेरे चरण से ध्यान, नाथजीः ना मुझ को भरमाओ।
कान चीरके मुंदरा डालो, जोगी भेख बणाओ।
ऐ गुर देओ, करो किरपा ; अब ज़रा देर ना लाओ।
भशम रमाके, गळ म्हां सेली, येही ज्ञान की पाओ।"

जलंधर नाथ

" जो तुम जोगी होत हो सुणो ज्ञान का तंत।
पांचों इंद्री बस करो, जब जाण जोग पंथ।
जब जाण जोग पंथ, राव, तुम तेज क्रोध को मारो।
मन को मार, गऊ को मारो, जब जाण जोग सिधारो।
जोग पंथ का जुआ खेले है राज नीत को हारो।
इतना काम करो, रे बच्चा, जोग मता जब धारो।"

राजा गोपीचंद

" ऐ मंतरी, इन्हें क्या कहा इस जोगी ने ज्ञान ?
हटके फिर सुणाए दे, मुझे पड़े नहीं जाण।
मुझे पड़े नहीं जाण। नाथजी, क्या कुछ ज्ञान सुणाया ?
ऐ मंतरी, बतला दे मुझ को, तेरे समझ में आया ?
मुख से बात कही कुछ खोटी? मेरा जी लरजाया।
इस जोगी की बात करण से मेरा कळीजा खाया।"

मंत्री

" ऐ राजा, सुण लीजीए, मन चित करो बिचार।
है ये जोगी कोई बावरा, नहीं बोला बचन संभार।
बोला बचन संभार, रावजी; येह जोगी भरमाया।
'मन को मार, गऊ को मारो', ऐसा बचन सुणाया ?
येह बचन तो सुणके, राजा, हमरा जी ललचाया।
खोटी बात कही, खोटी ने सुणके मैं घबराया?"

राजा गोपी चंद

" जैसे जोगी ऐसे कहे खोटी मुख से बैन।
जल्द कुएं में डाल दो, जभी पड़ेगी चैन।
जभी पड़ेगी चैन हमारी। इस जोगी को मारो।
गेर कुंए में। नाम ना लीजो। ऊपर सिला उतारो।
कांकर, पाथर, रेता, मिट्टी, लीद, बहोत से डारो।
येह जोगी कहीं जाणे ना पावे। ये मन बीच बिचारो।

गोरख जोगी आ गया, अंग भभूत रमाए।
कानीपा के सामह्ने डेरे दिए लगाए।

गोरख कहेः

गुरू गोरख नाथ

" सुणो, रे चेला, कंद मोल तुम लाओ।
कानीपा की गाई मंडळी, उन्हीं के संग जाओ।

भाजी साग बणाके अच्छा, खूब तरह से खाओ।
पहिले करो आत्मा ठंडी, पीछे ध्यान लगाओ।
ये है कर्ता की माया।
बहोत सुख में फल पाया।
इस जंगल के बीच।
आज जोगी जन आया।"

चेला

"येह भाजी सब डाल, जोगीजी, तम्हारे पासा।
कुतके मारे अनगिणत करे बदन का नासा।
येह संसा मन उठी, गुरूजी ; कहूं तुम्हारे पासा।
तुम पूरे सत गुर हो, स्वामी, मेट शकल मन संसा।"

आण गुरू पे रोवण लगे बहोत मचाया शोर।



चेला

" हे, मेरे गुर देओ निरंजन, नाहक कीना जोर।
हम संग करें घरब की बातां, बहोत मचावें शोर।
या तो उस को आप बरजलो, नहीं बणे और से और।"

गुरू गोरख नाथ

" जाओ, रे चेला, इस वक्त में लागी सुरत हमारी।
ऐसे बचन कहो मुख सेती फूटे डिबिया थारी।
उन के फोड़, चढ़ाओ अपणी, खूब करो तरकारीः
वा देखेंगे, तुम खाओगे; रुदन पड़ेगी भारी।"

चेला

" हे गुरू, देओ बिद्या के, अपणे चीटक ही दिखलाई।
डिबिया छीन ली है म्हारी, तन में अगन लगाई।
उस जोगी पे, गुरू, हमारे कुछ ना पार बसाई।
ऐसा किरपा करो, नाथ, वोह देते फिरें दोहाई।"

गुरू गोरख नाथ

" मानो, चेले, बचन हमारा, ना दिल में घबराओ।
फूटें डीब्या सभी उन्हों की ऐसा सबद सुणाओ।
उन की फोड़ो, और परे बीजाओ, अपणे आण चढ़ाओ।"

गोरख कहेः

गुरू गोरख नाथ

" सुणो, रे चेला, तुम मन भरके खाओ। "
हुक्म दीया सभी चेलों को गोरख चीटक दिखलाई।
कानीपा के लशकर अंदर गहरी अगन लगाई।
लगी आंच, तन जलने लागे, देते फिरें दोहाई।

कानीपा

"सुण, रे गोरख चिटकी, तू है निपट नादान।
मैं खातिर तुम्हारी ना करूं : अपणा धर्म पछाण।
अपणा धर्म पछाण , रे गोरख ; क्यूं चीटक दिखलावे ?
गुरू तुम्हारा सांगला दीप में बैठा राज कमावे।
तेरे हाथ का जल ना पीऊं : कैसा सिद्ध कहावे ?

है, निर्लज, शर्म नहीं तुझ को, दुनिया को भरमावे ।"

गुरू गोरख नाथ

" जो तू जाणे, 'जगत में लीया जनम मैं जीत',
गुरू तुम्हारा कुएं में गिरे बहोत दिन गए बीत।
बहोत दिन गए बीत कुएं में पड़े, खबर नहीं पाई।
गोपीचंद राजा ने डारा, ऊपर सिला डलाई।
मैं ले आऊं गुरू अपणे को ले उस से कढ़ाए,
नहीं, तो कहेगा, 'सिद्ध गुरू को देणा कौन गिराए' ।"
"सांगल दीप सुहाउना किस बिध पहुंचूं जाए?"
नाथ मछंदर सिद्ध ने चौकी दी बिठाईः

चौंकी दी बिठाई, नाथ पंथ घेर लीया सारा।
रासधारी की चली मंडली उन ही के संग सिधारा।
हुआ नाच, जब तबला बांधे, गोरख नाथ पुकारा।

गुरू गोरख नाथ

" जाग, मछंदर, गोरख आए ।"
ऐसा बचन उचारा।
आवाज सुणी, आंखां खुली, मन में कीया बिचार।

मछंदर नाथ

"गोरख आए नाच में। लरजा जीया हमार।
लरजा जीया हमार। रे चेला, प्रघट क्यूं नहीं आया?
हे बच्चा गोरख, निर-बाणी किस ने तुझे सिताया?
ऐ गोरख, तैं आके मेरा राज तख्त छुड़वाया।
मुख से बचन सुणा दे साच्चे ; किस कारण तैं आया?"
बचन जब गुरू अपणे के कीया प्रघट रूप दिखाया।
तीन आदेश पीरथन ही कीनी, चरणों सीस निवाया।

गुरू गोरख नाथ

" सभी भेख हुआ वहां इकट्ठा, तुम को वहां बुलाया।
हे गुर देओ, करो किरपा, मैं सरण तुम्हारे आया ।"

मछंदर नाथ

" गोरख बच्चा, बात हमारी सुणिए मन चित लाई।
अब हम से जाया नहीं जाता, सरदी की रुत आई।
संग हमारे लड़के हैंगे, इन में प्रीत लगाई।
हेम नाथ और खेम नाथ, हैं ये तेरे गुरू भाई ।"

गोरख जोगी सिद्ध ने धारा गुरू का ध्यान।
गोपी चंद के मां को बेग बुला दे आण :
बेग बुला दे आन ।

गुरू गोरख नाथ

" री माता, सुणिए बचन हमारे।
जुल्म किया बेटे तेरे ने, नाथ कुएं में डारे।
पुतर तेरे का जीणा नहीं, सिर पर काळ पुकारे।
निकसत सार भशम कर देगा ।"

ऐसा बचन उच्चारे।

रानी मैनावंती

" ऐ मेरे गुर देओजी ; सुणिए , गोरख नाथ ;
मेरे पुत्र का जीवणा हैगा तुम्हारे हाथ।
हैगा तुम्हारे हाथ, नाथ ; मैं दुख भर - भरके पाळा।
तुम बिन आज जगत के अंदर ना कोई थामणवाळा।
इकलोती का है इक पुत्र, करो इस की प्रीत पाळा ।"

गोपीचंद बुलाए जल्द से जभी चरण में डाला।

गुरू गोरख नाथ

" जा रे बच्चा, अमर हो ; मेरा येही उपदेस।
चले धरतरी अकाश सब, तूं नहीं चले, नरेस।
तूं नहीं चले, नरेसः बचन तुम को समझाया।
अमर नाम अब हुआ जगत में, तैं जस पाया ।"

हो रही जय-जय-कार कूएं से बीच निकाला।
जो कुछ लिखा कलाम नहीं कोई मेटणहारा।
करद निकाली नाथ ने चीरण लागे कान।
धरती लरजी पास की और लरजा आसमान।
लरजा आसमान, नाथ ने जब जाण करद बगाई।
हस्ती और तुरंग, बृछ, सब रोएं, रोएं लोग लुगाई।

सब रणवास रोण लागा है, इक ना मैनावंती माई।
कान चीरके मुंदरा गेरी, सेली गळ में पाई।
अंग भशम, सेली गळे, दी जलंधर नाथ।
कानों मुंदरा आणके, झोळी खप्पर हाथ ;
झोळी खप्पर हाथ उन के महलों 'अलख' जगाया।
भिच्छा भेजो, रंग महलों से गुरू का सबद सुणाया।
मोतीं भीख मिले महलों से लेके गुर पे आया।
हाथ जोड़के खड़ा अगाड़ी चरणों सीस निवाया।

जलंधर नाथ

" हे गोपी चंद बावरे, क्यूं करता बद नाम ?
अब तक लोभ ना तैं तजा। जोग लीया किस काम ? "
जोग लीया किस काम? रे बच्चा, माया में भरमाया।
कंकर पत्थर सब त्यागी थे, अब लेके क्यूं आया ?
हटके फिर महलों में जाओ : भोजन क्यूं नहीं लाया ?
'माई' कहके भिच्छा लाओ ; गुरू ने ज्ञान बताया।"

'अलख' जगाए महल में फिरके दूजी बार।

राजा गोपीचंद

" माई, भिच्छा दीजीए, नाथ खड़े दरबार :
नाथ खड़े दरबार, आण डयोढी पे 'अलख' जगाया।
'भीक भीक' मैं खड़ा पुकारूं ; देण कोई नहीं आया।
अब तो आसन लगा हमाराः अध पुरुष की माया।
बिना लेणे टळणे का नहीं, गुरू का ध्यान लगाया।"

इतनी पाटम दई सुणी ' अलख', 'अलख' भंकार।
बांदी बेग बुलायके, तन बहोत बड़ा हंकार।
तन बहोत बड़ा हंकार।

रानी पाटम दई

"री बांदी, थमता नहीं थमाया।
इस जोगी ने राज बिगाड़ा भीक मांगणे आया।
दर पर बाहिर खड़ा डयोढी के ; जरा खौफ नहीं खाया।
बासों मारो, बाहिर निकालो ; तुम को येह फरमाया।"
सुणत सार बांदी उठी, तन में गुस्सा खाए।
मारण चली फकीर को, लीना बांस उठाए।
लीना बांस उठाए बांदी चल डयोढ़ी पे आया।

बांदी

"अरे पाखंडी, जा महलों से, क्यूं मरता बिन आए ?
मारूं बांस, गिरा द्यूं मुंदराः क्या बिज्या तैं खाई ?
पाटम दई का हुक्म, जोगी ; मैं मारण को आई।"

राजा गोपी चंद

" क्यूं, बांदी, धमकाउती? क्यूं करती येह शोर ?
करम हमारे का लिखा ; तेरा नहीं कुछ जोर।
तेरा नहीं कुछ जोर ; री बांदी, धन धन ये अमराई ?
इक दिन बांदी टहल करी थीर पा लागों सेज बिछाई।
खड़ी अगाड़ी पवन करी थीः किस ने तुझे भरमाई ?
वोह दिन, बांदी, भूल गई, ये बांस मारणे आई ?"

बांदी

"अरे जोगी, सुण जोगना, मैं पूछूं हूं तोए।
किस दिन तेरा राज था ? सच बता दे मोए।"
सच बता दे मोए ; अरे जोगी, क्यूं तू हुआ सौदाई ?
किस दिन तेरी टहल करी थी ? किस दिन सेज बिछाई ?
अरे पाखंडी, फिरे डोलता छलके दुनिया खाई।
पाटम दई का हुक्म, जोगना, मैं मारण को आई।"

राजा गोपी चंद

" जिस दिन राज कमावें थे हुक्म हजारों कोस ;
उस दिन टहल करी थी ; सुण बांदी बेहोश।
सुण, बांदी बेहोश, तू करी भला हमारा आसाः
रहणे का तुझे हुक्म दीया था पाटम दई के पासा।
जोग लीया, तन भशम रमाई, सभी तजा रणवासा।
वो गोपी चंद राव कहावण, कीया खाक में बासा।"

दूरण दुख अब जाण हुआः लीना रूप पहचाण।
गिरी धरण भू में, पड़ी मरी देही की माण।
मरी देह की माण ; बांदी, झपट चली धराला,
सिर की केशा फाड़ बगाई, लगा जिगर में भाला।

रुदन करे तन खाक रमाई, चित हुआ बेहाला।
पाटम दई के पास जायके बांस हाथ से डाला।

मुकताल

बांदी

" मैं बांदी सरकारी।
हुक्म मुझ को है भारी।
वोह गोपी चंद राव।
खड़ा डयोढ़ी पर म्हारी।"

रानी पाटम दई

" ऐ बांदी, क्यूं रोती ? क्यूं हो रही बेहाल ?
क्यूं तन खाक रमाउती ? क्यूं फाड़े सिर बाळ ?
क्यूं फाड़े सिर बाळ, री बांदी, दिल में घबराई।
मारण गई कोटल जोगी को रुदन करती आई।
क्या जोगी ने अपणे मुख से खोटी बात सुणाई?
कारण कौन बता दे, बांदी,? अक्ल कहां भरमाई?"

बांदी

" ऐ रानी, सुण लीजीए, हम से कहा ना जाए।
जा देखा महाराज को चित गया कमलाए।
चित गया कमलाये, अरी, मैं फाड़ बगाई केशा।
किस को मारूं ? किस से निकालूं ? करण लगी लौलेशा।
कानों मुंदरा, गळ बिच सेली, कर जोगी का भेसा,
दर पर थारे भीक मांगते गोपीचंद नरेसा।"

रानी पाटम दई

" ऐ बांदी, बातां तेरी गई हाड तन चीर।
जा देखूं महाराज को, किस बिध हुए फकीर।
किस बिध हुए फकीर ? अभी मैं दर्शन करणे जाती।
हीरे, मोती, लाल, जवाहिर, स्वर्ण थाळ सजाती।
बरहरूप तन उपजा मेरा।"

चल डयोढ़ी पे आती।
सब रणवास झरोखे लागा पड़दा छुटी बणाती।

रानी पाटम दई

"मैं पाटम दई नारी :
रूप मुझ को है भारी।
भिच्छा लो, महाराज ;
नाथ, मैं खड़ी अगाड़ी।"

राजा गोपी चंद

" गर्ज नहीं इस भीक के, राज हमें तज दीन।
ये पत्थर हम क्या करें ? सुण, राणी परबीण।
सुण राणी परबीण, हमारे किसी काम नहीं आवें ?
भोजन है तो हाजिर दे दो। क्या इस में खावें ?
ऐसे भीक नहीं लेणे काः सत के बचन सुणावें।
बार बार समझा चुका हूं, भीक दे, हम जावें।"

राणी पाटम दई

" क्यूं, राजा, भरमा गए ? हम को करत बिरान ?
कौन बात मुख से कहो ? क्यूं हो गए निपट नादान ?
हो गए निपट नादान, रावजी ? कैसी बात सुणाई ?
पान खायके सेज रम ली, अब कहते मुख से माई'।
खाए कटारी जौहार करूंगी, हो जा जगत हंसाई।
सोळह सौ पाटम दाई राणी काहे को परणाई ?
हम सोलह सौ राणी,
तजेंगे अब जिंदगानी।
हम को करत बिरान,
कही माता की मानी।"

राजा गोपी चंद

" ऐ राणी, तुम से कहूं ; सुणियो मन चित लाए।
जोग लीया ; जब गरहिस्त, क्या लेणा जोग कमाए ?
लेणा जोग कमाए ? अपणी माता की कही मानी।
गद्दी बैठे राज करें थें जब थी अपणी राणी।
जोग लीया मुख सेती बोलूं 'अलख, अलख' की बाणी।
अब तू माता लगी धर्म की। ज्ञान दीया गुर ज्ञानी।

रानी पाटम दई

" ऐ पिया, हम मरेंगे, तन बिच खाए कटार।
'पुतर' मुख से ना कही ; लरजा दीया हमार।

लरजा दीया हमार, रावजीः कैसी बात सुणाई ?
हमरे संग कीना था भोगा, अब क्यूं मात ठैराई ?
बड़े पाप भोगो, महाराजा ; जोग पंथ नहीं पाई।
येह प्राच्छत सिर से नहीं उतरे, नरक कुंड को जाए।"

राजा गोपी चंद

" ऐ राणी, तू अनंत गुणी ; क्यूं करती हंकार ?
करम रेख टळते नहीं ; क्यूं तन खाए कटार ?
क्यूं तन खाए कटार, रानीजी ? क्यूं मन रुदन लगाई ?
जो मर जाएगी प्राण घातकर, देगा जगत बुराई।
अब महलों में येह सोळह सौ लगें धर्म की माई।
'पुतर' कहके भिच्छा ला दो, आसण को फिर जाएं।"

रानी पाटम दई

" ऐ राजा, तुम देखीयो, इधर करो तुम ध्यान।
तुम तो जोगी हो गया, हम को करत बिरान।
हम को करत बिरान, रावजी ; तुम ने क्या फरमाए ?
सब रणवास झरोखे लागा, कुंजां सी कुरळाए ?
जो तुमको जोगी होणा था, क्यूं सिर मोड़ बंधाई ?
सोळह सौ सबर पड़ेगा हमरा जी तरसाई।"

राजा गोपी चंद

" ऐ राणी, तू सोचतीः क्यूं होती दिलगीर ?
मोहन सेजों सोए थे, अब होए दारण पीर।
जब से दारण पीर, राणीजी, क्यूं दिल में घबराई ?"
लिखा कर्म का नहीं मिटा हैः समझ सोच मन माहीं।
जब हम राज करें थे येहां से, जब तुम को परणाई।
अब तो छोड़ दीया सब धंधा तन में भशम रमाए।
अलख पुरुख की येह माया, ना कीनी जग में पाई।
इतना ही संजोग लिखा था ; बिधना बात बणाई।"

रानी पाटम दई

" मैं राजा बिनती करूं गळ बिच पल्लू डार।
होनहार सो हो चुकी, अब मन करो बिचार।
अब मन करो बिचार, रावजी, राज पाट सब त्यागी।
सोळह सौ बिलगती छोड़ी, किस बिध हुए बिरागी ?"
जा दिन देखूं रूप तुम्हारा प्रेम रूप में पागी।
अब छोडूं कित जान, महाराजा ? तेरी ही संग लागी।"

राजा गोपी चंद

" ऐ राणी, क्यूं सोचती ? क्यूं होती बेहाल ?
राज करो, खुशीआं करो, सब कुछ छोड़ा माल।
सब कुछ छोड़ा माल, मुल्क में राज करो सब नारी।
ऐ पाटम दई, हम निरभागी, मत कर हांस हमारी।
जिस दिन म्हारा जनम हुआ था उन में क्यूं नहीं बिचारी ?
तुम काहे को मन अपणे को रुदन कराउती पियारी ?"

रानी पाटम दई

" ऐ राजा, हमरी बिथा सुणीयो मन चित लाए।
आग लगाऊं इस राज को, मरूं जहर बिस खाए।
मरूं जहर बिस खाए, रावजी : काळ हमारा आया।
मैनावंती अपणे कारण तुम को जोग दिवाया।
आप बैठके राज करेगी अपणा मता उपाया।
सोळह सौ का सबर पड़ेगा : हमरा जी तरसाया।"

राजा गोपी चंद

" माता ने हम को दीया जोग सिंगासन ज्ञान।
जो उस को मैं त्याग दूं, होत धर्म की हान।
होत धर्म की हान, हमारा जीवन कैसे होई ?
ऐ पाटम दई, प्रेम इश्क में सुरत दी मैं ने डबोई।
मोहे रूप का बाग उजाड़ा प्रेम बेल अब बोई।
फळ और फूल रहा किस्मत का ; राम करे सो होई।"

रानी पाटम दई

तुम तो जाणो हो, पिया, जोग पंथ का ज्ञान।
हमरा मध क्यूं तोड़िया ? इस का करो बिखान।
इस का करो बिखान, रावजी ; हम कैसी कर जीवें ?
जोगण बणके संग चलेंगे, जहर पियाला पीवें।
हाई करत हिरदा पाटी है ; अब कैसी कर कर सेवें ?
हाथ बांधके खड़ी अगाड़ी ; चरण तुम्हारे नेवें।"

राजा गोपी चंद

" पाटम दई, सुण लीजो ; हमरा येही उपदेस ।
जो तुम को संग ले चलूं, कर जोगण का भेस :
कर जोगण का भेस, पियारी, तुम को संग ले जाऊं,
तब तू है पाटम दई नारी, जोग पंथ नहीं पाऊं ।
निंद्या करे जगत ही सारा, जीता ही मर जाऊं ।
करके सब्र बैठ महलों में : बार बार समझाऊं ।"

रानी पाटम दई

" सब्र क्या मन अपणे ? सुणो, राव महाराज ।
हम को छोड़ निरास, जा, ना सिद्ध रहे कुछ काज ।
ऐ राजा , जभी ना सिद्ध रहे कुछ काज ; जनम बिथा क्यूं खोया ?
हम को करत बिलाप, चैन से कैसे सोया ?
जौहर करेंगे महल सरब सोळह सौ राणी,
जैसे तड़फे मीन पड़े जल बिन पाणी ।
हिरदा कया कठोर ? नहीं पिछला नेह जाणा ।
हम को कर बरबाद, कहा माता का माना ।
तुम तो हो गए आज शकल भूपन में भारी ।
क्यूं हुए नादान ? मान लो सीख हमारी ।"

राजा गोपी चंद

" ऐ राणी, अनंत गुणी, बोलो इमरत बैन ।
जगत बीच, सुण लीजो, सुपना है दिन रैन ।
हे राणीजी, सुपना है दिन रैन ; नहीं रहती थिर काया ।
छिन में ही उड़ जाए जैसी वृछ की छाया ।
हे राणीजी, राज, पाट, धन, माल गए सब राजे त्यागी ।
ब्रह्मा से चल बसे गए संन्यासी बिरागी ।
हे राणीजी, दशरथ से चल बसे, पुत्र जिन के भगवाना ।
कितनी धरती गई ? गए कितने असमान जहाना ?
हे राणीजी, गए बहोत से सिद्ध । गए असमान घनेरो ।
इतने तारे गए ? गए सस्सी भान बहोतेरे ।
हे राणी जी, तू बिरहे में पड़ी, दूर कीजे चितराई ।
मैं कहता समझाए, सुणो तू मन चित लाए ।

रानी पाटम दई

" हमें बिलकती छोड़के तन मारा बिरहे का तीर ।
ना जोग सुफल हो, रावजी, जो तुम हुए फकीर ।
हे राजाजी, जो तुम हुए फकीर, छोड़ दीनी उमराई ।
दुर्लब है राज, नहीं फिर मिलता येहां हीं ।
दुर्लब है संसार, बड़ी दुर्लभ है राणी ।
दुर्लब है येह सेज ; तुम्हें मन में क्या जाणी ?
हे राजा जी, दुर्लब है सब जगत, और सब दुर्लभ भोगा ।
तुम तो जोगी हुए, मेरे को लगा बिरोगा ।"

राजा गोपी चंद

" हे राणी, इस जगत में, झूठी जगत प्रीत ।
झूठी हैं छिपलाईआं, झूठी प्रेम प्रीत ।"
हे राणी जी, झूठी प्रेम प्रीत, जैसी तरवर की छाया ।
झूठी ममता मोहे ; जगत सुपना की माया ।
हे राणीजी, कामरूप भामंग छूवत ही बिख चढ़ जाए :
मैं जोगी, अबधूप जाए सौ कोस पराए ।
हे राणीजी, मन चाहे बैराग, भोग केसे कर लीजे ?
देह मूए मर जाए । कहो, अब कैसी कीजे ।"

रानी पाटम दई

" हे राजा, बिनती करूं, चरण तुम्हारे लाग ।
जब लग जीऊंगी, पिया, नहीं मिटेगा दाग ।
हे राजाजी, नहीं मिटेगा दाग, लगा हिरदे के माहीं ।
किस पर करूं पुकार ? बिथ सुणता कोई नहीं ।"
कळपेंगे दिन रैन रुदन अपणे कर माहीं ।
गेर चले अंधेर, पिया, अंग भशम रमाए ।
हे राजाजी, ना आगे कोई पुतर, सब्र मन कैसे कीजे ?
ये दुख सहा ना जाए, काठण जी हमरा लीजे ।"

राजा गोपी चंद

हे राणी, तू देख ले, कर हिरदे में ज्ञान ।
अब तुम को तो पड़ गए राम भजन की बाण ।
हे राणी जी, राम भजन की बाण ; और कारज नहीं कोई ।
कभी ना त्यागूं जोग ; परम दुख हम को हुए ।
हे राणीजी, गंगा जमना दो उलट परबत जावें ;
चांद, सूरज रथ फिरे उलट पच्छम को जावे ;

हे राणीजी, उलटी पिरथी होवे, तळे हो जा असमाना :
सीलवंत सत छाड़ करे पिया का बाणा ;
ऐ राणी जी, इतनी कारज होवे ; जोग मैं कभी ना त्यागूं।
ध्यान धरूं ; गुरू देओ पडूं चरणों : चित लागूं।"

आण पिता के गोद में बैठ गई दुर हाल ;
रोवे पुत्री बोलती करके हाल बेहाल।

राज कंवारी

" हे बाबलजी, करके हाल बेहाल हमें कित छोडूं जाए ?
कौण करे म्हारा पियार ? नहीं कोई संग का भाई।
हे बाबलजी, कौण करे म्हारा बियाह ? कौन करेगा म्हारी सगाई ?
कौन हमें दे भेज ? कौन फिरे लेगा मंगाई ?
खाए कटारा मरूं ; अनंत तुम्हारे गळ डालूं।
कभी ना देऊंगी जाण, भेख जोगी का तारूं।
येह सोळह सौ नार ऊमंग जोबन रस भीनी।
उन से छोड़ प्रीत, जोग चिंता मन लीनी।"

राजा गोपी चंद

" हम, बेटी, जोगी हुए, अंग भभूत रमाए।
अब तुम्हारी ममता नहीं : किन दीनी भरमाई ?
क्यूं दीनी भरमाई ? पंथ हमरा क्यूं घेरा ?
नहीं मुझ को पहचाण, नाम नहीं जाणूं तेरा।
हे बेटी री, क्यूं रोए ? क्यूं झुरे समझ अपने मन माहीं ?
येह गोपी चंद राव आज तेरा बाबल नाहीं।
हे बेटी री, तुम जाणो, ' म्हारा पिता लीया बिसयर ने खाए।'
मैं जाणूं घर बीच नहीं कन्यां जन्माई।
वही करे थारा बियाह आप चंद्रावळ राणी।
वही तुम्हें दे भेज, वही ले बेग बुलाए।"

राज कंवारी

हे मेरे ज्ञानी पिता कर हिरदे में ज्ञान।
अंग भूखण उतारके क्यूं चिरवाए कान ?
हे बाबल जी, क्यूं चिरवाए कान ? कहो, कैसे मन आए ?
गहणे बशम उतार, अंग क्यूं भशम रमाई ?
गेर चले अंधेर भी जाते निरधारा।
तुम बिन हमरा कौण जगत में थांबणहारा ?
बाली ऊमर नादान मन हमरा क्यों तोड़ा ?
बिन देखे नहीं रहूं, चित अब कैसे माड़ा ?

राजा गोपी चंद

" हे बेटी, साची कहूं : अपणा मन समझाए।
क्यूं रोवे मन अपणे ? पाथर चित बणाए।
पाथर चित बणाए ; नहीं रूवत बणाई।
कभी ना मेटा जाए कर्म जो अंक लिखाई।
काचा बरतन होवे, जिधर फेरे फिर जाय :
हम तो जोगी हुए ; गुरू ने दिए पकाय।"

राज कंवारी

" हे राजा, हमरे पिता, त्याग चले सब भोग।
पुत्री का ये बचन है सुफल तुम्हारा जोग।
सुफल तुम्हारा जोग, पिता जी। सुफल तुम्हारी बाणी।
सुफल तुम्हारी बड़ी तपशिया। सुफल नाथ गुरू ज्ञानी।
लाख दफा, समझाया तुम को : म्हारी सीख ना मानी।
छाड़ चले कालर में कानियां ये सोलह सौ राणी।
'हम मन सबर करेंगे पिता बिन' ; ये क्या तुम ने ठाणी ?
करके जौहर, प्राण तज देंगे : या ले निसचा जाणी।"

राजा गोपी चंद

" हे बेटी, जाकर कहो, मैं समझाऊं तोए।
मुख से 'पुतर' कहाएके भीक दिवा दे मोए।
भीक दिवा दे मोए, री, मुख से 'पुतर' कहाए।
महल किला रहणे के छोड़े बण खंड सुरत लगाए।
देर हूई, गुरू हम को मारे, अब लग भीक न आई।
'पुतर' कहके भीक दिवा दे, जोग सुफल हो जाई।
मैं हूं जोगी का चेला।
गिरहिस्त से रहूं अकेला।
राज पाट दिया छोड़,
बाणा फकीर अलबेला।"

राज कंवारी

" हे माता, बिनती करूं गळ बीच पाल्लू डार।

होनहार सो हो गई, अब मन करो बिचार।
अब मन करो बिचार : पिता ने तज दी सब उमराई।
कान फाड़के मुंदरा डाली, अंग भभूत रमाई।
जो उन का तुम जोग छुड़ावो, देगा जगत बुराई।
'पुतर' कहके भीक डाल दो, जोग सुफल हो जाई।"

रानी पाटम दई

" हे बेटी, कैसी कहूं मैं हूं सील सतीस ?
मुख 'पुतर' कैसी कहूं, वे हैं, प्राण पतीस ?
वे हैं प्राण पतीस, री बेटी ; क्यूं सर पाप चढावे ?
कौण जगत 'पुतर' कहे ? हम तो भर भर छाती आवे।
भोग कया जाके संग सोई, अब क्यूं पाप लगावे ?
नरक कूण्ढ को जा, हत्यारी, खोटी बात सुणावे।"

राज कंवारी

" हे माता, मन समझे ; भली करें जगदीस।
जितनी तुम्हारे पास हैं छाड़ो हमारे सीस।
छाड़ो हमारे सीस, री माता, जितनी प्राच्छित भारी।
बुरा भला सब हम को कहे, निस दिन दीजो गारी।
अब तुम को तो ये ही सुफल है जितनी हो तुम नारी :
मुख से 'पुतर' कहो पिता को : मानो बात हमारी।"

पुत्री के माने बचन, हुआ चित बेहाल।
चार पदार्थ पूरके लीया हाथ में थाळ।
लीया हाथ में थाळ।

रानी पाटम दई

" राव, मैं तेरे सामहने आई।
भीच्छा लीजो ; कंथ हमारे, चार पदारथ लाई।
येह ही हमारी असीस, पियाजी, सुफल तेरी सिद्ध आई।
इक बार कहती, लख बार कह दूं, 'तू पुतर, मैं माई'।"

लेकर भिच्छा चल पड़े ; भली करी जगदीस।
गुर अपणे पे आणके चरण निवाइयो सीस।
चरण निवाइयो सीस।

राजा गोपी चंद

"गुरू जी तुम्हारा हुकम बजाया।
सोळह से मुख 'पुतर' कहाए जभी भीक मैं लाया।
बारां बरस की सुता कंवारी तिन सै फंड छुटाया।
ऐ गुर देओ, करो गत मेरी ; तुम से ध्यान लगाया।"

जलंधर नाथ

" गोपी चंद, तुम ये सुणो ; भोजन जीमो संग।



फिर जुदा आसण करो ; येह ही फकीरी रंग ।
येह ही फकीरी रंग : हमें से आसण जुदा बणाओ ।
गुर का नाम जपो हिरदे में, हर से ध्यान लगाओ ।
अलख नाम जी से ना हारो, राम नाम गुर गाओ ।
जोग लीए का येह मजा, बैकुंठ धाम को जाओ ।"

रानी पाटम दई

" सास हमारी, जान का तुझ पे पड़ो सराप ।
पुतर को जोगी कीया, राज करोगे आप ।
राज करोगे आप : हमें दारण दुख दीना ।
सोळह सौ का सबर जान अपणे पे लीना ।
जो करणा चाहो राज, नहीं हम करणे देंगे ।
अगला पिछला कीया आज सारा भर लेंगे ।
ना बिलसे, ना खाए, नहीं गत होगी तेरी ।
करीये नरकों बास, पीड़ तुझे होवे घनेरे ।

रानी मैनावंती

" ऐ री पाटम दई बहू, तुम हो सुरज्ञान ।
पुतर मैं जोगी कीया, अपणा धर्म पहचान ।
अपणा धर्म पहचान, कीया गोपी चंद जोगी ।
काया उन की अमर अन्त परळो म्हां होगी ।
हे बहू री निरमल, देख सरूप करण कंचन सी काया ।
निरखत सुफल सो, बहू, कंवर को जोग दिवाया ?
अपणा सुवाद बिगाड़ कीया पुतर निसतारा ।
क्यूं सोचो दिन रैन, रुदन करती हर बारा ?
ऊदर पसारे पैर, पीड़ मुझ को है भारी ।
तुम क्यूं होत उदास साथ फेरों की नारी ?"

रानी पाटम दई

" सास हमारी, क्यूं कीया पुतर को येह फकीर ?
तू सुखिया अब ना रहे, हम को दारण पीड़ ।
हम को दारण पीड़, धीर मन कैसे लावें ?
महलों पड़ा अंधेर, चित कैसे समझावें ?
जोबन लहर समुंदर देख जी डर पे हमारा :
किस बिध उतरें पार, कठन बिड़हे की धारा ?
ऐ ससुर जी, हिरदिया कीया कठोड़ : पीड़ तुझ को नहीं आई।
पुतर कान चिराए, हमें कारा राण्ड बिठाई ।

रानी मैनावंती

" ऐ री पाटम दई बहू, क्यूं मन कीया उदास ?
भजन करो उस राम का, हो सुरगों में बास ।
हे बहू री, हो सुरगों में बास, बरत पी कारण कीजो ।
राम भजन के हेत अपणा मन तन दीजो ।
हे बहू री, करो दान और पुन, मुक्त अपणी कर लीजो ।
मैं कहती हर बार, धर्म अपणा मत छीजो ।"

" बिथा मेरी सुण लीजो, बेटा गोपी चंद,
सुख आसण को छोड़के पड़े मोहे के फंद ।
हे बेटा रे, पड़े मोहे के फंद ; इन्दर ने बाद लगाया ।
पवन चलत है, ढेर बहोत है जल बरसाया ।
हे बेटा रे, अतलस मखमल सेज बिन कभी निंदरा नहीं आई।
अब पाणी पर लेट, पुतर ; मैं कुरळाई ।
हे बेटा रे, महल किला और सुख छोड़के रैन कटाई ।
कित गयो पलंग निवार, सेज फूलों की छाओ ?
हे बेटा रे, कित गई सगरी नार, जिन्हें तू पर पवन झुलाए ?
ये दुख रहा भोग, कहे मैना दई माई ।

राजा गोपी चंद

" हे माता, जंगळ तो रहे हमारे महल अटार ।
भूं में सेज कोमल बणी, तज दीए पलंग निवार ।
हे माता री, तज दीए पलंग निवार, खाक में बासा लीना ।
परम सुखी हम हुए, मोहे सब ही तज दीना ।
हे माता री, राज, पाट, धन, माल, बोझ मैं सर से तारा :
अब सोऊं सुख चैन प्रिथम, सब से ही नियारा ।"

रानी मैनावंती

" हे बेटा, सुण लीजो मुझ जनानी की बात ।
इस दुख में, बेटा मेरे, क्यूंकर काटे रात ?
हे बेटा, क्यूंकर काटे रात ? बड़ा कोमल तन तेरा ।
देख जमीन पर बास, पुतर जी, लरजे मेरा ।
हे बेटा रे, महफल के सिंगार आप करो थे चितराई ।
अब किधू सबेर, मंत्री याद कराई ।
हे बेटा रे, त्याग जोग, चलो संग, बैठके राज कमाओ ।

मान हमारा कहा ; देह को क्यूं तरसाओ ?"

राजा गोपी चंद

" हे माता, सुण लीजीए ; जो प्राणी मर जाए,
फिर खोड़ के बीच में कैसे प्रवेस हो जाए ?
कैसे प्रवेस हो जाए ? कहूं, माता, सुण लीजे।
निकस भंवर उड़ जाए, अंग फिर कैसे छीजे ?
पड़ी रहे है खोड़, नहीं ममता करे कोई।
तूं क्यूं हुई है नादान ? अकल तुम्हारी क्यूं खोई ?
छोड़ दीया सब राज, सरब सोळह सौ राणी।
अब ऐसी मत कहो : बोल मुख इमरत बाणी।"

रानी मैनावंती

" चार खूंट रमते फिरो, करो देस की सैर।
बंगाला मत जाइयो, दो तू चाहे खैर।
चाहो तुम खैर, तेरी बरजे है माई।
बंगाला के देस मती जाणा, रे भाई।
देखेगी रूप तेरा भगवा, जी, बाणा,
बहिना तज देगी प्राण ; हुआ किस बिध आणा ?
चंदन रुख छोड़, मती लाओ, जी, बेरी।
बिगड़े परलोक ; कही मान ले मेरी।"

राजा गोपी चंद

" जा दिन से जोगी भए करके भगवा भेस,
घर सोळह सौ नार थी, सब तज दी हमेस।
सब तज दी हमेस, बहिन कैसी मर जागी ?
येह ही सूरत को देख, बहोत सा रुदन करेगी।
हे माता री, आवेंगे समझाय, धीर मन में धरेगी।
हे माता री, तुम लीजो बुलाय, फिर क्यों रुदन करेगी ?"

रानी मैनावंती

" तू, बेटा भोळा फिरे, मैं समझाऊं तोय,
घर की तिरिया है भली, ना घर घर डोलत होए।
ना घर घर डोलत होए, तुरत प्राण गंवावे।
आप तिरे कुल तार जगत नाम करवावे।
अब बिछड़ोगे पुतर, फिर कौण मिलावे ?
येह चंदा तस्वीर, मुझे फिर नहीं पावे।
बैठो घर, राज करो, पुत्र पियारे।
मैं कहती कर जोड़, बचन मान हमारे।"

राजा गोपी चंद

" हम जोगी अबधूत हैं, करें देस की सैल।
माता छोड़ी बिलकती, करें गौड़ बंगाला सैल।"

रागनी

" सैल हमें मुलक की करणी।
कहूं कर जोड़के, जननी।
देस चल बहिन के आए,
ध्यान गुरू चरण से लाए।
बाघ बिस्तर दीया लाए।
गगन में बादळी छाई।
मीग बरसण लागो भारी
भूल सिद्ध बुद्ध गया सारी।
बीत रजनी गई सारी।
प्रभू, तैं क्या बिपत डारी ?"

राजा गोपी चंद

"तारे गिण गिण काढ़ि मैं आज की रैन,
उतरे, जी, कर बंदगी रब्ब थारे के बैन।
रब्ब थारे के बैन ; उठो, अब ध्यान लगाऊं।
अब राजा के महल जायके 'अलख' जगाऊं।"

खप्पर ले लिया हाथ, गुरू का ध्यान लगाया।
जा डयोढ़ी के बीच नाथ ने 'अलख' जगाया।

राजा गोपी चंद

"दे भिच्छा मोहे आण, देर इतनी क्यूं लाई ?
सुण, बांदी कमजात, देर इतनी क्यूं लाई ?"

चंपा दई राणी कही ; बोली बचन सम्भार।

रानी चंपा दे

" भिच्छा लेकर जाइयो, नाथ खड़े दरबार।

पड़ती है धूप, काया अंग पसीजे।
भर मोतियों का थाळ बेग जोगी को दीजे।
जो भोजन की काज तके आके द्वारा :
वो खावे ना आप उस से दीजे सारा।
येह जोगी अब धूप कभी खाली ना जावे।
ले भिच्छा दे पाए, देर पल की ना लावे।"
भिच्छा ले बांदी चली राजा के दरबार ;
डयोढी पहुंची, आणके बोली बचन सम्भार।
बोली बचन सम्भार।

बांदी

" भीक मैं तुम से लाए।
ले जोगी के लाल।"

दूर से अरज लगाए।

बांदी

हे पियाराजी, तेरी सूरत को देख बहोत मन म्हां शरम आई।
जिस घर जन्में, नाथ, तेरी क्या जीवे माई ?"

राजा गोपी चंद

" हे बांदी, तुम से कहूं, सुण लीजो मन लाए।
तू बांदी रणवास की, मेरा जोग अकारत जाए ;
जोग अकारत जाए ; तेरे नहीं भिच्छा लेऊं।
हमें गुरू की आण, भीक तुम से ना लेऊं, ।
हे बांदी री, बोले बचन कठोर : हीया लरजा नहीं तेरा ?
धारानगर का राव, नाम गोपी चंद मेरा।"

बांदी

" क्यूं, जोगी, अकल गई ? बोलो बचन सम्भार।
झोळी लूंगी छीन अब, धक्के दूं दो चार।
धक्के दूं दो चार, जोग में कैसी बाणी बोले ?
तू जोगी बे-ईमान हुआ है घर-घर मांगत डोले।
ऐसे करे जवाब , खड़ा डयोढ़ी म्हारी बोली।
मारूंगी मैं बांस तेरे सिर धरण पर डोली।"
नैंनों भर भर रोते सुण बांदी की बात।

राजा गोपी चंद

"इक ली है मोल तू, राखी जी की साथ,
राखी जी की साथ, आज मैं ली ही फकीरी।



ऐ बांदी री, तू मारे मेरे बांस, हुई दिल की दिलगीरी।
राज पाट दीया छोड़, तजा मैं तख्त अमीरी :
ये समझो मन बीच : लिखी मेरे करम फकीरी।"

बांदी

" जा, जोगी के बाळके, जो तू चाहे खैर।
घर घर भिच्छा मांगता करता डोले सैर ;
करता डोले सैर ; छीन ले नार पराई।
येह छल की बात अंग में भशम रमाई।
हे जोगी रे, कब तैं लीनी मोल ? हमें, बांदी, बतलाई।
झोळी लूंगी छीन, करे तू बहोत बुराई।"

राजा गोपी चंद

"धारानगर अस्थान है, कहूं तुम्हारे पास,
गंगा जी का नहाण है ; गुरू पूरण कीजो आस।
पूरण कीजो आस, गुरू जी ; येह कुंभ का है मेला।
सब परवार छोड़कर आया सब से भला अकेला।
येह दुनिया मतलब की गरजी ; नहीं गुरू, नहीं चेला।
अब लीजो आदेस हमारी, मत ना करो झमेला।
छोड़ दीया संसार आज मैं ; येह जग दर्शन मेला।
इस माया से कोई बचे : है पक्का गुर का चेला।"

सूरत सोहणी देखके रोई पड़ी तत काल।
कूक मार मुख रो पड़ी हो गई हाल-बेहाल।
हो गई हाल-बेहाल, रुदन करती भारी।

बांदी

तू सुणीये मन लाए, तुझे कह दी सारी :
'चंपा दई बहिन मुझे जो मिल जाए ;
ये कहता हूं आप खड़ा, मुझे दीजे बतलाए।'
खप्पर है हाथ, कान मुंदरा डाली,
खड़ा डयोढ़ी के बार, नीर नैनों से जारी।"
सुणके बांदी के बचन मन में हुआ संदेस

रानी चंपा दे

" अब दर्शन करूं, कैसा है दरवेश ?
कैसा वो दरवेश ?"

जब ही चलके डयोढ़ी पे आई।

रानी चंपा दई

" लीजो भिच्छा, नाथ, अब क्यूं इतनी देर लगाई ?
कौन देस से भी आउना ? हम को दे बतलाए।
मैं पूछूं हूं, नाथ : हमें को दीजो सच बतलाए।
करके भगवा कपड़े भर जोगी का भेख।
यो जोगी का रूप है। ऐसे फिरें अनेक।
फिरते हैं अनेक रूप धरके मोहें :
कोई महलों के बीच आप बैठे सोएं।
येह दुनिया संसार फिरे मतलब गरजी।
क्या बोली मुक आण ? नहीं छाती लरजी।
सुण, बांदी कमजात ; कहूं तुम्हारी तैं।
दे मोतिन का थाळ ; जाओ भिच्छा पाई।"

ले भिच्छा बांदी चली भर मोतीन का थाळ।

बांदी

"भिच्छा लीजो, गुर नाथजी ; क्यूं हो रहे बेहाल ?
क्यूं हो रहे बेहाल ? नाथजी, मैं भिच्छा ले आई।
हुकम दीया राणी ने मुझ को, भीक देण को आई।
क्यूं करते हो सोच, नाथ जी ? क्यूं मन सोच लगाए ?
लेणे हो, तो लेयो, नाथजी ; नहीं, यहां से रमजाए।"

राजा गोपी चंद

"इन मोतीन के भीक के नहीं मुझे दरकार।
कंकर पथर सब तजे छोड़ आया परवार।
सब छोड़ा परवार, री बांदी, कहता मुख से बाणी।
या तो मेरी बहन लगी है जो महलों में राणी।
मैं तो फकीर हुआ, राज तज, बग गए कलम निशानी।
दीजे दर्शन कराये बहन का, येह माई मंतर ठानी।"
इतनी सुण बांदी चली हुआ चित बेहाल।

बांदी

"वो गोपी चंद राव है, हो रहा है हाल बेहाल।
हो रहा है हाल बेहाल। राव ने कानों मुंदरा पाई।
मुख दे राज-सोमाज, नाथ की ना उपमा कही जाई।
' येह चंपा दई बहन हमारी मुझ को दे मिलाई,
नहीं भूलूंगा अहसान, री बांदी ; मुझ को दे मिलाई,
नहीं भूलूंगा अहसान, री बांदी ; तुझ को राम दोहाई' ।"

"इतनी सुणके बात जभी राणी पे आण सुणाई।"

बांदी

" इस जोगी ने अपने मुख से ऐसी बात सुणाई।"
इतनी सुण राणी चली, नहीं लगाई बार।
जो देखी है आणके, खड़े नाथ दरबार।
खड़े नाथ दरबार ; आणके चरणों सीस निवाया।
लीना रूप पहचान राणी ने, नैनों नीर भराया।

रानी चंपा दई

क्या तुम पे कुछ भीड़ पड़ी है ? क्यूं जोगी बण आया ?
इतनी कहके पड़ी धरण पर, नहीं बोल मुख आया।
हाल बेहाल नहीं सूजी बिसियर डंग लगाया।

रानी चंपा दई

" कौण करे करतार आण सुख म्हां दुख पाया ?"

राजा गोपी चंद

" हे बहिना, सुण लीजे ; मन में रखो धीर।
क्यों मन रुदन लगाउती ? क्यूं सिर फाड़े चीर ?
क्यूं सिर फाड़े चीर ? रुदन कया मन में भारी ?
रोवत जार बजार, नीर नैनों से जारी ?
करम लिखा सो हुआ, मान ले अरज हमारी।
दसरथ मे तज दे प्राण राम बणों बास सिधारा।
ऐ बहना री, क्यूं हुई नादान, रुदन करती दिन राती ?
सुण सुण तेरे बैण मेरी भरआवे छाती।"

रानी चंपा दई

"ऐ भाई सुण लीजीए, हुआ चित उमंग।
नहीं होस तन की रही, उड़ा रूप और रंग। "
उड़ा रूप और रंग, बीरण मेरे, भर भर आवे छाती,
देख देखके रूप तुम्हारा, रही तन की सिद्ध जाती।
वही घड़ी मेरे हाथ न आवे, उस दिन पहचाती।
मुझ बिरहण को दुख है भारी, देख सुरत मर जाती।"

राजा गोपी चंद

रुदन मत कर बावरी ; क्यूं हुई हाल बेहाल ?
दुख सुख है सब करम का, क्यूं फाड़े सिर बाळ ?
क्यूं फाड़े सिर की बाळ, बहन? क्यूं रुदन लगाए ?
तुम समझो मन बीच बीरण कोई नहीं।
है छूठा संसार, बणा सुपने की माया।
छोड़ी ममता प्रीत, हाथ किसी के नहीं आया।
जो धरते हरी ध्यान मुक्त उन की हो जाई।
ये झूठी है प्रीत, नहीं बहन, नहीं भाई।"

रानी चंपा दे

"ऐ भाई सुण लीजे, मन में करो बिचार।
मन धीरज कैसे धरे, रोए जार बजार।
रोए जार बजार ? बीरण मेरे भरा नैन में पाणी।
कठिन जोग ; सधने का नहीं, क्या ले नीसचा, जानी ?"

इतनी कहके मुख राणी का नीकसा भंवर सीलानी।
आप गई बैकुण्ठ धाम को, 'राम, राम', कहे बाणी।

राजा गोपी चंद

गोपी चंद राजा कहे, जोड़ अगाड़ी हाथ।
कागज हो तो मेट दूं ; करम ना मेटे जात।
करम ना मेटे जात, नैन भर भर गोपी चंद रोए।
बहण मेरी बेहाल पड़ी है ; जग में आण डबोए।
जिस दिन से लीया जोग हमें ; नैन नहीं नींद भर सोए।
ऐ प्रभू, क्या करी आणके ? कूक मार मुख रोए।"

कान भिणक गुर के पड़ी, कंवर करे उदास,

छाड़ गोफा जोगी चले, आण खड़े हुए पास।
आण खड़े हुए पास।

जलंधर नाथ

" कंवर, तुझ को बरजे थी माई,
क्यूं थाड़े गिलगीर हुए हो ? हर चाहे, सो हूई।
चलो मढ़ी के पास, ऐ बच्चा, अब क्यूं देर लगाई।
ये झूठा संसार ; जगत में माहीं कोई किसी का, भाई।"

राजा गोपी चंद

"तुम दीन दयाल, हो, लज्जा तुम्हारे हाथ।
ये मेरी बहण जीवाए दो, नहीं मरूं बहण के साथ।
मरूं बहण के साथ ; जोग कण्डक क्यूं कीना ?
नीक दरद नहीं तोए, जगत में अपजस कीना ?
या तू ओट सराप, नहीं जग में मेरा जीना।"
हंसके बचन सुणाउते आण कंवर के पास।

जलंधर नाथ

"जोग जगत जाणे नहीं ; अब क्यूं भए उदास ?
अब क्यूं भए उदास ? रे बच्चा, अब क्यूं सोच लगाओ ?
भज अलख का नाम, रे बच्चा ; मत दिल में घबराओ।"

राजा गोपी चंद

अपणी उंगळी चीर, गुरू जी, हमरा सत रखाओ।
चंपा दई की प्राण फिर घट भीतर आण बसाओ।"

'राम राम' करके उठी दोनों भुजा पसार।

रानी चंपा दई

ऐ बीरण, मिल लीजीए ; अब क्यूं करता बार ?
अब क्यूं करता बार, बीरण ? अब कर मिलणे की तय्यारी।
ऐ गोपी चंद, बीर हमारे, नहीं हूंगी तुम से न्यारी।
गुर का दर्शन कीया है आके, हम ने येह ही बिचारी।
मन की मट गई सोच हमारी, खुशी हुई नर नारी।"

राजा गोपी चंद

" तुम घर राज और पाट है ; हम जोगी तेरे बीर।
मेरे अंग भभूत है, और बिगाड़े तेरा चीर।
ऐ बहिणा री, बिगाड़े तेरा चीर, कहां से फिर मंगावें ?
वही करे तेरा प्यार, वही तुझे न्योत जिमावें।"

रानी चंपा दई

" आग लगो इस चीर को, गेरूं सिर से तार।
फिर, बीरण, तुम से कभी मिलूं ना दूजी बार।
मिलूं ना दूजी बार, बीरण ? मैं तेरी सूरत पे वारी।
तुम्हें दीया उपदेस : मेरी ना मैंनावंती माई।
घर सोळह सौ नार तजे हैं, रुदन करें हैं सारी।
नीक ना रखा मोहे, बीरण ; तैं मुझ बहिनार आज बिसारी।"

राजा गोपी चंद

" बिन साहिब की बंदगी तेरी गत नहीं होवे।
अब यहां से ठैरी नहीं, फिर मिलण नहीं होवे।
मिलण नहीं होवे, बहिण : मानो बचन हमारा।
जुं गोपी चंद मिला, बहण, मिलीयो जग संसारा।
बहिण सेती भाई मिला है बहोत कीया हित पियारा।"
इतनी कहके चले नाथ जी, नैन नीर चूए नियारा,
अंग बेढंग कीया सब तन का, जब महलों से पग धारा।

राजा गोपी चंद

" हाथ जोड़के कहूं, गुरू, मैं, कर मेरा नसतारा।"

जलंधर नाथ

" ऐ बच्चा, येहां से चलें, छोड़ जगत से प्रीत।
येहां अपणा कोई है नहीं, झूठी जग की प्रीत।
झूठी जग की प्रीत, रे बच्चा ; मानो कही हमारी।
ऐ, गंगा अस्नान करेंगे : जल्दी करो तय्यारी।
ज्ञान तत की सेली लेके वही तेरे गळ डारी।
चलो भेख का दर्शन कर लो : हो काया अमर तुम्हारी।"

***



रामकिशन ब्यास
(11 अक्तूबर 1925 - 2 अगस्त, 2003)

टेक: घग्गर यमुना बीच का बणखण्ड बहुत पुराणा था।
हिमाचल से राजस्थान तक हर्या सिमाणा था।।

कली: ब्रह्मव्रत कहया ब्रह्मा जी नै वेदी रचाई थी
सरस्वती की मारकण्डेय नै करी बड़ाई थी
इसीलिए आ ऋषियों ने यहां पर कुटी बणाई थी
रचना कर ऋगवेद की यहां महीमा गाई थी
शिव, शारदा, नारद से चल्या नाचणा गाणा था।।

कली: भारत के बाशिंदे द्रविड़ कौल बताए थे
मध्य एशिया से आगे चल हिंद में आए थे
पेहवा, फल्गु, कुरुक्षेत्र में डेरे लाए थे
कृष्ण जी ने यहां गीता उपदेश सुणाए थे
जब आर्यों ने इसका नाम धर्या हरियाणा था।।

कली: नारनौल का गुजराती ब्राह्मण बिहारी लाल था
सांग शुरू किया सन् 1206 का साल था
नाचण गाण मैं चेल्ला चेतन करै कमाल था
सौहनी, सवैया, ठुमरी, सौरठ गावै ख्याल था
कुतुबुदीनऐबक के घर उसका आणा जाणा था।।

कली: 1658 में सब गावणिये हटा दिए
औरंगजेब ने सांग और नाटक, मुजरे मिटा दिए
शतनाली में गाए शब्द सतनामी पिटा दिए
मन्दिर, शिवाले, चोटी और जनेऊ कटा दिए
औरंगजेब नै जनता साथ कर्या धिंगताणा था।।

कली: सन् 1709 में दुबारा सांग फेर छेडया
बालमुकुंद के चेल्ले गिरधर नै बान्धया बेड़ा
सिबकौर शिष्य का जमना नगर के पास कह्या खेड़ा
चेल्ला बण्या किशनलाल भाट का फिर लाग्या गेड़ा
गांव की चौपाल में भी नही मिलै ठिकाणा था।।

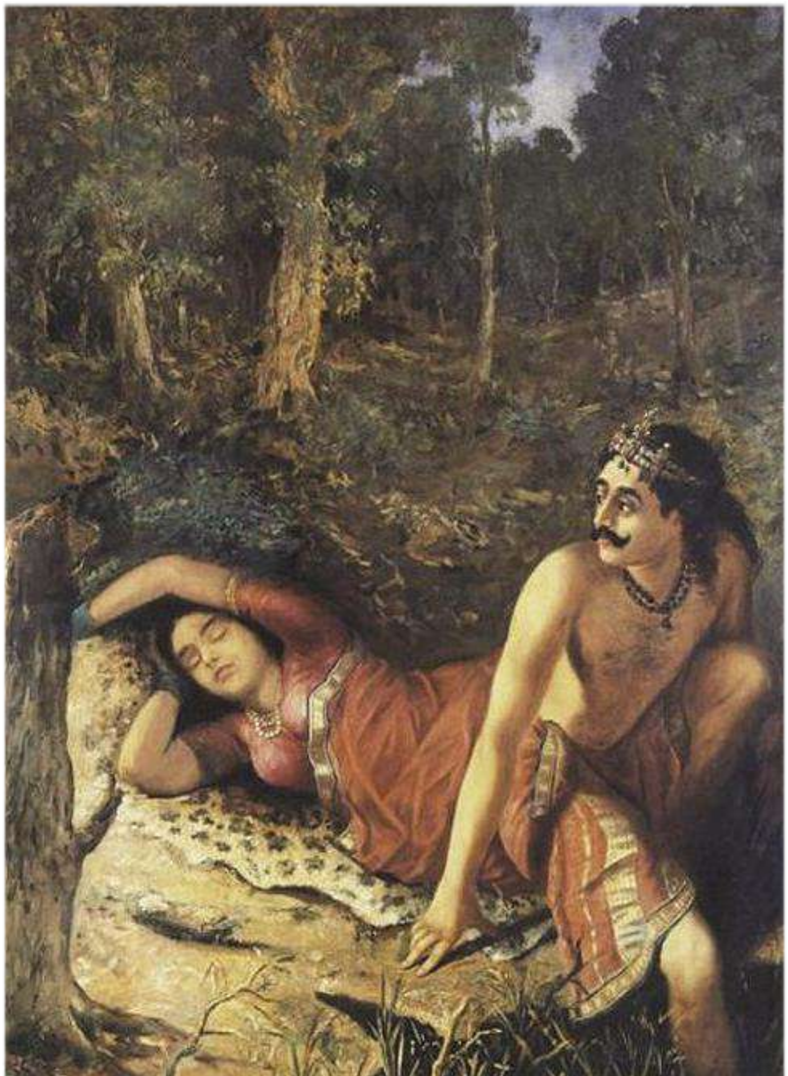
कली: एक राजा एक राणी बड़ी बहस लगावैं थे
अंगिया पहर घाघरी घोड़ा नाच दिखावैं थे
देश, चमौला, सारंगी, ढ़ोलक खड़े बजावैं थे
गांव पास कई मिलकै रात नै सांग करावैं थे
मशाल जला नाई नै चान्दणा पड़ै दिखाणा था।।

कली: 190 साल बाद फिर दीपचन्द आगे
तीन नाचणिये चार साजिन्दे खुद राखण लागे
तख्त बिछा साजिन्दे बिठा शामियाने तणवागे
छोड़ चमौले तीन बोल के काफिये गागे
राय साहब दीपचन्द सांगी सबसे स्याणा था।।

कली: हरदेवा अर चतरू, बाजे भक्त कुहागे थे
कमीज घाघरी पैहरी अंगिया छुटवागे थे।।
एक टेक की रागणी दश काफिये गागे थे
दोहरी टेक की रागणी लख्मीचन्द चलागे थे।।
तीन सांगियों ने अपणा न्यारा ढंग चलाणा था।।

कली: मांगे, व्यास, धनपत नै गढ पै सलाह मिलाई थी
घाघरी छोड़ चुन्नी जम्फर सलवार पहनाई थी।।
पांच नचाए माईक ज्यूं दे आवाज सुणाई थी।।
व्यास की प्रशनोत्तरी की न्यारी कविताई थी।।
हरियाणे मैं सांगों का यो हाल सुनाणा था

कली: हिस्टरी टीचर दयाल सिंह लाहौर मैं खास था
वेद शास्त्र से हिन्द का लिखया इतिहास था
इतिहास सांग का दादा गुरु शिवदत्त के पास था
16 करोड़ करया चन्दा नारनौंदिया व्यास था
गुरु माईराम की दया से नाम देश में पाणा था।।



(चित्रः राजा रवि वर्मा)

स्वांग राजा नल का

(अंबाला जिले की जगाधरी तहसील में वार्षिक तौर पर जिस रूप में प्रस्तुत किया गया)

(यह कविता स्वांग है जैसा कि पहले विवरण दिया है और कमोबेश उसी तरह से इनको प्रस्तुत किया है या गाया है । नल और दमयंती की कथा को संस्कृत से अनेक बार संपादित और अनुदित की है कि यहां विशेष स्पष्टीकरण देने की जरूरत है।

(नल और दमयंती की कहानी इस प्रकार है । राजा नल सपने में दमन को देखता है और उसके प्रेम में पड़ जाता है और इसी तरह का सपना दमन को आता है । उसकी दाई, या ... और उसके पिता बदर (विदर्भ) के राजा उसे नल के साथ प्रेम में पड़ने से मना करते हैं । इसके बाद नल और दमन के बीच हंस संदेशवाहक बनता है ।अन्ततः उसके

पिता उनको अलग करने को व्यर्थ समझता है तो घर पर उनकी शादी कर देता है । नल उसे अपने देश ले जाता है और अपने छोटे भाई से जुए में समस्त संपति हार जाता है । वह दोनों को जंगल में भेज देता है । जंगल में भोजन के लिए पक्षी पकड़ने के प्रयास में अपना पहनने वस्त्र गंवा देता है और उसे पकड़ने में असफल रहता है । इस के बाद वह दमन को खो देता है और सांप के काटने से पागल हो जाता है और रतबरण (अयोध्या के ऋतुपर्ण) देश में पहुंच जाता है । इसके बाद ब्राह्मणों द्वारा उनको खोजा जाता है और अन्ततः नल और दमन एक हो जाते हैं)

स्वांग राजा नल का

जगत जोत ज्वालामुखी, धरते तेरा ध्यान।
किरपा अपणी कीजीयो; करो छंद का ज्ञान।

भवानी, मन इच्छा बर पाऊं।
करो बुद्ध परगास, सिमरके नल का स्वांग बणाऊं

हाथ जोड़ आधीन होवेगी, चरणों सीस निवाऊं।
मैं तुम्हारी आधीन, मातजी ; मन इच्छा भर पाऊं।

हे माता री, मैं मूर्ख हूं, मंद अक्ल मुझ को है थोड़ी।
करो किरपा जग, मात, सरण मैं लेनी तोरी।
मैं लिया हूं सरण, भुजा तुम पकड़ो मोरी।
कहते बालमुकंद, हाथ तुम्हारी है डोरी।

मुकताल

अरी सारद महारानी,
तू है चार जुग में जानी,
जिस के बैठी कंठ
बहिस्त की उस से निशानी।

गुरू

"मन की दुगधा त्याग दे ; सुणो हमारी बात,
इस चिन्ता को दूर कर : क्या सोचे दिन रात ?
दुखी मैं जग में देखी सारी,
नल राजा पर बिपत पड़ी ; मैं तुझ से सुणाऊं, पियारी ?
हैं साथ घोड़ा और हाथी, हो गई सब से तय्यारी।
तेरे संग तो चार बीर, जिन्होंने जरासंध से मारे।
ऐ राजा जी, नल राजा महाराज धर्म का करणेहारा।
लीया जूएं में जीत, राज से बाहर निकाळा :
गीया बणों के बीच, त्यागके सब परवारा।
दमवंती थी साथ, हुआ फिर उस से नियारा।"

जुधिष्टर

'सुणो बिप्र गुरदेओजी, मैं सब लीया बिचार।
कहो बात नल भूप की, मुंह से करो बिस्तार।"

गुरू

"सुणो, मन अब चित लाके।
कहूं नल राजा की बिथा, दुखी हूआ बण मैं जाके,
दमवंती थी संग, कहूं तुम को चित लाके।
क्यूं सोचो दिन रात ? कहूं तुम को समझाके।
खेलो चौपड़ सार सत की बाजी लाके
येह चौपड़ का खेल, डार पांसा चित लाके।"

पहली सखी

"निखाद देश के बीच में बीर सेन इक भूप।
ता के घर नल पुत्र है कामदेओ का रूप :
कामदेओ का रूप बिराजे, अध-बुद्ध शोभा पाए।
चौपड़ खेल बहोत से जाणे, रथ बिधया चराई।
शोभा कहूं कहां तक ? मू पर कही ना जाए।
नल राजा सा हूआ, ना होगा, तीन लोक के माहीं।
ऐ राजा जी, सौ राजा के बीच मानो कोई चंद-राजे :

सूर –बीर, बलवंत, शेर जूं रण में गाजे,
पढ़ा बेद पुराण, सत का पासणहारा :
राजा इंदर समान सभा के बीच निहारा।"

दूसरी सखी

" किस राजा के बाग में हो रही अजब बहार ?
आम, अंजीर, अंगूर, सब नींबू, सेऊ, अनार,
बाग में खिल रही खूब चंबेली।
मरवा मोहन, मदन फूल, और खिल रही अजब चंबेली
हंस रोज चुगणे आये तहां मिल-मिल दाड़ा केली :
रोज बाग में सैर करे राणी और संग सहेली।
किस बाग में हंस चुगणे को आए?
लीए राव ने देख तुरत पकड़ण को धावे,
देणे मोती गेर हंस जब चुगणे लागे,
लीया हंस इक पकड़, और हंस सब भागे।"

हंस

" राजा ना मारीए, हंस हमारा नाम,
देखत म्हं छोटे लगें, बड़े संवार ले काम।
बड़े संवार ले काम, और, जी, सच बात बताऊं।
दमवंती इक राणी ; कहीए, तुम को उस से मिलाऊं।
जल्दी मुझ को छोड़ो, राजा, उस रानी पे जाऊं।
तुझ बिन नहीं और को ब्याहे, ऐसी बात सुणाऊं।
ऐ राजा जी, तीन लोक के बीच नहीं कोई ऐसी राणी।
चले हंस की चाल ; कहे मुख इमरत बानी ;
मिरग नैनी ; मध भरी ; चंदरमां मुख की जोती ;
ना इन्दरासन बीच नाग कन्यां की जोती।"

राजा नल

" मैं तुझ को मारूं नहीं, मन में धर ले धीर।
सुण, रे हंसा बावरे ; क्यूं होता दिलगीर ?
क्यूं होता दिलगीर, पियारे ? उस का भेद बता दे।
जिस राजे की है वो बेटी, उस का दर्शन दिखा दे।
शोभा करे बड़ी मुख सेती ; उस का नाम बता दे।
भूलूं नहीं अहसान, हंस रे, जो तू मुझे मिला दे।
हंस रे, जा पियारी के पास, मेरा सब हाल सुणाओ।
दमवंती के पास आज हम को ले जाओ।
तैं सब बरणन करा, सुनत जीऊरा घबराया।
दीजीए दर्शन दिखाए ; तुझे येह ही समझाया।"

हंस

" राजा देओ निखाद में भीम नाम बखियात :
सूरबीर, धर्मात्मा, दमवन्ती का तात।
बात मैं कब लग करूं बखियानी ?
उस पियारी के बदन बीच में भरकर तोली जवानी
उस को चाहे रखे दयोता, धर्मराजे ज्ञानी?
चांद किरण से जोती, राणी ऐसी रूप दिवानी।
राजा जी, सुंदर मूरत, बणी बीच महलों के सोही,
हंस गुण, मुख चंद, रिखी जन मन को मोही :
देओ, दैत, भूपाल, नहीं घर ऐसी नारी।
ना मैं कानों सुणी, ना दूजी मैं निहारी।"

राजा नल

"अरे हंस, वहां ले चलो, जहां है सुंदर नार।
उड़कर, छिन में जा मिलूं, नहीं पंख दीए करतार।

रागनी

हंस, उड़के अभी जाओ।
खबर पियारी के तुम लाओ।
जरा मत देर अब लाओ ;
उस से जाके यह समझाओ :
वोह सुंदर मुझ से, पियारी,
बसर गई सुध सब मारी।
पियाला जहर का पीऊं :
बिना पियारी नहीं जीऊं।

हंस

"उस पियारी के रूप का कब लग करें बखानी?
रिखी, मुनी और दयोता देख डिगी हैं ध्यानी ।
कंवल मुख चन्दर बिराजे ;
सब सखियों के बीच नार बेटी वही साजे ;
गळ मोतियों के माल ; नाक नाक बेसर सोहे ;

शीश फूल सब देख, सब मन को मोहे ;
बिच्छवे और पाजेब जाणो राणबंदी गहणा ;
देखत सब बसे हुए, बणे ज्यूं मिरग के नैना ।"

राजा नल

" अरे, हंस, जाओ, तुम्हें मैं तो दीया उड़ाए।
हाथ जोड़ तुम से कहूं, मिलो डार में जाए।
अभी बेदरभैन-नगर में जाओ :
उस पियारी के पास जाएके मेरा हाल बताओ,
हाय-हाय-कर प्राण तजूं ; नहीं मत ना देर लगाओ।
जो तुम्हारा बस चले, हंस रे, पास मेरे ले आओ।"

मुकताल

हंस ने ली उडारी
गीया जहां हैगी पियारी,
" ना निंद्रा, नहीं भूख,
सोच मुझ को है भारी।"

हंस

" सुन राणी, इस जगत में, होर ना तुम सी नारी :
मुल्क, मुल्क में हम फिरें, सब देखा संसार।
जगत में और नहीं राणी ऐसी,
इंदर लोक की नार उर्बसी सो नहीं है तेरी जैसी।
चांद किरण राजा की सूरत ना मन मैंने भाई।
नल राजा सा रूप किसी से मैं जग में देखा नहीं।
ऐ राणीजी, इस दुनिया के बीच सभी पे जोबन आया ;
और किसी का रूप मेरे मन को नहीं भाया।
तेरा जैसा रूप आज नल ऊपर छाया :
उस को ले तू बियाहे, तुम्हें मैं येह बर सुणाया।"

रानी दमवंती

" सुण राजा के रूप को दिल तो गीया ले आए ;
बिरा अगन उत पत हूई मन मेरे के माहीं।
हंस, अब सुणके बचन तुम्हारे,
कौण देस का राजा नल है ? सच्ची बात बता, रे ।
तैं ने आज बिरा की फांसी दीए गळे में, पियारे।
अब तो देर करे मत, हंसा, नल राजा पे जा, रे।
हंस रे, उस राजा पे जाईयो, अरज कहीए येह मेरी :
जनम-जनम येह बात कभी भूलूं नहीं तेरी।
येह ही बात तुम कहो पास राजा के जाए :
'तुझे सुएम्बर बीच बरेगी रानी आई' ।"

हंस

" सुंदर देस निकाध है बीर सेन नृप नाम :
सूरबीर बल माहीं सब के सारे काम :
सब के सारे काम ; पुत्र उस का नल राजा।
सुंदर राज समाज ; बजें छत्तीस बाजा।
सिर पर मुकट बीराज, गळे मोतीं की माळा :
आभूखण सिंगार, सीस पर सुरख दुशाला।
कामरूप औतार, कहां लग उपमा गाऊं ?
ना ऐसा कोई भूप, तुझे, राणी, समझाऊं।"

रानी दमवंती

" अरे हंस, जल्दी जाओ, जरा ना लाओ देर।
नल राजा का नाम सुण लीए, बिरा ने घेर।"

रागणी

" घेर बिरा ने लीए, पियारे,
खबर जल्दी से जा ला, रे ।
बरूं नल राव को, हंसा :
नहीं इस मन में कुछ संसा।
सुणी तारीफ मैं, पियारी,
मिलण अंबलाख है मारी।"

सखी

" दिन दिन पीळी हो गई, सुणिए, राजकंवर।
क्या तेरे तन सोच है ? कहो मुख बचन उचार,
कहो मुख बचन उचार ; कौन दुख ने तू घेरी ?
नित उठ रहे उदास, जरा धरती नहीं सेरी।
क्या उपजा मन खियाल ? हाल तू कह दे सारा।
कह दे मन की बात : कहा येह मान हमारा ।"

चित्र : राजा रवि वर्मा



रानी दमवंती

"अरी सखी, मैं क्या कहूं अपणी की बात ?
ना जाणूं मुझ से क्या हुआ ; सोच रही दिन रात।
सखी, मेरी भूख पियास उड़ गई सारी :
दिन नहीं चैन ; नैन नहीं निंद्रा ; सोच मुझे थी भारी ;
सूकत बदन ; अगिन तन बियापी ; होस नहीं आती मुझ को ;
हाल-बेहाल हुआ, सजनी ; मैं क्या समझाऊंगी तुझ को ? "

सखी

"महाराज, तुम्हारी सुतया, नित उठ रहत उदास ;
हमसे कुछ बोली नहीं, ना जीवण की आस।
बहुत बेहाल है कंवारी।
पूछो उस को जाए ; अरज येह बात हमारी।
भोजन दीना तियाग, रहे नहीं जल की पियासा।
फिर उस की, महाराज, कौन जीवण की आसा ? "

राजा भीम सेन

" सुण, बांदी, तुम्हारे बचन हम ने लीए बिचार ;
आज सुयम्बर मैं रचूं : राम उतारे पार ।
खुशी होगी दमवंती म्हारी। "

येह ही बचन सुणके बांदी, सब खुशी हुए नर नारी।

राजा भीम सेन

" कल को दूत भेजके, सारी कर दूं अभी तय्यारी।
होर काम सो पीछे करणा, कहूं खुशी येक ही म्हारी।"

"ए, चारण, जल्दी जाओ पत्री लेकर हाथ :
सब राजों से जाएके, येह ही कहो तुम बात।
जाएके पत्री खोल दिखाणा।
दमवंती का रचा सुयम्बर, सब से येह कह आणा ।
पूरब, पच्छम ओ दक्खन, उत्तर, चार दसा फिराणा।
रचा सुयम्बर सब राजों का कुल को येहां से आणा।
चारण, जल्दी जाणा,
जरा नहीं देर लगाणा।
सब राजों को संग
अपणे लेके आणा।"

चारण भाट

"हुकम दिया सोई करूं, जाउंणा प्रभात।
चार दसा के बीच मैं पहुंचूं रातों रात :
सभी राजों को जाए सुणाऊं।
दमवंती का रचा सुयम्बर पत्री खोल दिखाऊं।
पूरब, पच्छम, दक्खन, उत्तर, चार दसा फिरआऊं ।
करके खबर सभी राजों को पास तुम्हारे आऊं।"

महलों से नल चल पड़े, सुणे दूत के बैन,
पियारी के देखे बिना नेक पड़े नहीं चैन।

इंदर बात नारद को समझावे

इंदर

"तुम हो आप दय्या के सागर, बेड़ा लंघावे।
मन इच्छा पूरण हो ; मेरी जी येह भेद बतावे।
अइ राजा, सब कहां चले ? मन की सुना मेरा मिटावे।"

नारद

" बिदर नगर के बीच में भीम सेन बिखात।
बड़ा बली वो राव है, दमवंती का तात ।
दमवंती का तात है, उस की सज रही असवारी ।
बड़े-बड़े जोद्धा आए हैं, फौजां नियारी नियारी।
सुणो, इंदर महाराज, कहे मैं तुम्हें हिसस सारी :
बीड़ गई बागों के अंदर, सुंदर सजी सवारी।"

इंदर

"दमवंती के वास्ते सब आए येह भूप।
अब उसका बरणन करो, हम से अधिक सरूप :
हम से अधिक सरूप करो तुम बरणन सारे।
येह सुणे की बात, येह ही अभिलाख हमारे।
तुम, नारद, रिखे राई, सभी घट-घट की जाणो :
हाथ जोड़कर कहूं, हमें सब बात बखानो।"

नारद

"दमवंती के रूप का होता नहीं बखान :
चंदर कला मुख, नैन मिरग, राज-सुतया को जाण।
नहीं उपमा हम से कही जाए।
उस प्यारी के बीच सुयम्बर चलो आप हमराई।
ना कोई तेरे सुरग-लोक में ऐसी नार बणाई।
बड़े भाग जग में उस के, जो उस को ले बियाही! "

इंदर

" सुणकर तुम्हारी बात को अभी चलूं तत-काल ।
सुणकर तुम्हारी बात को हो गिआ हाल बे-हाल।
काम अब मेरे तन में छाया।
जाके दरसन करूं जो उस के, जब सीळ हो काया।
धर्मराज, अगनी पे जाऊं, दिल में उठाऊं माया।
साथ बरण को लेके अपणी करूंगा मन का चाया।"

" इक काम मेरा करो, सुणो, राव नल भूप।
चार दयोता आते बली, जोग कला धर रूप।
राव, तुम दमवंती पे जाओ :
हमारे दूत बणो, महाराजा, उस को जा समझाओ ;
इंदर, धर्म, जल, अगनी का तुम जाके नाम बताओ।
कोई दयोता बर ले इन में से, ऐसी जाए सुणाओ।
राव, तुम जल्दी जाओ,
उसी राणी से कहो :
अपणा मकसद छोड़,
धर्ण अपणे पे रहो ।"

राजा नल

" आप कह, सोई करूं : सुणो, इंदर महाराज :
तुम हो चारों दयोता, करो शकल का काज ।"

रागनी

" तुम हीं जगदीस, जुग ध्यानी,
तुम्हारी बात मैं मानी।
महल किस तरह मैं जाऊं ?
बड़ण वहां कौण बिध पाऊं ?
रहें डयोढ़ी पे रखवाळी ;
जाएं बिध कौण से, पियारी ?"

इंदर

"किरपा हमारी से तुझे कोई ना देखे नर नार,
जाओ महल के बीच में, ऐ नल राजकंवार,
महल में ना कोई तुम्हें पहछाणे ।
देखें नहीं और कोई वहां से, इक दमवंती जाणी।
अब ना देर करे, राजाजी, बचन हमारा माने,
चार देओ हम रहें सुरग में चारों बेद बखाने।"

राजा आए महल में नारद के दरबान।
खबर किसी को ना हुई, किरपा करी भगवान।
देखकर दमवंती झट आई ;
कहे दमवंती :

रानी दमवंती

" कौण तू हैगा ? दे हम को बतलाए।
कहां से आया ? कहां जाएगा ? होश तुझे नाहीं ?
मेरे महल में आण, दीवाने, नाहक जान गंवावे।"

राजा नल

" राणीजी, सुण लीजीए, पती बिरता तू है नाम ।
मैं दयोतों का दूत हूं, नल राजा है नाम ।"

रागनी

" नाम नल राजा है मेरा,
कीया मैं महल में फेरा ।
धर्मराजा, बरण, अगनी,
जो चौथा इंदर है, राणी,
मुझे भेजा तुम्हारे पास ।
कहूं मैं बात, उन मानी,
उन्हों ने जो कहा मुझ को ।
येह सुणकर, चित में धर ले :
उन हीं चारों के म्हां से
इक तू दयोता बर ले ।"

रानी दमवंती

" मैं तो तुम्हारी नार हूं, तुम हमरी भरतार ।
मेरा तो येही नेम है, बरवां नल राजकंवार ।"

रागनी

" नेम मन म्हां ये ही धारी।
तुम हीं प्राण की पियारी।
तुझे जो त्यागके जाऊं, -
बचन सत के मैं समझाऊं, -
नही इंदर को बरूं जाके।
मरूंगी जहर बिस खाके।
ना जिऊंगी, सुणो, साईं ;
प्राण छिन में तजूं माहीं।"

राजा नल

"सुरग लोक के दयोता पदमी इंदर समान।
क्यूं उन को बरती नहीं ? तू हो गई नादान।
तू हो गई बाओरी, बरण सरीखा नहीं दूजा।
इंदर समान नहीं कोई राजा, सब करें उन को पूजा।
धर्मराज, अगनी को बर ले ; चारों दयोता है भारी।
मैं तो निर मनुख जात हूं : क्यूं तू भूल गई, पियारी ? "

रानी दमवंती

"पती बिरता जो नार है, माने कुल की आण।
मैं तो तुम्हारी दास हूं , तुम मेरे भगवान।
तुम मेरे भगवान, पिया ; मैं पती बिरता हूं नारी,
धर्म गीआ, क्या रह गीआ ? राजा, हो जग में उन की हारी।
जब से बात कही हंसा ने, जब से प्रीत लगी मारी,
जो मुझ को तुम नाह बरो, तो प्राण तजूं छिन में पियारी ।"

राजा नल

"वो चारो हैं दयोता, तीन लोक के नाथ।
तुम उन को बर लो ; अभी मान हमारी बात।
मान हमारी बात, पियारी ; येह है प्रेम कहाणी।
इंदर राजा बियाह करवाओ, तो होगी इंदराणी।
ऐसा राव और नहीं दूजा ; तै मन म्हां क्या जाणे ?
तू उस को बर ले, राणी, हो जागी पट-राणी।"

रानी दमवंती

" पट-राणी तो हो गई इक पिया से प्रेम।
पती बिरता जो नार है, उन का येह है नेम।
उन के येह है नेम, पियारी, सत धर्म मैं ना हारूं।
बीच सुयम्बर आज तुम्हारी फूल-माळ गळे में डारूं।
इक बचन तुम से हुआ मेरा, अब दूजा क्या पुरख बरूं ?
जो तुम तियाग जाओगे मुझ को, खाए कटारा आज मरूं ।"

राजा नल

" सुरग लोक का बास हो, मन में करो बिचार।
तुम मन में येह सोच लो, सुंदर राजकंवार।
सुंदर राजकंवार, तुम्हें हो चितर सुगर, सुण ले, नारी।
इंदर राज से बियाह करवाओ, येह ही बात मानो हमारी।
सुंदर रूप बणा है उस का, गळ सूहा, मोती माळा,
येह ही बात तुम करो, पियारी, पीयो प्रेम रस का पियाला।"

रानी दमवंती

" प्रेम नेम उन का रहे, जिन की धुर से पीत।
प्रेम कहाणी कठन है, कोई बिरला जाणे रीत।"

रागणी

" रीत बिरला कोई जाणे"।
बचन राजा नहीं माने।
" सील गुण रूप मैं नारी,
धर्म को ना तजूं, पियारी।
तुम हीं महाराज हो म्हारी।
बचन मैंने सहे थारे,
सुणो, मैं दास हूं थारी,
इक पल ना रहूं नियारी।"

राजा नल

" राणी, तुम चतर बणो, मत ना बणो नादान ।
चार देओ को तुम बरो, कहा हमारा मान ।
कहा हमारा मान, तुझे मैं बहुत बार समझाए ।
मेरा कहा मानो तुम, राणी, अच्छी बात सुणाई ।
सुण, राणी, ज्ञान हमारी इक समझ नहीं आई ।
दिल का सोच दूर कर, पियारी ; अक्ल कहां गंवाई ?"

रानी दमवंती

" बरूं ना तुम बिन और को ; मरूं आज आप घात ।
सती हूं, साळ रचूं : चलूं तुम्हारे साथ ।
चलूं तुम्हारे साथ, प्राण छिन में खो डारूं।
जो अब के येह कहो, कटारी तन में मारूं।
तुम होके गुणमान, बात येह कौन सुणाई ?
मैं तो तुम बर लीए, जाण के कंथ गुंसाई ।

राजा नल

" हाथ जोड़ बिनती करूं ; सुणो, इंदर महाराज।
दमवंती पे मैं गीआ आज आप के काज।
गीआ आप के काज आज ; येह सुणो हमारी बाणी ।
बहुत बार उस को समझाय, नहीं मानती राणी ।
वा तो कहे, 'बरूंगी नल को,' हो रही इश्क दीवानी।
समझ बिचार, सुणो, महाराजा, येह तू सच जानी।"

इंदर

" सब दयोता. येह ही करो : धरो नल का रूप।
फिर राणी किस को बरे हमारा देख सरूप ?
हमरा देख सरूप। "

सभी ने येह मन बीच बिचारे :
'चलो सुयम्बर बीच जहां हैगी दमवंती पियारी,
बहुत बार नल ने समझाए, ना मानी वोह नारी।
उस की सत डिगाए चलेंगे।' येह ही बात मन धारी।
जब राजा भीम ने देणी सभा लगाय,
सखी भेजकर महल में दमवंती लीए बुलाए।
दमवंती लीए बुलाए, लीए फिर फूल-माळ कराए।
सब देवत नल रूप देखके, जब मन में घबराई।
बीच सुयम्बर फिरे देखती : 'महमान कहीं जाए ?
देखा सभा का रंग नार ने दीए हरी बुलाए।'

रानी दमवंती

" ऐ प्रभू दीनानाथ, अब सुणिए मेरी पुकार।
इस संघट में सुख करो, तीन लोक करतार।"

रागनी

"प्रभूजी, सिद्ध लीजीयो मेरी,
तेरी मैं चरण की चेरी।
देओ नल रूप सब धारा :
मेरा सत राख , करतारा ।

बरूं नल भूप को, सामी ;
मेरा सत राख तुम, साईं ।
तजूं मैं प्राण महलों में ।
मेरा सत सीळ हो पूरा । ”

धर्मराज

“सोच करे मत, बावरी, कहा हमारा मान ।
जा, तुझ को येह बर दीया, मिले भूप सुरज्ञान ।
मिले भूप सुरज्ञान, नाम नल से तुम बचन उचारो ।
उस राजा के गळे बीच तुम फूल-माळ अब डारो ।
सदा सील तेरा रहे जग में, सत कभी नहीं हारो ।
मन आनंद करो तुम, पियारी ; मन में येह ही बिचारो । ”

रानी दमवंती

“सुणके तुम्हारी बात माळा लीए उठाई ।
अब डालूं गळ बीच में नल राजा के जाए ।”

रागनी

“पिया गळ माळ मैं डारूं,
जो तन मन आज सब वारूं ।”
गळे में डारके माळा,
खुशी होके पीया पियाला ।
लगे बाजे जभी बजणे,
लगे चिंता सगल तजणे ।
“बुलाओ बिपर, तुम राजा,
हूए मन के पूर्ण काजा ।”

राजा नल

“हम को रुखसत दीजीए, भीम सेन महाराज ।
सब कारण हर ने करे ; रहे हमारी लाज । ”



रागनी

“लाज हर ने राख लीए म्हारी ।
करें हम नगर की तय्यारी ।
देर कीजे नहीं, राजा :
करो हमरा येह ही काजा ।”
सुएम्बर सब हुआ सुंदर,
बणे जहां भूप के मंदर ।
“बिदा दीजो हमें राजा ;
करे हर ने मेरी काजा । ”

राजा भीम सेन

“खूब बात तुम ने कही, हमें कीया परवान ।
अब तुम्हारी तय्यारी करूं, हे निरप चितर सुजान ।
हे निरप चितर सुजान, करो तुम अभी चलण की तय्यारी ।
जो कुछ बात कही है तुम ने, मान लीए मैं थारी ।
सिंगारूं फौजां, रथ, हाथी ; संग करूंगा थारी ।
येह रथ आज सिंगार, कीया मैं खातिर सिरफ तुम्हारी ।”

रानी दमवंती

“माता, मुझे ना भूलीए, लीजीए बेग बुलाए ।

वोह दिन कब फिर होवेगा, मिलूं तुम्हें मैं आए ?"

रागनी

" मिलण मेरा कौण बिध होवे ?
नैन भर भर सखी रोवे ।
मिलूंगी फिर कब, माई ?
लीजीए बेग बुलवाए।
फिर तुम्हें कहां मिलूं, बहिना ?
मेरा जल से भरा नैना ।"

माता रानी दमवंती की

"सुणो, कंवर, मेरी लाडली, तुझ बिन महल अंधेर ।
जल्दी बुलाऊं तुझे, ना करणे की देर ।
इक अरज मैं करूं, बचन मेरा सुण लीजे ।
सास सुसर की टहल, पती की आज्ञा कीजे ;
राखीए कुल की लाज ; तुझे येह ही समझाऊं ।
जाओ सास घर, लाल, तेरे पे वारी जाऊं ।
बैठो रथ के बीच, मती ना देर लगाओ ।
कुशल खेम सो, लाल, सास घर जाओ ।"
कूंच कीया राजा चले, दीना रथ हकवाए ।
महल राजा चले, आए नगर के माहीं :
आए नगर के माहीं ; नगर में घर घर पड़ी बधाई ।
मंदर से सब नारी मिलकर साज आरता ले आई ।
राजा आए महल बीच में सुंदर सेज बिछाई ।
गणपत किरपा करे ; आणके राज करे चित लाए ।

कलजुग

"किरपा, नाथ नारद, राखीए ; कहां गए थे आज ?
सब हम से बरणन करो, ऐ गुणी संद समाज।
ऐ गुणी संद समाज, हमें कहो सच मुख बाणी।
चार दयोता मिलके तुम तो कहां गए थे, ज्ञानी ?
ये इच्छा पूछण की मेरी ; कहो, बात उन मानी।
हाथ जोड़के मैं पूछूं हूं, मुख से कहो बखानी।"

इंदर

"भीम सेन महाराज ने रचा सुएम्बर आण :
दमवंती के वास्ते कीए बड़े समान ।
कीए बड़े समान, अजी, हम उसी देखके आए ।
चारों देओ गए वहां से, तुझ को बचन सुणाई ।
नल राजा बियाह ले गए, उस को सुंदर भवन बणाए ।
बहुत दान राजा ने दीना, बिरहम भोज करवाए ।"

कलजुग

"चार दयोता छोड़के पुरख बरा जो नार,
उस को चाहीये डंड ; कुछ हमें लीए बिचार ।
हम ने लाए बिचार, उन्हें कुछ डंड की करूं तय्यारी ।
खोटा काम कीया नारी ने, मन में नहीं बिचारी ।
बड़ा दुख दूंगा मैं उन को, येह अबलाख हमारी ।
नल राजा से बियाह करा, जिन बात ना भूजी थारी ।"

इंदर

"जब हम ने आज्ञा दी, तब डारी गळ माल ।
दीन राजा धार्मक हैं, बोलो बचन संभाळ ।
बोलो बचन संभाळ, उन्हें कुछ डंड नहीं देणा भाई ।
वे राजा गुणमान बड़े हैं, ये तुम को मैं समझाई ।
जब उस को हम से दीए आज्ञा, जब राजा नल राज बरे।
उन को डंड कभी नहीं होगा ; नहीं बचन हमारे बुझ करे।"
जब कळजुग वहां से चले, आया द्वापर पास ।

कलजुग

"इक काम मेरा करो, येह ही मुझ से बिसवास।
येह ही मुझ से बिसबास ; चलो तुम नल राजा नगरी माहीं ।
उस का नाम बखात नल का है, येह ही बात मैं समझाई :
तुम पुस्कर के बड़ो पेट में ; मैं नल पे जाऊं, भाई ।"

द्वापर गीया पेट में उस के ; ना माया प्रभू की पाई ।
सील, धर्म और ज्ञान तजा ना, ना कळजुग पर जोर पड़ा ।
बारां बरस कळजुग को हो गए, बहुत अपणा जोर करा ।
इक दिन राजा बैठ पंलग पे, धोए पैर सोचे नाहीं ।
दाऊ लगा उस दिन कळजुग का, बास अंदर कीना जाए ।
बड़त सार जब पेट के अंदर, तुरत राव की बिध हरी ।
चौपड़ सार मंगाया राव ने ; जब खेलण की तय्यारी करी ।

राजा नल

"ऐ भाई पुस्कर, मेरे मन में उठे बिचार ।
ये ही बात तुम से कहूं, खेलो चौपड़ सार ।
खेलो चौपड़ सार, पियारी ; येह ही बात मन भाई ।
जीत हार की बाजी रख दो, चौपुड़ां बिछाई ।
येह सोळह हैं दाऊ हमारे ; तुझ को दीया दिखाई ।
चौपड़ खेल देर नहीं कीजे, येह ही बात समझाई ।"

पुस्कर

"तुम तो हमारे भ्रात हो, जाणूं पिता समान ।
आप बचन मुझ को कीया, सोई करूं परवान ।
सोई करूं परवान, हाथ पाशा में ठाया ।
लेकर गुरू का नाम, जमीन पर आप ठराया ।
सतराह अठाराह बीच जीत लीए बाजी थारी ।
लग बाजी पे डारी जीत अब होवण हर हमारी ।"

राजा नल

"दूजी बाजी पे लगा माळ खिजाना आज ।
फिर गेरो फांसा हाथ से, फिर लगूंगा राज ।
फिर लगूंगा राज, खिजाना लगूं माळ का, भाई ।
सब लग दूंगा राज, पियारी, देर करूं कुछ नाहीं ।
लग दूंगा तंबू सब डेरा, येह मेरे मन भाई ।
जीत हार येह ही बाजी खेलूं मन चित लाए ।
देख पा ए सतराह अठारह, बाजी जीत उठाई ।
होणहार के येह ही बस में, ना कुछ पार बसाई ।"

पुस्कर

" जीत हमारी हो गई इस पांसा में आज ।
और नहीं बाकी रही, येह हींन सकल दे राज ।
येह हीं सकल दे राज, पियारी, क्यूं मुझ को समझावे ?
जिस का फांसा पड़े जीत का, सो बाजी ले जावे ।
करणहार करतार वही है फांसा जी जीतावे ।
जिस पर मिहर करे उघराई, सो बाजी को पावे ।
येह सांस मन बीच, पियारी, क्यूं घबरावे ?
होणहार हटे ना, पियारी, जो कुछ आंक लिखावे ।"

राजा नल

"राज पाट सारा लगा इस बाजी के बीच ।
खूब तरह जाणा हमें, येह फांसा है नीच ।"

रागनी

"राजा, मैं दीया सारा।
बचन मानो येह ही म्हारा :
उठाइयो हाथ से फांसा ;
दाऊ पूरा आया खासा ।
येह ही समझाउता तुम को,
सत हारूं नहीं मुझ को।
देर कीजे नहीं, भाई,
जो बाजी जीतके आई। "

पुस्कर

"राज, माळ, फौजां, सभी तैं ने दीए लगाए ;
जीत हमारी हो गई और लगो कुछ आज ।
और लगो कुछ आज, रावजी, जीता राज तुम्हारा ।
राज पाट की बाजी, राजा, अब के हम से हारा ।
सब की है येह बात जूए में, तैं ने नहीं बिचारा ?
अब क्या महल बीच में, राजा, आज रहा है थारा ?"

राजा नल

"तब तन के बिस्तर लगे और अमीरी ठाठ।
बाजी से हटा नहीं, येह ही हमें है आण्ठ।"
येह ही हमें है आण्ठ, आज येह हार सिंगार लगा सारा ।
ना पीछे रखणा कुछ मुझ को, येह ही नेम मन पर धारा ।
जो अब की बाजी तुम जीतो, होर हमें हो जा हारी,
और बात मैं क्या कहूं , तुम से ? मैं अधीन रहा थारी ।"

पुस्कर

"तेरे पे कुछ ना रहा, सब तैं दीया हराए ।
खेल हमारा हो चुका, कही तुझे समझाए ।
इक बाकी रही जान तुम्हारी ।
कुछ ना रहा और अब तुम पे, तुम बड़े खिलाड़ी।
येह तो बात हाथ साहिब के : जीत रहो, चाहे हारी ।
अब की बाजी में, राजा, तू लग दमवंती नारी :
और दूजी, महाराज, रही येह देह तुम्हारी ।
नहीं राज से काम आप चौपड़ में हारा ।

अब इस नगरी बीच नहीं रहा कुछ तुम्हारा ।"

राजा नल

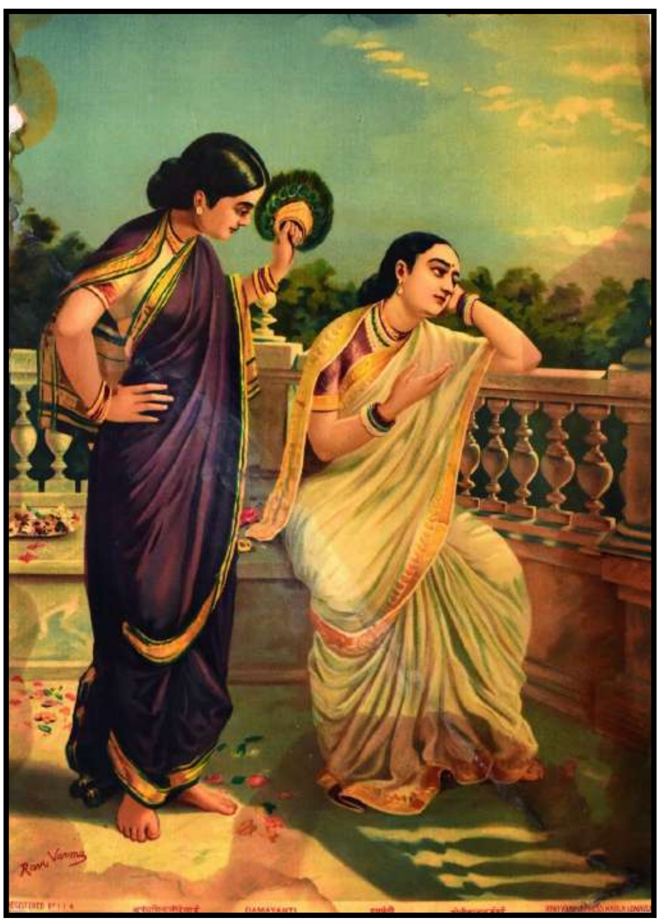
"सुणकर तुम्हारी बात को, तन में उठ गई आग, भाई ।
खैंच दुधारा हाथ में, देऊं झट शीश उड़ाई ।
देऊं झट शीश उड़ाई, अरे, मैं ना छोडूंगा भाई ।
तेरे प्राण छिन में खो दूंगा, ऐसी बात सुणाई ।
तैं ने आज करी है ऐसी समझ मूरख मन, भाई।
इक दिन काळ खड़ा सिर ऊपर ; या मेरे मन, भाई।"

रानी दमवंती

"हाथ जोड़ बिनती करूं, नल राजा महाराज ।
जो तुम मारोगे ऐसे तुम्हारा होत अकाज ।
तुम्हारा होत अकाज, ऐसे मत मारीयो, राजा ।
शकल बिगड़े तेरा काजा ।"

रागनी

"जगत म्हां पाप हो भारी ।



अकल कहां गई, पिया थारी ?
तुम्हें समझाउती बारी ।
बात मानो येह ही म्हारी :
जूआ मत खेलीए, साईं ।
जरा लज्जा नहीं आई ।
धर्म अपणे से ना हारो ।
ऐसे मत जान से मारो ।"

राजा नल

"तू ने कही, सो मैं सुणी, येह पापी चंडाल ।
मैं उस को छोडूं नहीं, आ गीया उसका काळ ।
आ गीया उसका काळ, पियारी, लाख बार समझाया ।
ऐसे बचन कठोर बोलता, नहीं लरजी है काया ।
नहीं कुछ इस में मेरा, सिर पर काळ घुमाया ।
ना जीवत छोडूंगां इस को, दिल में येह ही ठराया ।"

रानी दमवंती

" येह तो तुम्हारा पुत्र सम, तुम उस के हो तात ।
मन में सोच बिचारीये, तुम्हें ना चाहीये बात ।
तुम्हें ना चाहीये येह बात, रावजी, आप गुणी कुल में दाना।
गोत घात करणा नहीं, राजा ; जगत येह ताना।
जो तू उस को मार गंवाओ, बहुता दुख जग में पाओ।
येह ही मानो, पिया मेरे, हाथ मती उस के लाओ ?"

राजा नल

" उस ने मुख खोटी कही, गई जिगर को खाए ।
मैं उस को छोडूं नहीं, सुण, राणी, चित लाए ।
सुण, राणी, चित लाए हमारी कसब कीया इस ने भारी ।
बड़ा दस्ट ये है, अब मानी, सभी बात खोई म्हारी ।
ऐसा बचन कहा मुख सेती, समझ नहीं आई उस को ।
महा कपट की खान बिड़हा है, तू बाळक कहती जिसको ।"

रानी दमवंती

"हाथ जोड़ बिनती करूं, पिया, मन चित लाए :
इस का क्या है मारणा, क्रोध करे मर जाए ?"

रागनी

"धर्म और सत मत हारो।
मती, राजा, इस से मारो।
तुम्हें मैं बहुत समझाया,
अक्ल तेरी नहीं आया।
माळ और राज इक नारी।
खुशी होके तुम्हें हारी।
कीया क्यूं क्रोध फिर, राजा ?
समझके कीजीये काजा।"

पुस्कर

"राज बीच रहणा नहीं, रहा ना तुम्हारा काम।
मेरे राज में अब तुम्हें खाणा निमक हराम ;
खाणा निमक हराम : अरे, तुम द्वारपाल, अब जाओ।
सभी राज में अभी ढण्ढोरा जल्दी से पटवाओ।
मेरे राज में मत ना राखीयो, जहां चाहे वहां जाओ।
इतना काम करो तुम जाके, मत ना देर लगाओ।"

रानी दमवंती

"बाबल मेरे के जाओ, सुण, रे तू रथवान।
घोड़े रथ वहां ले जाओ, कहा मेरा येह मान।
कहा मेरा ले मान, करो जल्दी से तय्यारी।
इक कन्यां, इक सूत, सोच मुझ को है भारी।
इन को तुम ले जाओ मात मेरी के ताईं।
हम को तो बणों बास लिखा कर्मों के माहीं।
कहियो शकल हवाल मात मेरी पे जाके,
मैं कहती, कर जोड़ आज तुम को समझाके। "

रथवान

"आप कहा सो ही करूं, मैं जाऊं तत-काल।
अब यहां से तय्यारी करूं, मत ना हो बे-हाल।
मत ना हो बे-हाल, पियारी, येह ही तुझे समझाऊं।
बाळक रथ के बीच बिठा, मैं तेरी माता पे जाऊं,
तेरे तन का मैं हाल तेरी माता को जाए सुणाऊं।
मन में धीर धरो तुम, राणी, सारी खबरां लाऊं।"

रथ को बेग जोतायके कीया कूंच मकान।
पहुंचा नगर में भीम का, जहां राणी सुरज्ञान।
जहां राणी सुरज्ञान, जाएके सारी भिता सुणाई।
सुत कन्यां दोनों वहां छोड़े, नल की बात बताई।
सुरणपाल इक राव बड़ा था उस पे पहुंचे जाए।
रथ घोड़े दोनों हीं छोड़े राव चले बण माईं ।

रानी दमवंती

"सुणो, पिया क्या सोचते, राज दीया सब हार ?
चलो किसी बण खंड में, हम हो गए लाचार।
हम हो गए लाचार, येह ही अरज सुण लो म्हारी।
सोच कई से क्या होता है ? आप करो बण की तय्यारी।
इतने दिन का राज लिखा था, सो तुम भोग लीया, साईं।
अभी इस राज बीच नहीं रहणा, मैं कहती तुम्हारे ताईं।"

राजा नल

"सच बात तुम ने कही, ली येह ही मान।
अब येहां रहणा नहीं, कर्म रेख परवान।"

रागनी

"नहीं दुख में कोई साथी,
अक्ल मेरी रही जाती।
कर्म गत येह होवे, राणी,
नहीं येह बात मैं जाणी।
राज छोड़ा आए बण में :
भूख ब्यापी मेरे तन में।
तीन दिन हो गए चलतों।
अन जल ना करा हम को।"

रानी दमवंती

"इस पेडे पे कदम के बैठी इक कपोत।
इसी मार भछण करो, और उपायो नहीं होत।
ऐ राजाजी, ना कुछ बणत उपाए तरखाणी आण बताए।
तन ब्याकुल हो गीया, भूख ने प्राण गंवाए।
अब हमारे तन बीच चलण की ताकत नाहीं।
मारो येह ही कपोत, करें भोजन हम खाए।"

राजा नल

"राणी, जभी तुम्हारा बचन हमें कीया परवान।
मारूं तुरत कपोत को निसचे ले जान।
या निसचे ले जान, पियारी, और सिसतर कुछ है नहीं :
धोती गेर उसी के ऊपर मैं पकड़ूं उस को जाए।
गेर दीया धोती माईं, लेकर उड़ गीया वोह, पियारी।
अब सोचे। कुछ बण में नहीं आता, जब तक हो हमारी हारी
।"

रानी दमवंती

"बिपत काळ बिपता हमें क्यूं दीनी, रघु राई ?
या तो हमारे प्राण लो, या तुम करो, जी, सुहाई ।"

रागनी

"बिपत में ना कोई संगी।
पिया काया हुई नंगी।
प्रभू, सिध लीजो मेरी.
बिपत ने इन की घेरी।
सरण हम ने लीए थारी।
चली अब जान येहां म्हारी।
थारे बिन ना कोई, सामी।
करो रछया गरूड़-गामी।"

राजा नल

"राणी, नगर बिदर्भ का येह मार्ग ले जाण।
जहां तेरे पितमात हैं, करे आप पहचान।
करे आप पहचान, पियारी, येह मार्ग सुंदर खासा।
गरजत सिंह, हीया मेरा लरजे, येह ही कहूं तुम्हारे पासा :
बण का रहणा बहुत कठन, है इस में दुख, सुण ले, राणी.
कौण कर्म में रेख लेख है ? ना माया प्रभू की जाणी। "

रानी दमवंती

"येह हम ने जाणे पिया, किस के मां और बाप ?
हमें छोड़के बण बीखे रहो अकेली आप।"

रागनी

"पियाजी, हमें तियाग ना जाईयो.
संग हमारे पिया रहीयो।
पियाजी, नादान मत म्हारी,
मुझे करीयो मती नियारी।
अकेली मैं जीऊं बण में,
प्राण अपणी तजूं छिन में।"

राजा नल

"राणी ऐसी ना कहो मुख से बचन कठोर।
मैं तुझ को कैसे तजूं ? प्रीती चंद चकोर।"

रागनी

"प्रीत अब लग नहीं जाणी,
तजूं कैसे तुझे, राणी ?
तू ही प्राणों से है पियारी,
करूं कैसे तुझे नियारी ?
तेरे बिन क्या मेरा जीणा ?
बड़ा दुख येह हमें दीणा।"

रानी दमवंती

"प्राण पिया बिन ना बचें, पड़ गई प्रेम जंजीर।
बात तुम्हारी सुणत ही चले नैन से नीर।
तेरे बिन कौण सहे दुख सुख म्हारा ?
प्राण तजूं छिन में, पीतम, जो तू हो जा हम से नियारी।
कंद, मूल, फल, फूल तोड़के मैं तुम्हारे खातिर लाइ।
भोजन कर, महाराज हमारे, या तुम को चाहीये, साईं।"

राजा नल

"राणी घबराओ मती, मन में बांधो धीर।
सब सहाई हमारी करें, सदा भजो रघबीर।"

रागनी

"भजो रघबीर को, पियारी।
कभी होवे नहीं हारी।

राम जग के है करतारा,
ध्यान उन का हमें धारा।
बिपत में सुख करे वोह ही,
और दूजा नहीं कोई ?"
राजा उस बण में फिरे आए मित्र के पास।
बहोत आदर उस ने कीया, राजा भए उदास।
देखकर उदास कीया आदर भारी।
दस पांच रात महलों के बीच गुजारी।
खूंटी पे हार धरा राणी जाए।
वोह निगल गई खूंटी, नहीं माया पाई।
जब राणी गई रुस पड़ी, महलों जाए,
राजा ने आण आप राणी उठाई।

रानी

"तुम्हारा येह यार संग उस की नारी,
लीना इन हार, बात तुम से बिचारी।"

नल ने जो बात सुणी हार की आके।

राजा नल

"भावी ने कर्म-रेख क्या लिखी जाके ?"
सुणके येह बात, राह बण की लीना।
पिंगल के देस गमन फिरकर कीना।

राजा नल

"बिपत काल बिपता हमें क्या दीए दीना नाथ ?
इसी दुसोटी बीच में ना कोई हमारे साथ।"

रागनी

" बिपत में ना कोई साथ।
तजे गजपाल से हाथ,
हुआ बणों बास में रहणा।
हमारे कर्म का लहणा।
हमारी खबर ले, सामी,
हमें भोजन की है हानी।
नहीं तन पे बशम हमारे।
राज हो तज चलण नियारी।"

रानी दमवंती

"सुणो, पिया, तुम से कहूं, येह है बात समझाए,
कर्म रेख मिटे नहीं, कीजे लाख उपाए ;
कीजे लाख उपाए ; कर्म येह लिखी है हमारी।
इस दुसोटी बीच राम हमारे रखवाळी।
करो ज्ञान, सत, संग ; जगत झूठी है माया।
सत मत छोड़ो आप तुम्हें येह ले समझाया।
जो सत दोगे छोड़, धर्म की हो जा हानी।
दुख सुख इक ही रूप मानते हैं मुनी ज्ञानी।"

राजा नल

"ज्ञान दुशत आणा कठन, सुणो, पती नृप नार।
कौन पाप पीछे किए, जो या बिपता दीए डार ? "

रागनी

"बिपत हम पे पड़ी भारी।
खबर लो आण, गिरधारी।
सुणो, तुम प्राण की पियारी,
बिपत की बात है नियारी।
कहूं तुम से सभी सारी।
सुरत में बाजी हमें हारी :
फिर सत इंदर ने लीना।
बरखा ने दुख बड़ा दीना।
बात कथा नहीं झूटी ;
निगल गई हार को खूंटी ;
बुणी तीतर उड़ी म्हारी :
रेख टळते नहीं टारी।"

रानी दमवंती

"जो होणी सो हो लीए, दूर करो अफसोस।
लिखा करम सो ही भोगणा, किस को दीजे दोष ?
किस को दीजे दोष ; पियाजी ? ऊछा करम हमारा, साईं।
राज छुटा बणों बास दिवाया ; ना माया प्रभू की पाई।
करणी म्हं कुछ चूक पड़ी है, दुख दीया बालेपण म्हं।

इक तरह मेरा भाग बली है, प्रभू, दोनों संग रहे बण में।
जो तुम से कभी बिछड़ण होता, बहुता दुख फिरती, साईं।
अब मेरा पती भरत-भंग नहीं ; दिन रात परवान तुम्हारे ताईं।
चलो, पिया, किसी नगर में, छोड़ों बण का बास।
यहां अब चित लगता नहीं, हम नित रहें उदास।
हम नित रहें उदास, बास नगरी में कीजे।
ऐसा करण करो, धर्म हमारा नहीं छीजे।
मान येह है उपदेस ; किरपा कर चलो, जी अगाड़ी।
तुम हमारे भरतार, चलूं मैं संग तुम्हारे। ''

राजा नल

''राणीजी, सुण लीजीये, येह पिंगल का देस।
माल राज महाराज है यहां के अवध नरेस।
यहां के अवध नरेस, पियारी, महा बली है राजा।
आठ पहर दिन रात नगर में बाजे छत्तीस बाजा।
आम खास में लगी कचहरी, जिस का बड़ा समाजा।
सब पूर्ण पड़ताल राव के, छतर मुकट सिर राजा।''

रानी दमवंती

''खूब बात तुम ने कही, हिरदे गई समाए।
जो बिपता प्रभू ने दीए, सो हम भोग आए।
सो भोगे अब आए, पियाजी, सुणीयो अरज येह ही म्हारी।
और काम हम से नहीं बणता, येह बिपता प्रभू ने डारी।
तुम तेली घर जाए पाट पर बैठ, करो सिमरन भारी।
मैं तो आप राव के महलों जाए बणेगी पणहारी।''

राजा तेली पे रहा, राणी राजद्वार :
सभी नगर उस को कहें राजा की पणहार।
राजा की पणहार कहें, सब बात नगरी में नार नारी।
राव पाट हांके तेली के, सोच रही मन में भारी।
तीन दिनां राजा को हो गए, अन खाया ना जल पीया।
ना तेली ने पूछा उस को, ''कौण काम तू ने येह कीया ?''
चौथा दिन हुआ डळी इक खळ की ठाके मुख पाई ;
मारे लात तेली राजा के, निकल बाहिर मुख से आई।

राजा पिंगल

''येह भोजन किस ने कीया, आई राणी सुरज्ञान ?
सच बता हम से अभी, ज्ञान-रशक, गुण खान :
ज्ञान-रशक, गुण खान, हमें येह कहो सच मुख बाणी।
मेरे महल के बीच अधिक है तू सुंदर, पट राणी।
तेरे हाथ का येह नहीं भोजन, सुण ले इश्क दीवानी।
मैं पूछूं हूं बात, सच सब हम से कहो बखानी। ''

रानी

''मुझ को फुरसत ना हूई, हुआ महल में कार।
येह भोजन उस ने कीया, जो तुम्हारी है पणहार।
जो तुम्हारी है पणहार, रावजी, सुणो हकीकत सारी।
उस पियारी ने महल बीच, भोजन की करी तय्यारी।



मेरे तन में हुई मांदगी, मैं हो गई लाचारी।
येह भोजन उस कीया नारी ने, मैं येह बात बिचारी।"

राजा पिंगल

"राजा नल के महल में है दमवंती नार।
उस ने हमारे वास्ते भोजन कीया तय्यार।
भोजन कीया तय्यार, स्वाद ऐसा हम ने वहां पाया।
ऐसा ही भोजन इस पियारी ने, ऐसा आज बणाया।
या है कोई राजा की नारी, तुम्हें भेद ना पाया :
बिपत काल में हूई, पियारी, तुझ को येह ही सुणाया।"

"ऐ सुंदर, तू कौण है ? कहो हमें सच बात।
येह हम पूछत हैं तुम्हें ; कौण तुम्हारी जात ?
कौण तुम्हारी जात ? हमें तू हाल सुणा दे, पियारी।
देख तुम को राज-सुतिया, तू ना हैगी पणहारी।
अपणे मन की बात खोलके, कहो हकीकत सारी.
येह हम से तू सच बता दे ; कौण जात है थारी ?"

रानी दमवंती

"बिपत काल की बात है, क्या कहूं तुम्हारे संग ?
नरवरगढ़ के राव की मैं होंगी अधरंग।
ऐ राजाजी, मैं होंगी अधरंग, बात येह सुणो, जी, हमारी।
दीया है दुसोटा राम बिपत हम पे येह डारी,
नल राजा महाराज, जिन्हें की मैं हूं नारी।
पेट भरण के काज रही तुम्हारी पणिहारी।
दमवंती मेरा नाम, पती संग बण में आई।
सब बिपता की बात तुम्हें मैं आण सुणाई।"

राजा पिंगल

"कहां तुम्हारा राव है ? दीजे सच बताए।
राणीजी, महाराज को हम लावें अब जाए।
हम लावें अब जाए, पियारी, उस का भेद बताओ।
हमें सोच हो गई भारी, जरा देर मत लाओ।
पिछली बात हमें सब, राणी, बार बार समझाओ :
हाल हवाल हमें सब, राणी सार हाल सुणाओ। "

रानी दमवंती

"हमें बण में से आणके, येह ही कीया बिचार।
राजा तेली के रहे, मैं तुम्हारी पणहार।
मैं तुम्हारी पणहार रहे महलों में आए।
बिपत काल की बात, तुम्हें मैं आण सुणाई।
जो प्रभू ने दुख दीया, सोई हम भोगें सारा,
येह कर्ता का आंक नहीं टरता है टारा।"

राजा पिंगल

"हाथ जोड़ बिनती करूं, नल राजा महाराज,
चलो नगर के बीच में, कीजे शकल समाज :
कीजे शकल समाज आप के, मैं हूं आज्ञा-कारी।
हाथ जोड़ कह करूं बिनती चलीयो संग हमारे।
बैठ राज करो गद्दी पे, हम हाजिर हैं थारी।
आण रहे तेली के घर में, येह क्या बात बिचारी ? "

राजा नल

"ऐ राणी, तुम से कहूं बिछड़ण संजोग।
जो ब्रह्मा ने लिख दीया, सोई भोगणे भोग।"

रागनी

"लिखी टळती नहीं टारी।
सुणो, राणी, अरज हमारी.
दुसोटा पड़ गीया भारी,
सो ही हम ने सही सारी।
बिपत राजा कोई देता,
सो ही मैं शीश पर धरता
करें फरयाद किसी सेती ?
सोच दिन रात येह रहती ;
लिखा जो कर्म का भरणा :
हमें फिर राज क्या करणा ?"

राजा पिंगल

"जो जनमा इस जगत में दुख सुख उस के साथ।
चौदह बरस बण में फिरे भावी बस रघु नाथ।"

रागनी

"फिरे बण बीच रघु राई।
दीया दुख केवकी माई :
बिपत रघु पे पड़ी भारी।
करे बणों बास की तय्यारी।
बिपत पहलाद को हूई,
जिस से जाणें हैं सब कोई।
बिपत सिर पे पड़ी, राजा,
करो येह दूर सब सांसा।"

राजा नल

"ऐ राणी, तुम पे कहूं येह बिपता की बैन।
भावी बस बण में आए, निक पड़ी नहीं चैन।"

रागनी

"चैन पड़ी नहीं, राणी।
चले बिपता में जिंदगानी।
कोट नरवर तजे भारी।
घड़ी दुख की सही सारी।
बात वोह हाथ ना आती।
बिपत में कौण है साथी ?
अमर जग में नहीं कोई।
दीया दुख मैं सहा सोई।"

राजा पिंगल

"इस में किस का दोष है ? नाहक करो बियोग।
दुख सुख तन के साथ हैं ; कीए कर्म की भोग।
कीए कर्म के भोग, रावजी, येह बिपता सब पर होई।
राम चंद्र की सीता नारी तियाग दीए बण में सोई।
भूख पियास के त्रास से जिन जाए रहे बाल्मीक रिख के पासा।
बैठे राज करो, महाराज, पूर्ण राम करें आसा। "

राजा नल

"मन की मन म्हां राखीये, ना कुछ चला उपाओ ;
भावी ने बण में आण दीया तराओ।"

रागनी

"कहां मेरी नार दमवंती ?
बिना उस बात नहीं बणती ;
बिपत में संग रही म्हारी।
बचन उस ने नहीं हारी :
पती बिरत नार है मेरी।
रही मेरी चरण की चेरी।
बिछड़ गई प्राण की पियारी।
मेरे से हो गई नियारी :
जगत में धर्ग मेरा जीणा :
नहीं यहां अन जल पीणा।"

राजा पिंगल

"दमवंती है महल में, चलो उस के पास।
राज करो सुख चैन में, मत ना होत उदास।
मत ना हो उदास, राव, मैं दो कर जोड़ कहूं सारी।
दूर करो अब सोच दिलों की ; संग चलो, राजा, म्हारे,
करण-हार कर्ता वही है, येह ही बात मैं समझाऊं।
अब ना देर करो, महाराज, संग चलो, मैं ले जाऊं। "

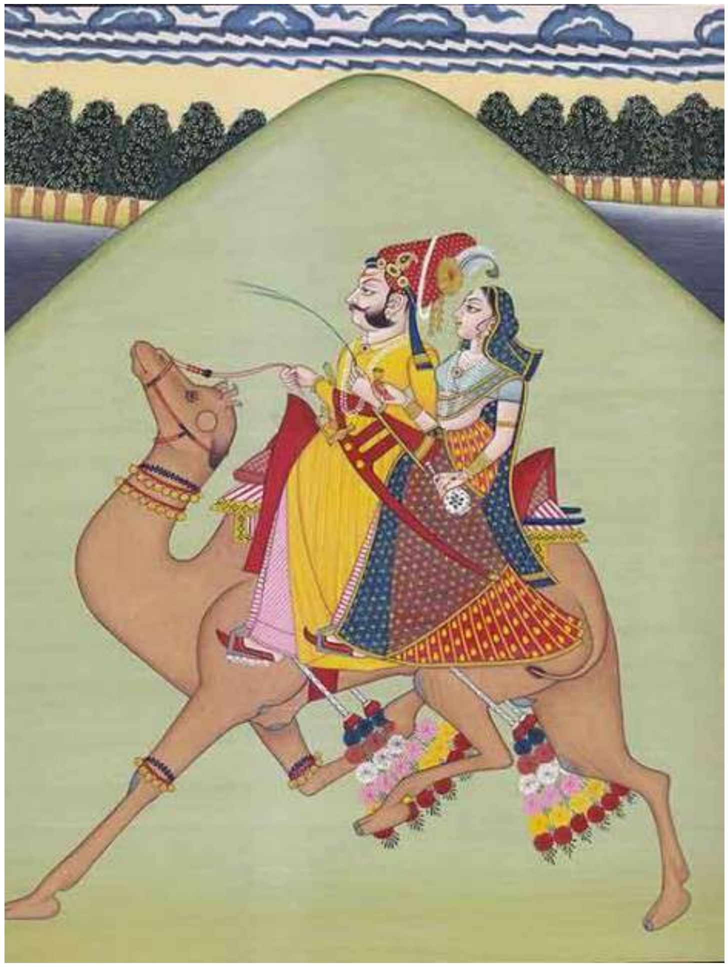
राजा आए महल में, सब का हुआ मिलाप।
देख अपणी नार को राजा करत बिलाप।
राजा करत बिलाप, राव पिंगल मुख बोल कही बाणी।

राजा पिंगल

"गरह-मती हैं नार दूई की; येह लेजो, निसचे जाणी, -
जो मेरी हो जागी कन्यां, तुम्हारे सूत होगा, राजा,
उस संग बियाह करूं, कन्यां का सकल करें हमारी काजा। "

किरपा हूई जागतंब की, धरूं तुम्हारा ध्यान।
जोड़ी आण मिला दीए हटके सरी भगवान :
जगत में कीजे मेरी सहाई।
दमवंती और राजा नल हैं हटके दिए मिलाए।
जैसी चंद चकोर किरण की प्रीत बणी छब चाही,
सुर मुनि जन सुण कद कने, तेरी माया कीनी ना पाई।
सांग संपूर्ण करके, माता, पीछे भेंट बणाई।
कहते बंसी लाल, कुल, मात, तू चार जुगों में दोहाई।

***



राजा ढोल का आख्यान

(अंबाला के निकट बिबियाल गांव के दो मैला उठाने वालों ने गाया)

(जितना मैं जानता हूं, इस वार्ता का क्लासिक आधार नहीं है। यद्यपि ढोल को नल के बेटे के तौर पर परिचय दिया गया है। क्लासिकल तौर पर नल का बेटा इंद्रसेन है। संस्कृत ग्रंथों में ढोला नहीं आता।)

(यह ढोला और संगलदीप में स्थित पिंगलगढ़ के राजा पिंगल की बेटी मरवण के प्रेम को दर्शाता है। ये नाम हमारी बहुत अधिक मदद नहीं करते। क्लासिकल तौर पर पिंगल का नाम नाग या सर्प प्रजाति के साथ जुड़ा है। और यदि संगलदीप शकल-द्वीप (शक-द्वीप) का नाम है तो पिंगल का राज्य उत्तरी पंजाब में स्थित है, जो नाग राजवंश राज्य के लिए उपयुक्त स्थान है। ढोल नरवरगढ़ या नालकोट, आधुनिक नरवर है, जो ग्वालियर राज्य में है और हमेशा नल की वार्ता के साथ जुड़ा है, जैसा कि पिछली वार्ता में देखा गया है। इस कथा में शम्मी कछवाही को ढोल की पत्नी बनाने से यह तथ्य उजागर होता है कि कछवाहा राजपूत युगों से नरवर के वासी हैं।)

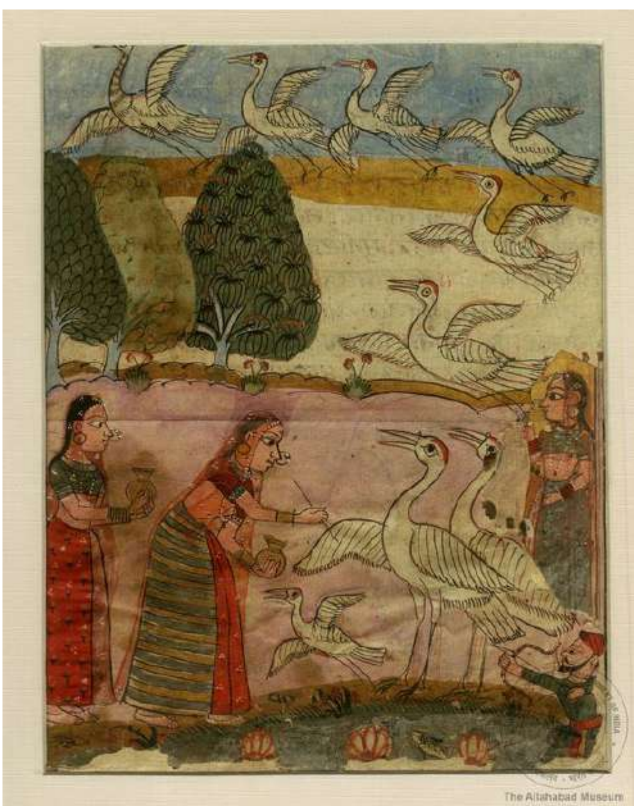
(इस कविता की भाषा में फारसी शब्दों की बहुतायत है जो इस तरह की प्रस्तुतियों के मुकाबले में हर दृष्टि से विकृत रूप में है।)

-आर. सी. टेम्पल

राग राजा ढोल बेटा राजा नल का

सिमर भवानी सारदा ; घट में पूरे ज्ञान।
तीन सौ साठ सुहेलियां ले लईं अपणे साथ,
सरवर तालां नूं आवंदी राणी मारवण।
चादर मौजा खोलके धर दीया सरवर ताल :
मार मार छाळां जैसी बड़ गई सरवर ताल में :
तरदी राणी ये फिरी सरवर के ताल में।
बोल सुहेलीयां ; क्या कहें ? "राणीजी मारवण,
अरज सुणो मेरी बिनती, अरज सुण मन लाए।
छोटी छोटी बियाही तेरे बाबल के नगर में ;
बड़ी मुकलावा जाएं।
क्या तेरा बाबल निरधना ? क्या धन की ऊछ ?"
ऐसा ताना मारा चुभी कलीजा फांस।
हो दिलगीर महलों आवती, चल माता के पास।
इस ने कहा, "छोटी छोटी बियाही, बड़ी मुकलावा जाएं।
क्या मेरा बाप निरधना ? क्या धन की ऊछ ?"
माता कहे, "ना तेरा बाप निरधना, ना धन की ऊछ।"
राणी कहे, "कहां बियाही ? कहां मांगी ? मेरे बर को देओ बतलाए।"
माता कहे, "सात दिनां की तू थी, नौ दिन का ढोल :
थाळी कटोरा बियाह करा, नरवरगढ़ के म्हां।"
राणी कहे, "किन गळीयों ढोल बसे ? क्यूंकर होगा मेळ ?"
धोरे तारवण खड़ी मारवण से करे जवाब :
"बात बड़ी मुख छोटा, कहती आवे लाज।"
रतड़ा पलंग बिछाके फूलों सेज बेखार ;
ताण दुपट्टा सो रहो राणीजी मारवण, जी।
राजा ढोल को याद करो राजा की बेटी मारवण।
सुपने में ढोल मिले राजा की बेटी मारवण।
चली महल को आवंदी राणी मारवण।
सांज पड़ी, दिन ढुळ गई, राणीजी मारवण
सोई महल के म्हां, जी।
आधी रात नौकंध गई, ठाकुरजी प्रभूजी।
"सुपने में ढोला मिले, साजन साजन मेरा।
मुझे मिला सुपने के म्हां, जी।"
पहर रात रह गई पिंगल की बेटी नूं :
कुंजां ने पाया कहराट, जी :
राणी की आंख खुल गई, जी :
उठके बैठी हो गई मारवण,
दिल से करे जवाब, जी :
"रैन का सुपना मुझे भा गया, ठाकुरजी मेरा।"
कुंजां ने पाया कहराट, जी।
बड़ी फ़ज़र पहरा नूर का, ठाकुर ठाकुर मेरा।
"अरज सुणो मेरा, बिनती मेरी, माता पियारी :
मेरी सुण दिल की बात, जी।
इन कुंजां ने पाया कहराट, जी।
इन कुंजां को मरवाए दे, मेरी माता पियारी :
सरवर तालां को दे पुड़वाए, जी।"
बोली तारवण, "क्या कहे मेरी बहिन मारवण ?
येह कुंजां हैं दूसोर की, मेरी मारवण,
येह जाणें नरवरगढ़ को रोज, जी।"
इन तालां से शोभा घणी ; मेरी सुणती क्यूं नहीं बात ?
लिखके चिट्ठी भेज दो कुंजां के पंख पर,
जाके देगें ढोल को दे, जी।
बड़ी फ़ज़र पहरा नूर का राणी मारवण
सुहेलियां ली बुलाए, जी।
तीन सौ साठ सुहेलियां और राणी मारवण
सरवर तालां को जाएं, जी :
"अरज सुणो मेरी बिनती, मेरे कुंजां पियारे।"
सत जुग सचा पहरा बिरत दा, जी।
कुंजां करें जवाब, जी:
"मन के भेद बता दे, रुक्का दे लिखा, जी ?"
बोली मारवण, क्या कहें ? "मेरे कुंजां पियारे, जी,
मेरी चिट्ठी तुम लेजाओ राजा ढोल पे, जी।"
बोले कुंजां, "मेरी अरज सुणो, राणी मारवण ;
तुम सुणो हमारी बात।
लिख लिख चिट्ठीयां सारी की बांध दो,
हमारे पाखां के बांध, जी।"
लिख लिख चिट्ठीयां दीए पंखां के बांध, जी।
धरके डारी लगाउते कुंजां पैर।
नरवरगढ़ को आउते कुंजां दुसोरे।
सरवर तालां बड़ गई कुंजां पियारे :
बुढी कुंजां पीछे रह गई, जी ;
बैठी सरवर के पाळ पर, जी।

पूछे बुढ़ी कुंज सब कुंजां से।
"वो राजा ढोल को चिट्ठी दिखा दीए, जी।"
इतनी सुणके बाहिर आवतें कुंजां पियारे :
हाथ जोड़ करें बिनती बुढ़ी कुंज से :
"तेरे नौ पर लगते पैर, जी ;
हमारी चिट्ठी तो गळ गई, बहिन हमारी, जी।
हमारी जान बचा दे ; सुण, कुंज, मेरी बात, जी।
राजा को तू अपणी चिट्ठी दे दिखाए, जी।"
उड़ी कुंज चलके आवे महल के म्हां, जी।
आ मुण्डेरी बैठी, बैठी मुण्डेरी जाए जी।
राजा ढोल वा राणी चौपड़ खेलते जी।
देख कुंज को ढोल महल में बड़ गीया, जी।
तीर कुमान जैसे लाउता राजा ढोल, जी।
कुंज ने चिट्ठी दी गेर, जी।
सम्मी कछवाही ने उठा ली, जी।
सड़सड़ चिट्ठी बांची, जी :
राणी मारवण की लिखी हैं असलोक, जी।
इतनी में राजा ढोल आया, जी।
राणी ने उस को देखके चिट्ठी फूक दी, जी।



जळती चिट्ठी देखकर राणी से करे जवाब, जी :
"येह तो क्या चिट्ठी तू ने फूंक दी, सम्मीजी कछवाही ?
येह तो दी थी कुंज ने गेर, जी।"
बोली राणी : क्या कहे ? "राजा ढोला, जी,
उस गावं में कोई लागी नाहीं, जी।
लिखके चिट्ठी दे दी, जी, राणी मारवण ने
भेजी कुंजां के हाथ, जी।
कागां हाथ सनेड़ी, चिड़ियां हाथ सलाम।"
इतनी सुणके ढोल हुआ मन में दिलगीर, जी।

राणी मारवण देखे ही बाट, जी।
घर का ब्राह्मण बुला लीया राणी मारवण, जी।
आ ब्राह्मण ने दीए कल्याण, जी :
"तेरी कल्याण, तेरी कुल की कल्याण, जी।"
"मेरी चिट्ठी तू ले जाए, दादाजी ब्राह्मण :
तुम ले जाईयो ढोल के पास, जी।
नरवरगढ़ को तुम जाईयो साजन पे, जी।
ढोल साजन को दो मिलाए, जी।"
पांच अशरफी उस को दे दी बुढ्ढे ब्राह्मण।
चला घर को आउता बुढ्ढाजी, ब्राह्मण, जी :
पांच अशरफी दे दी अपणी ब्राह्मणी को, जी :
"तुम इस से करो गुजारा, जी।"
मजिलों मजिलों चल पड़ा बुढ्ढाजी ब्राह्मण :
वोह तो नरवरगढ़ को जाए, जी।
चला महल को आवंदा राजा ढोल पे, जी :
खसखस के बंगलों में आउता ढोल के पास, जी।
आके कल्याण दीए राजा ढोल को।
"किस देसां से तेरा आउणा, दादाजी ब्राह्मण ?"
"पिंगल देस से आणा नरवरगढ़ के म्हां, जी।"
दस्तावेज तो दे दीए राजा ढोल को।
सड़सड़ उस को बांचता राजा ढोल,
अपणे मन में खुशी हो जाए, जी।
ब्राह्मण लेकर चले अपणे महल में, जी।
ठमक ठमक आंवदा महल में, जी :
राणी से करता जवाब, जी :
"पिंगलगढ़ से आणा दादाजी मिसर का :
इस का रतड़ा पलंग बिछा दो, जी।"
इतनी कहके राजा चल पड़ा, जी।

कच्चे सूत का पलंग बिछा दीया भंवरी की म्हां :
चिट्टी चादर ताण दी पलंग पर, जी।
फिर उसी ब्राह्मण को बुला लीया राणी ने, जी :
"मेरी अरज सुणो, महाराज, जी"
जब ब्राह्मण आ गीया महल के म्हां, जी,
बोली राणी, "तुझ को आखदे, बुढ्ढे से ब्राह्मण,
आओ, तुम जाओ पलंग पर बैठ, जी।"
जब वोह पलंग पर बैठा बुढ्ढा सा ब्राह्मण,
वोह तो गिर पड़ा भंवरी के म्हां, जी।
वहां से पलंग उठा लीया राणी सम्मीजी कछवाही, जी।
आके ढोल राजा, राणी से करे जवाब :
"मुझे देओ ब्राह्मण को बताए, जी।"
बोली राणी ; क्या कहे ? "राजा ढोला जी,
वोह भाग गीया ब्राह्मण महल से, जी।"
राजा ढोल को सुणके उस का लगा फराक, जी।

वहां राणी मारवण ब्राह्मण की देख बाट, जी।
"खबर सार मुझे ना दी, जी, बुढ्ढे ब्राह्मण।
तीन सौ साठ कोस से नल राजा का ढोला।
कौण जाणे ब्राह्मण मर गीया ?" मीरासी लीया बुलाए, जी।
जाए जवाहिर बात करे वोह मीरासी का लड़का।
"गरज दीवानी मैं फिरूं, मेरे बाबल का मीरासी :
मेरी गरजां पूरो, जी।
तीन सौ साठ कोस बसे नल राजा का ढोल।
मेरे ढोल साजन को मिला दे, जी।"
"तेरा भेजा जाऊंगा, पिंगल की बेटी मारवण :
मेरे लड़कों का कौण अहवाळ, जी ?"
"ले जा पांच अशरफी, तेरे वारी जवान, मीरासी :
दे जा मीरासण के हाथ, जी।
संजम से लड़कों को, संजम से करे गुजाराण।"
लेके पांच अशरफी जाईयो मीरासी का लड़का :
रंगले दुतारी में पाउता, जी,
सांवळिया मीरासी, जी।
वोह टुकड़े मांगणे गीया भूल :
टुकड़े का कांसा मारता सांवळिया मीरासी।
चला अपणे घर को आवे, जी।
पांचों सातों लड़कों को ले रही मीरासण, जी।
टुकड़ों की देखी बाट, जी।

दूर से आवते को देखके मीरासी को,
उस ने त्योड़ी ली चढ़ाए ;
माथे में पापी बाळ, जी :
"किस दूती ने भरमा लीया टुकड़े दीए जो छोड़ ?
आज के टुकड़े कहां गांवा दे, सुण साजन मेरा ?
इन लड़कों का कौण अहवाळ ?"
"टुकड़े में से तुझे क्या खाणा, सुण मीरासण मेरा ?
तू तो नान पुलाओ उड़ाओ, जी।"
"उखटी कमाई मुझे दिखा दे, सुण साजन मेरा।"
रंगला दुतारी झाड़दा, वोह मीरासी का लड़का :
घर में हो गई देखके मात, जी।
अपणे मन में सोचता मीरासी का लड़का, जी, मीरासण से बोले :
"राणी मारवण भेजी है ढोल के पास।
तेरे क्या मन भाउता, ? तु तो मीरासण हैगी मेरी:
मुझे मन के भेद बताऊ, जी।"
जब मीरासण समझाती अपणे खाविंद को :
"सुण मेरी बात, जी।
घड़ी में जाता, पल में जाईयो, जी।
राणी की संदेसा पूरो, जी।"
मन में अपणे सोचती, मन में करे बिचार ;
"घड़ी में कढ़ता पल में कढ़ :
पीछे मन भाउती खावां।"
जब सुणके मीरासी मीरासण से करे जवाब :
"शेर, बघेरे, चीते का रास्ता ;
वोह तो जाएंगे मुझ को खाए, जी।
अपणे हाथों की दो रोटीयां, जी।
मुझे जिआफत दे जिमाए, जी।"
"भूं पका दूं तुझे खिचड़ी, सुण साजन साजन मेरा ;
तुझे झोलके देऊं जिमाए।"
"खिचड़ी खिचड़ी क्या कहे ? खिचड़ी बड़ी बखान।
कब पकाओगे ? कब भावणा ? कब जीमके नरवरगढ़ को जाऊं ?
अपणे हाथों की दो रोटीयां, सुण, मीरासण मेरी,
हाजिर का मेला जिमाईए जी।
सेर ढाई आटा चोळां का लाईए, जी :
सवा सवा सेर के दो रोट, जी।
चुटका कालर नूण का, पांच चार गठे लाईए, जी।

चूले से नीचे सरका देईए, जी।"
टुकड़े तोड़के मुख में पा लीया मीरासी के बेटे ने :
घठा लीया था दबाए, जी।
टुकड़ा तो मुख में फूल गीया मीरासी के बेटे के :
गठे में से छूट गई आंख में छींट, जी।
घठे का खाणा तो पहिले रोणा, जी, ठाकुर, ठाकुर मेरा।
पलकां से चलता नीर, जी।
जब मीरासण बोलती मीरासी के बेटे को :
"भोजन पावे या रो रहा, सुण साजन मेरा, जी ? "
" भोजन ही भगवान है, सुण मीरासण मेरी :
मुझ को लड़कों का आ गीया दरेघ, जी।
कूण्डा सोण्टा ला दे, सुण मीरासण मेरी :
सूखी मिरचां लाए दे, जी।"
देवी सुरसती मना ली मीरासी के बेटे ने ;
अवालां कर ली याद, जी।
धरके रागड़ा लगा दीया, जी।
भांग ली बणाए, जी।
और दफा पतळा पूळा पीवे था, जी ;
गाढ़ा सूखा लीया बणाए, जी।
पांच चार पियाला पीता मीरासी का लड़का।
"हुक्का ताजा करके ला दे, मीरासण मेरी :
मुझे कोणे में खींदड़ा बिछा दे, जी।"
हुक्के का पीणा अमल चढ़ गीया मीरासी के बेटे को।
कोणे में गीया कट्ठा हो जी।
पांचों सातों लड़के को ले चली मीरासण उस की :
चली बजार की सैर को, जी।
घूमती घूमती आई हलवाई की दूकान को।
शरफी धर दी हलवाई की बात, जी :
"चंगी चंगी शीरणीं मुझे दिलाईये, जी।"
चंगी चंगी शीरणीं ले ली हलवाई के लड़के से।
थोड़ा थोड़ा लड़कों के हाथ में रख दीया, जी :
और सब चाट ली आप, जी।
दूसरी फेरी चलके आउती भठियारे के दूकान पे :
"भोजन दाऊत मुझ को दे दे, मेरी नगरी की भटियारी।"
"जो तेरे मन भावे ले ले, मेरी मीरासण।"
अशरफी रख दी उस की तंदूर पर, जी :
"नान पुलाओ मुझे दे दे कोफ्ता, मेरी भटियारी :
ज़रदा पुलावो चंगे चंगे दे दे, जी।"
थोड़ा थोड़ा लड़कों के हाथ में रख दीया, जी :
बाकी सब चाट लीया आप, जी।
घूमती घूमती चली घरां को जाए, जी।
रंगला चरखा तो आके ढा लीया, जी।
घूंघट लीया निकाल, जी।
लम्बा घूंघट डालके दोहरा दे सुणाए :
"तेरा सुहाग से मैं रंडी रहूं, जी।
कातणे कातके खाऊं, जी :
अपणा लड़कों को तू साम ले, जी।"
हाथ ना धोए, कुली ना करे, जी :
मीरासी मन में करे बिचार, जी :
"पांचों सातों लड़कों को रही साम, जी ;
घर को रही थी साम, जी।"
रंगला दुतारा खूण्डे से उतार लीया मीरासी के लड़के ने।
चला शहर को जाए, जी।
"राणी मारवण ने मुझे भेज दीया नरवरगढ़ को,
उस से क्या दूंगा जवाब, जी ?"
अपणे सोचता मीरासी के लड़के का,
आप कहते कहे बात, जी :
"नीचे कर लूं सारंगी की तार, जी :
नीचे गाउंगा आवाज, जी।"
बाराह मुट्ठी की तार चढ़ा लीए, जी ;
वहां पे पहुंची आवाज, जी।
जब मन में सोचता मीरासी का लड़का ;
मन में सोच बिचार :
"दो महीना तो बणियों में गुजार दूं, ठाकुर प्रभू मेरे।
दो महीना गुजार दूं सय्यिदां के।
मैं दो महीना गुजार दूं शेखों में, जी।
छह महीना बतीत करूं, सुण, ठाकुरजी मेरे।
जो राणी मारवण पूछूंगी, पिंगल की बेटी,
उस से जैसा कैसा दूंगा जवाब, जी।"
उरद बजार में आवे सांवळिया मीरासी का ;
वोह तो मारे प्रेम की तार, जी।
चढ़ी महल ऊपर के देखती के देखती राणी मारवण ;
खड़ी सुखावण केश, जी।
कान बुलेल बड़ गई मीरासी बेटे की :
पड़ गई कान बुलेल, जी।
अपणी बांदी को बुलाकर बांदी से करी जवाब :

"नौ तार का कोडड़ा तू ले दस्त के बीच, जी ;
दो चार कोड़डा मारके मीरासी के बेटे को।
तुम लाओ महल के बीच, जी।"
नौ तार का कोडड़ा बांदी ने ले लीए हाथ में :
वोह तो जाए मीरासी के पास, जी :
"महलों राणी बुलाउती तुझ को, मिरासी के लड़के।
तुझे राणी ने कर लीया याद, जी।"
चुपका चुपका आगे हो लीया चला महल को जाए, जी ;
करता राणी से जवाहिर, जी।
"बावें हाथ तेरे क्या पड़ा, मीरासी के लड़के ?
हाथ दाहिने क्या पड़ा, जी ?
बावें हाथ लाल खां लकड़ी पड़ा, जी।
दाहिने हाथ सारा, जी।
लाल खां लाकड़ी में पैर दे दे, जी,
तेरे पिण्डे पर फिरुंगी सार।"
"लाल खां लाकड़ी मैं पैर ना दूं, राणी मारवण।
मेरे पिण्डे पर ना सार।"
"मैं तो जाणां था आधी तियाही पहुंच गीया, जी।
तू ने मेरी जीऊड़ी को लाया दरेघ, जी।"
बोले मीरासी, "दस्तावेज मुझे लिखा दे, जी।
मैं तो ढोल दूंगा दिखाए, जी।"
कोरा सा कागज मंगा लीया, जी :
बैठ चौबारे के छाऊं में, जी,
लिख दी दस्तावेज, जी।

दस्तावेज

"चढ़ता जोबण यूं चढ़ा, जूं सांऊण की लोर :
चढ़ता जोबण मैं तो घेरा, जूं घेरा माळी बाग।
ढुळता जोबण मेरा यूं, जूं बाळू का रीत।
आंगण सूखे बाजरा, सुण, राजा ढोला :
भू में सूखे जवार, जी।
राणी सूखे पीऊ के ढोला साजन की नार।
अम्ब पक्के, रस चू गई, चूसणवाले दूर।
सूखी गेहूं कुड़ गई, सिला बटोरो आण।
छान पुराणी हो गई, खुडकण लागे बांस।
हाथ ना धोई, कुली ना करी, तेरे घर में जात कुजात :
पेट घड़ा, सिर दालड़, सांगर तोड़ण जाएं।
नौ टांक की पदमनी राणीजी मारवण :
तोळी फूलाण दे भार।
पतळी पतळी कामणी मैं मारवण,
खाऊं ढाई चांऊं, जी।"
मारवण ने पाती लिखी, "साजन साजन मेरा।"
वोह तो दे दे मीरासी के हाथ, जी।
अगाड़ी अगाड़ी कर लीया सांवळिया मीरासी का।
चली शहर से जाए, जी।
चल बागों में आउता सांवळिया मीरासी का।
वोह तो चला चला जाए, जी ;
आगे तो मिल गई रेवा माळी की।
सौण को बिचारदा सांवळिया मिरासी का।
सिर पर खारी रख दी माळी की लड़की :
खारी में पा रही तरकारी।
आसा उस को लग रही, जी।
भरी अबकोनी मिल गई रेवा माळी की।
"जेकर रेवा मिल गई मुझ को माळी की,
मैं लाऊं ढोल को साथ, जी।"
अगाड़ी अगाड़ी जैसा आउता सांवळिया मीरासी का ;
अगाड़ी तो घोड़ेवाळा मिल गीया घोड़े का सवार :
वोह तो डोळा ले रहा साथ, जी।
"ठाकुर, मुझ को घोड़ेवाला मिल गीया, जी :
मैं तो लाऊं ढोल को साथ, जी।"

मजिलों मजिलों चल पड़ा सांवळिया मीरासी का ;
नरवरगढ़ को जाए, जी।
सवा सौ कोस पक्के पर आ गीया आवे चौकी के पास, जी।
बोले चौकीदार ; क्या कहे ? "सुण, रास्ते का मुसाफिर,
कहां से आया ? कहां को चला ? सुण, रास्ते का मुसाफिर।"
"पिंगलगढ़ से आ गीया, सुण, चौकी के सिपाही :
मैं नरवरगढ़ को जाऊं, जी।
सांवळिया मेरा नाम है, सुण चौकी के सिपाही।"
बोले सिपाही, "तुझे क्या कहूं ? सुण सांवळिया मीरासी :
हमारी नगरी में ना बड़ो, सुण सांवळिया डाढी के,
नगर में ना बड़िए मूल, जी।"
देवी सारदा मना लीए सांवळिया मिरासी ने :
इस ने अबला कर ली सार, जी।
धरके रगड़ा लगा दीया सांवळिया मीरासी ने ;

सूखा दीया बणाए, जी।
"मरदां के, पियाला पी लो, जी :
थोड़ी थोड़ी चुसकड़ी ले लो, जी।"
वोह सिपाही लबाड़ गोटे रास्ते के बसणेवाळे :
भर भर पियाला पिला दी सांवळिया डाढी ने।
चरस का सुलफा पिला दीया सांवळिया डाढ़ी ने।
सुल्फा का पीणा अमल हो गीया सिपाही को :
नशे में हो गए चोर, जी।
छाती पे पैर रखके लख गीया सांवळिया डाढ़ी ने,
नरवरगढ़ के म्हां, जी।
नरवरगढ़ में बड़ गीया सांवळिया डाढ़ी का।
सांज पड़ी, दिन ढुळ गीया, धन का लगा भीड़, जी।
चलके सिरया कुम्हारी के बार में आ गीया, जी।
"आज की रैन बिसराम दे, नगर की री कुम्हारी :
भुलके को डेरे कूंच, जी।"
"पड़ जा गधां की दहळीज में, तेरी वारी जावां, मुसाफिर।"
असाढ़ जेठ के समां हुई, "मेरी नगर की कुम्हारी,
तळे से भड़सा मारे, मेरे ठाकुरजी ;
ऊपर से खाएगी खड़सा, जी।
चंगी जगा बता दे, नगर की कुम्हारी।"
"चढ़ जा इस पुड़साळ पर, वारी जावां, मुसाफिर।"
चढ़ गीया पुड़साळ पर सांवळिया डाढ़ी का :
सहीह सांज रहा सो, जी।
आधी रात गढ़ताळ बजी राजा ढोल की ;
चला बाहिर जंगळ के शिकार, जी।
रंगला दुतारा संवारता सांवळिया डाढी का।
बोले मीरासी ; क्या कहे ?

रागनी

"सुण गोविंद, गोविंद मेरा।
इस मारवण ने पाती लिखी, सुण, नल राजा के ढोल,
बैठ चौबारे की छाऊं, जी।
आंसू गेरी मोर सी, धर मस्तक पर हाथ :
'आवां आवां कर रहा ला दीए बारह मास।'
छान पुराणी हो गई, खुड़कण लागे बांस।
क्या तेरे कागज गळ गए ? क्या सियाही की ऊछ ?
राणी को भरोसा तेरे नाम का, तेरे नाम की ओट।
मारवण मारण जोग, काटण जोग करीर :
बायां चूड़ी जोग हैं, पहिने जोग सरीर।
आंगण सूखे बाजरा : भूईं सूखे जवार।
राणी सूखे पीऊ के, ढोल साजण की नार।
हाथ ना धोए, कुली ना करी, जी,
घर में जात कुजात।
मोटी पीणी, जांग बल, साळगर तोड़ण जाईं।"

इतनी बात सुण ले राणी सम्मी कछवाही,
दिल में सोच बिचारे, जी :
"जिस मीरासी की सिफत सुणों थी,
प्रभू, प्रभू मेरा, जी।
वोह तो आ गीया नगर के म्हां, जी।"
जनाना भेस उतारती सम्मीजी कछवाही,
कर लीया मरदाना भेस, जी।
नौ तार का कोडडा लीया हाथ के बीच :
चल सिरया कुम्हारी के आवे, जी।
"रात के चोर बता दे, जिस ने रातों को पाया कहराट :
कूंच की सूळी दे दूंगी, जी.
रातों पाया कहराट राजा ढोल के आंख ना लगे, जी।"
"सांज के वक्त मुझ को येह तो नमाणा देखे था, जी।
चढ़ जा उस पुड़साळ पर नगर दलीचा लीना देख
कान बूचके पड़ रहा मीरासी का, जी।"
वोह तो सिपाही ऊपर चढ़ गीया, जी :
ठोकर मारके उठा दीया सोते मुसाफिर को।
"रातों तू ने शोर मचाया, मुसाफिर चितरा, जी :
राजा ढोल की आंख ना लगे, जी।
कूंच की सूळी तय्यार करे, मुसाफिर चितरा, जी :
तू तो हो ले मेरे साथ, जी।"
"ऐसी तैसी में गई मारवण, जी,
ऊपर से गया राजा ढोल, जी।
मेरी जान बचा ले, सिपाही साजन, जी :
मुझ को देणा छोड़, जी।"
जब सिपाही बोलता, "तू सुण, मुसाफिर, बात, जी,
मुझे गांठ-गिरा दीखा दे, मुसाफिर जी :
मुझे पैसा धेला देणा, दे, जी।"
दो अशरफी निकालता मीरासी, जी ;
वोह दे दीए सिपाही को, जी।

दो अशरफी ले लें मुसाफिर से, जी,
दीया दरवाजा से निकाल, जी।
बोले सिपाही, "मुसाफिर, जी,
तू सुण भाई बिनती, जी,
येहां से तू भाग जा, जी :
पिछा फिरके मत देखणा, मेरे साजन, जी।"

अगाड़ी अगाड़ी चल पड़ा मीरासी :
देवी ली थी मनाए, जी।
"मेरे चितरा, मेरे साजन हो, जी :
रंगला दुतारा उतारा, मेरे चितरा, जी।"
वोह तो रंगला दुतारा बजाए, जी :
"आया था आसा करके इस नगर में, जी ;
अब चला निरासा हो, जी।"
राजा ढोल चला आवे था, जी।
उस की आवाज ढोल ने सुण ली, जी।
"जौणसी बात तू तो गाता आवे था, जी,
वही मुझे गाके सुणा दे, जी।
तुझे पराई क्या पड़ी, मेरे चितरा, जी ?"
"घोड़ेवाळा, तुझे अपणे काम से काम, जी।"
"तेरा दोहरा मेरे मन बसा, मुझे दोहरा देईए सुणाए जी।"
"आया था आसा करके इस नगर म्हां, जी :
चला मैं निरासा हो, जी।"
बहां पकड़के पीछे बिठा लीया, अब चला महल को जाए, जी।
देख मीरासी को राणी मन में सोची, जी।
घोड़ा बांध राजा गुड़साळ में चला महल को जाए :
चला महल को आवे : चला महल को जाए, जी।
बोले राजा ढोल, "मेरी राणी, जी,
इस को पलंग देणा बिछाए, जी।
चंगे भोजन जिमा देईयो, मेरी राणी हो।
इस को खूब करवाओ अशनान, जी।"
सुणके राणी ने पलंग तोशक ली बिछाए, जी :
चमदन चौकी बिछा दी, जी :
दही फुलेल मंगाया हो, जी।
अंग मळ मळ नहाउता वोह मीरासी ;
ले अल्लाह का नाम, जी।
राणी मारवण की पोशाक थी, जी,
वोह तो पहिनी मीरासी ने, जी।
ढाई सेर आटा छोले का राणी ने गुंदूर लीया :
सवा सवा सेर की दो रोटी पकवाई, जी।
चुटका धर कालर नूण का, दो गठे प्याज के, जी :
चौके के नीचे खसका दीया, जी।
राणी ने मीरासी से करे जवाब, जी :
"भोजन लाऊं तू जीम ले, जी।
तोड़के टुकड़ा मुख में पाया, जी।
मुख में गीया फूल, जी : गठे की पड़ गई छींट, जी।"
गठा खाणा रोणा : पलकों से बहे नीर, जी।
सम्मी कछवाही बोली, "भोजन पावे क्यूं रोवे है, जी ?
मन के भेद बता दे, जी।"
मीरासी का बेटा बोले, " राणी, जी,
भोजन ही भगवान है, मेरी राणी, जी।
भोजन को नहीं रोता, सुण, जी चितरा मेरी।
मैं तो रोता मारवण के भाग को, जी।
संगलदीप की पदमनी मेरी राणी, तोली फूलां की भार, जी।
पतळी पतळी कामणी खावे ढाई चांवळ, जी।
बाराह खाण का राजा ढोल है, पके बाराह खाण।
मैं बाराह खाण की सिफत सुणों था, देखी इक ही खाण।
राणी मारवण से ना जिमा जाए, ठाकुर, ठाकुर मेरा :
येह तो भोजन आवे जीमा ना जाए, जी।"
पांच चार टुकड़े तोड़ता मीरासी का,
खेस में लीए पाए, जी।
खसखस के बंगला में आउता वोह तो चितरा, जी :
राजा से जाकर करे जवाहिर, जी :
गोड़े से गोड़ा मिला दीया, जी।
खेस में हाथ पा लीया मीरासी :
वोह टुकड़े काढके राजा के साहमणे रख दीए, जी :
"सूटक की पदमनी राणी मारवण, जी :
वोह तो तोले फूलां की भार, जी।
पतळी पतळी राणी मारवण मेरी चातर हो :
वोह खावे ढाई चांवळ, जी।
बाराह खाण का राजा ढोल था, जी ;
पक्के बाराह खाण, जी।
मैं तो सिफत सुणों था, जी :
मैं तो दे
देख इक ही खाण, जी।

येह भोजन राणी मारवण से, जी :
उस से जिमा ना जाए, जी।"
दस्तावेज दे दीए मीरासी के लड़के ने।
दस्तावेज देखके सड़सड़ बांचता, जी।
हो दिलगीर महलों को चल पड़ा, जी।
आवे महल के म्हां, जी :
आके पलंग पर लेट, जी : रहा पलंग पर लेट, जी।
सम्मी कछवाही बोलती, "सुण राजा ढोला, जी।
बोलता क्यूं नहीं है, जी ?
क्यूं तू दी है पीठ, जी ?
क्यूं नशतर खोदे भींत, जी ?
कौणसी राणी तेरे चित बसी ? कौणसी दी उतार, जी ?"
"ना मैं देती पीढ़ी, मेरी राणी हो :
ना मैं नशतर खोद, जी।
राणी मारवण चित बसी, सम्मी दी बसार, जी।"

बोली सम्मी : क्या कहे ? "मेरे राजा चितरा हो,
कुएं में कंकर डही, रंग में डही मजीट, जी।
सेज चढ़ा बालम डही, मेरे चितरा हो ;
दे दे सोवे पीठ, जी।"
बोले ढोल राजा, "सुण राणी मेरी,
हाथ ना धोए, कुली ना करी, मेरी सम्मीजी कछवाही।
मेरे घर में है जात कुजात।
मोटी पीणी तेरे जांग पर, सम्मी, है, कछवाही :
तेरे टाक मनढेरी हो जाए, जी।
नौ टांग की पदमनी वोह तो राणी हैगी मारवण :
तोले फूलों के भार, जी।
पतळी पतळी कामणी खावे ढाई चांवळ, जी।
(लम्बी बधी क्या होवे ? लम्बी बधी खजूर, जी :
चढ़े जो मेवे छक ले, गिर जाए चिकणा-चूर :
पंछी छाऊं ना बैठी, फल लगते हैं दूर)



पेट घड़ा, सिर दालड़ी, मेरी साजन हो
सांगर तोड़न जाएं, जी।"

बड़ी फ़जर पहरा नूर का, जी :
चल हाथियों पे आवे, जी।
सत जुग साचा पड़ा बिरत दा, मेरे ठाकुर, जी।
तन मन करें जवाब, जी।
"तीन सौ साठ कोस से पिंगल के बेटी मारवण :
मुझे राणी मिलण का जोग, जी।"
हाथी थे बल्ख बुखारे के खड़े रातब खावें।
ढोला धणी अमाए, "मुझे राणी मिलण का जोग।"
"कस-कस बांधो अम्बारीआं, राजा ढोला, जी।
माथा बंदी सांधूर के, राजा के ढोल।
गढ़ कोट देंगे तोड़, जी।"
बोले ढोल, "तुम क्या कहो, हाथों के महाउतो ?
लंगर बेड़े इन के काट दो, जी :
बाहिर खोकरे बजाओ बांस, जी :
तवेले से न को काढ़ दो, जी।
इन मेरा कहणा ना माना, जी।"
दूसरी फेरी फिरके आउता नल राजा के बेटा :
वोह आवे करहां के पास, जी।
"अरज सुणो मेरी बिनती, भाई करहा पियारो,
तुम खड़ी रात खाएं, जी।
पिंगलगढ़ में राणी मारवण राजा पिंगल की बेटी।
मुझे राणी मिलण का जोग, जी।
तीन सौ साठ कोस बसे राणी मारवण :
मुझे राणी दो मिलाए, जी।"
बोले करहा, "तुझे क्या कहें नल राजा के ढोला ?
कस-कस बांद लो पूतलाण, जी।
सळीता दो लदाए, जी।
गिण गिण दे दो मुहारीआं चलेंगे साड़े तीन कोस, जी।"
"मोरी यक्का तुम काढ़ लो, ऊटों के सरवाणों :
इन के बजा दो कोखरे बांस :
थान से बाहिर इन को काढ़ दो, जी।"
हो दिलगीर चलके आवंदा राजा नल का बेटा :
रास्ते में करहा खड़ा था मारवण के घर का।
राजा से करे जवाब, जी :
"घूंघरू क्यूं लीए हैं हाथ, जी ?
क्यूं ली हाथों लाज जी ?"
"किस गळ बांधूं घूंघरू, मेरी भाबूली करहा ?
किस गळ बांधू लाज, जी ?"
"मेरे गळ बांधो घूंघरू, जी :
मेरे गळ बांधो लाज, जी।"
"तीन टांगों का पूंगड़ा क्यूंकर पहुंचूं जाए ?"
"तीन टांगां मत जाणीए चारों देऊं मिलाए।"
बोले ढोल, "सुण, भाबूली करहा, जी,
निशानी पट्टा मुझे लाके दे दिखाए, जी।"
"पहिला पहरा रैन का मैं पिंगलगढ़ की करूं सैर :
दूजा पहरा रैन का चर लूं नागर-बेल, जी :
तीजा पहरा रैन का पी लूं सरवर नीर, जी :
चौथा पहरा रैन का कर लूं नरवरगढ की सैर।"
बोले ढोल, "भाबूली करहा, जी,
मुझे निशानी पट्टा दे लाए, जी।"
सुणके राजा की बात को करहा करे जवाब :
"बांध कजावे टिण्डी लाद दो, जी : "
बांध कजावे टिण्डी लाद दे, अंधा दीया बिठाए।
पहिला पहरा रैन का मैं पिंगलगढ़ कर ली सैर :
दूजा पहरा रैन का बागों चर ली नागर-बेल।
बोले करहा, "सुण, भाई अंधे हाफिज,
तू सूत ले नागर-बेल, जी :
सूत कजावे पूर ले, भाई अंधे हाफिज।"
तीजा पहरा रैन का पी लीया सरवर नीर, जी।
धरके गोता लगा दीया, उस को कुदरत दी दिखाए, जी।
जब हाफिज से समझाउता वोह भाबूली करहा :
"तुझे कुदरत दी दिखाए। दिखाया पिंगल का देस।"
बोले हाफिज, क्या कहे ? "तू ने मुझे रातों कीया खराब।
उलटे-पुलटे गोता मारके टीण्डां ले पूर, जी।"
हाफिज वैसे अंधा हो गीया, चातर जी।
चौथा पहरा रैन का, ठाकुर ठाकुर मेरा,
आ गीया नरवरगढ के म्हां, जी।

बड़ी फजर पहरा नूर का राजा आया करहा के पास :
मन अपणे में सोचता राजा नल का ढोला।
जहां करहे को छोड़ गीया था, देखा उस ही ठौर।
चलके करहा पास आवंदा राजा का बेटा ;
आवे करहा के पास, जी।

"निशानी पट्टा दिखाए दे, मेरे भाबूली करहा :
मुझे पट्टा निशानी दे दिखाए।"
बोले भाबूली करहा, "सुण, राजा, मेरी बात,
हाफिज अंधे को ले पूछ, जी।"
बोले हाफिज, "इस ने कीया मुझे रातों को खराब,
इस भाबूली करहा ने, जी।"
बैठ निशानी राजा को दिखाउता भाबूली करहा।
नगर-बेल देख की राजा ढोला ने, और देख लीया नीर
बोले राजा ढोल, करहा से करे जवाब :
"नरवरगढ़ से पिंगलगढ़ की तय्यारी कर लो, जी।"
बोले करहा, क्या कहे, जी ? "सुण, राजा नल के बेटे,
मेरी सुण ले तू बात, जी ;
हारा थका मैं आ गीया, जी, सुण राजा ढोला।
मेरा हार देईयो उतार, जी।
अपणा इलाज मैं आप बता दूं, जी।
हल्दी दूध मुझे पिला दीए, खांड दे दे घोल।
सरवर ताल में नहला देईयो मुझे, नल राजा के बेटे :
मुझे नहला देईयो पंद्रहा दिन, जी।
साची मोतियों की झूल बणे, जी, मेरे चितरा, जी।
मोरी यक्का बणवाईए, जी, मेरे साजन, जी।"
करहा की बणत बणा दीए, जी :
कर दीए सोळह सिंगार, जी।
हीरे पाने सख्त पूंछड़ के लगे, जी :
(लालों जड़ी कुमान, जी)
दूध पिला दे, खिलावें चासणी, जी।
करहा रातब खाए, जी।
राणी सम्मी पर खबर हुई, मेरे चितरा :
"करहा की हुई तय्यारी, जी।
राजा जावेगा पिंगल देस, जी।"
बत्तीस अबरण सारती वोह तो सम्मीजी कछवाही :
लगा दीए सोळह सिंगार, जी।
मांग भरी थी सिंधुर की, बाल बाल मोती पावे, जी।
सालू पहिने दक्खनी, चली करहा के पास, जी।
"छाऊं में बाधूं करीर की ; चरूं नागर-बेल को।"
"नागर-बेल तेरी आज चरूं, जी :
मेरा वही रोज का जांड करीर :
पाणी पीऊं गांदळा, जी :
छीकढ़ दा कढ़ कहाऊं, जी।"

"हाथ जोड़ बिनती करूं,मेरे भाबूली करहा :
तेरे नौबर लगूं पैर, जी।
जिस वक्त ढोल को चाहे, मेरे करहा, जी :
उस वक्त दे दे जवाब, जी।"
"बचन ढोल को मैं दिए, सुण, सम्मी री कछवाही :
मैं तो उस के ले जाऊं साथ जी।"
"हाथ जोड़ करे बिनती, तू तो कंथ कंथ कर ले :
तू तो दे देईए जवाब, जी।"
"जो जवाब मैं दे दूं नल राजा के बेटे को,
वोह तो देगा मुझ को दाघ, जी।"
बोले सम्मी फिर कहे, करहा से करे जवाब :
"दाघों की नहनी सुळाईआं घड़ूंगी मीठे तेल।"
चलके महलों को आ गई सम्मी कछवाही।
आधी रात नौखंड गई राजा ढोल की खुल गई आंख।
मोहरी यक्का ले लीया नल राजा के बेटे ने :
वोह तो आवे करहा के पास, जी।
उम्बड़ आया राजा को देखके भाबूली करहा :
टुक लंगड़ा बण जाए, जी।
बोल करहा को नल राजा का ढोला,
करहा से करे जवाब, जी :
"अच्छे अच्छे को छोड़ गीया मैं, भाबूली करहा।"
"घबराके जब मैं उठा, जी,
टांग उतर गई कोळी से, जी।"
जब मीरासी कहे सांवळिया, जी :
"राजा मेरे, सुणता क्यूं है बात, जी ?
दो चार फाळीआं लो मंगाए, जी :
गिंठा बड़ा सा लो सुलगाए, जी ।"
धरके गींठे तो लगाए दी, जी :
उस में फाळीआं दे टकाए, जी।
जिस वक्त करहा ने देख ली पा दीया बहुत कराट।
सम्मी ने जैसा सुण पाया, ठाकुर ठाकुर मेरा,
चली करहा पे जाए, जी :
चलके करहा पे आउती सम्मी कछवाही ;
राजा ढोल से करी है जवाब, जी :
"रुक्का रौळा क्यूं पवा दीया, जी ?
मुझे मन के भेद बताए, जी।"
"अच्छे-भच्छे को छोड़ गीया था मैं भाबूली करहा,
चूळे से टूट गई टांग, जी।

उस को मैं दूंगा दाग, जी :
मैं करहा को दूंगा दाग, जी।"
सम्मी कहे, "सुण राजा मेरा ढोला,
मेरी अरज सुणो मन लाए, जी।
तीन सौ साठ करहा मेरे बाप के, जी :
गधे को देईयो कुम्हार का दाघ, जी :
करहा टेक लेगा टांग जी।"
सुणके राजा ने गधा मंगा लीया, जी :
मीरासी पकड़के गेर दीया, जी :
दाघ गधे की टांग, जी :
करहा टेक दे टांग, जी।
चलके राजा महलों को आउता, जी।
जब जाके राणी समझाउती, जी।
राणी ने पहरा दीया लगाए, जी।
दिन का पहरा लगा दीया, जी :
रात को कमर से बांध ले, जी।
दिन में ढोल समझाउता सांवळिया डाढ़ी को :
"रात को पटका बांधके रही सो, जी :
आधी रात मुझे जगा देणा सांवळिया डाढ़ी के,
तय्यारी लेंगे कार, जी।"
सहीह शाम पड़के सो रहा मीरासी का :
भूलके हो जाए सवेर, जी।
बड़ी फ़जर चलके आउता राजा ढोला पे।
"सहीह शाम पड़के सो रहा, जी, मैं मीरासी का।"
अगले रोज जैसा सो रहा नल राजा का ढोला,
"सहीह शाम चलके आउता सांवळिया डाढ़ी का।
जैसी राणी पड़ी सोती नल के बेटे की,
वोह तो पटका रही थी बांध, जी।
पेश-कब्ज जैसा काढता सांवळिया डाढी का,
पटका दीया था काट, जी।
रंगले दुतारे की खूंटी काढता, जी :
राणी के मुंह से अंगुस्ताना निकालके खूंटी दी, जी, पाए।
राजा ढोल को जगाएके सांवळिया डाढी का,
वोह तो चले करहे के पास, जी।
मोहरी पक्की बणा दीया करहा भाबूली का :
करहा से बणत बणा दीए, जी।
करहा पर ढोल बैठा नल राजा का बेटा।
नरवरगढ़ से चल रहा राजा ढोला,
पिंगलगढ़ को जाए, जी।
पहिला पहरा रैन का, ठाकुर ठाकुर मेरा,
चल बेरीयां पे आवे, जी।
कच्ची कच्ची को झाड़ता राजा को बेटा :
पक्कों को लेवे खाए, जी।
धरके करहा डपटा दीया राजा ढोले ने।

आधी रात नौखंड गई राजा ढोला को ;
वो तो पिंगलगढ़ को जाए, जी।
सरवर तालां में आवंदा नल राजा का बेटा।
सरवर तालां में जाए, जी :
आके पाणी पिला दीया करहा को सरवर तालां में :
पाणी दीया था पिलाए, जी।
पहर भर रैन रह गई, सुण, ठाकुर ठाकुर मेरा,
वोह तो पिंगलगढ़ में आए, जी।
बड़ी फ़जर पहरा नूर का, प्रभू प्रभू मेरा ;
वोह तो पिंगलगढ़ को आए, जी।
चलके बागों में जा बड़े नल राजा का ढोला।
नन्वा धोबी कपड़े धो रहा राणी मारवण के,
बोले नन्वा, तो क्या कहे ? "करहा के असवारा,
करहा को रोकके चलाओ, जी।
राणी मारवण पोशाक सूखे, करहा के असवारा।"
सुणके राजा उसी करता जवाब, जी :
सोने का टका दे दीया नन्वा धोबी को :
"मुझे दिखा दे पोशाक, जी।"
पल्ला उठाके दिखा दीया नन्वा धोबी का :
वोह तो पल्ला दीया दिखाए, जी।
बोला राजा, "सुण, नन्वे धोबी के,
मुझे राणी दे दे दिखाए, जी।"
बोले नन्वा, तो क्या कहे ? "करहा के असवारा,
मुझे क्या कुछ देगा इनाम, जी ?"
"राणी मारवण को मिला दे, धोबी के,
मुंह मांगा ले ले इनाम, जी।"
"अपणा करहा तू दे देईए, करहा के असवारा,
तुझे राणी को दूंगा मिलाए, जी।"

सत जुग सत्ता पहरा बिरत दा, ठाकुर ठाकुर मेरा,
तन मन करे जवाब, जी।

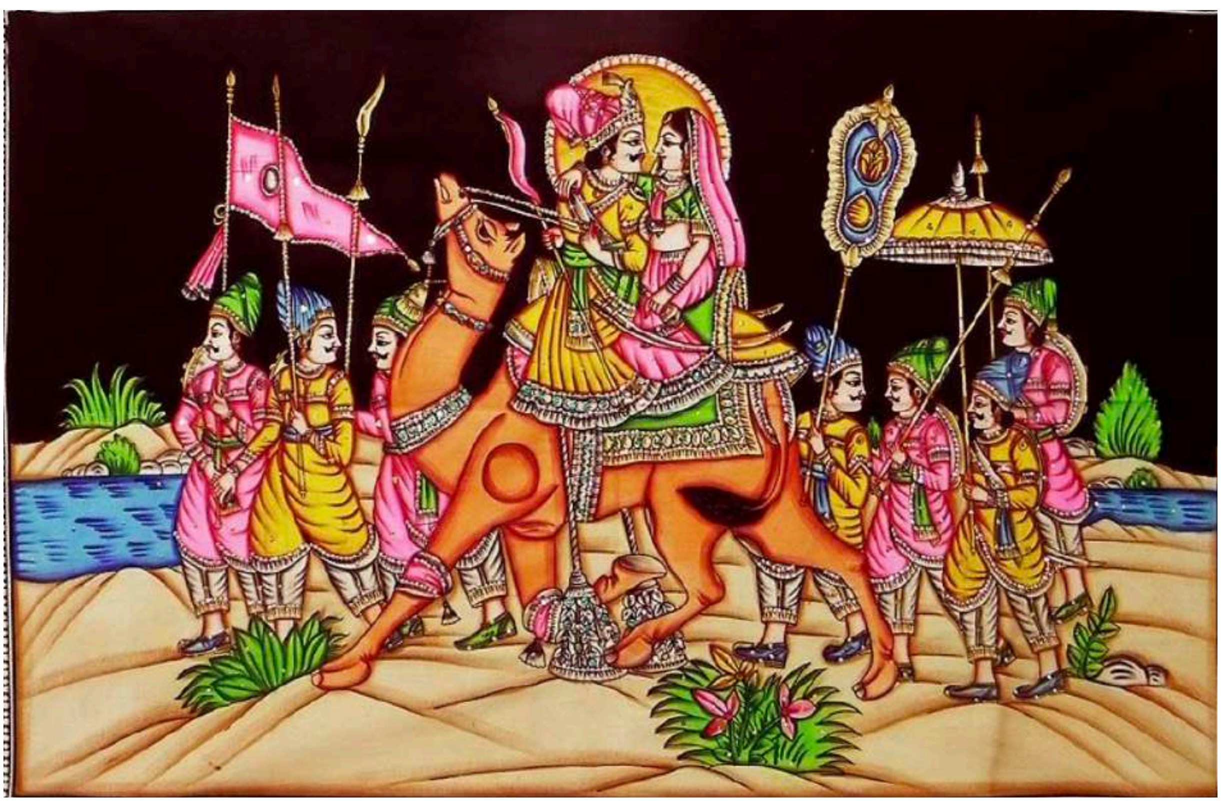
बड़ी फ़जर जैसी हो गई, ठाकुर ठाकुर मेरा ;
वहां सम्मी कछवाही की खुल गई आंखें जी।
"इक तो बैरी पुरवा बाळ थी, प्रभू मेरे :
दूजे बैरी हो गई नींद, जी :
तीजे बैरी डोम का सांवळिया, जी ;
मेरे खूंटी दे गीया मूंह के बार, जी।"
चलके वो आउती सम्मी कछवाही ;
वोह तो आवे बेरीयां के पास, जी।
"येहां को राजा ढोल गीया, मेरी बेरीयो पियारी ?
मुझे दीजो बताए, जी।"
"पक्के पक्के खा गीया नल राजा का बेटा :
वोह तो कच्चों के ला गीया ढेर, जी।"
सरवर तालां में आउती सम्मीजी कछवाही :
"येहां को राजा ढोल गीया, भाई सरवर तालो ?"
बोले सरवर ताल, क्या कहे ? "सम्मीजी कछवाही,
वोह तो पहुंच आए पिंगल देस।"
"करहा को मार जा बीजळी, करहा के असवारा।
खा जाए काळा नाग, जी।
दिल नहीं लगता मेरा, खड़ी बागों में डोलूं।
ढोल गीया परदेस, आज किस से बोलूं ?"
रोती रोती चली आउती सम्मीजी कछवाही :
वोह तो आई महल के म्हां जी,
वहां पकड़के करहे को ले चला नन्वा धोबी का,
अपणे घर को आउता, जी :
लाके चरखे से बांध दीया नन्वा धोबी ने।
धोबण करे जवाब, जी :
"ऐसा भोंडा जानवर आया, साजन साजन मेरा,
जिस को देखके मैं डर जाऊं, जी।"
इतनी बात सुणके गुस्से हो गीया भाबूली करहा को :
वोह तो चरखा लेके चल पड़ा, जी।
चलके बागों में आउता राजा ढोले पे ;
राजा से करे जवाब, जी :
पूछे, "ढोल, तुझे क्या कहा भाबूली करहा ?
मुझे मन के भेद बताईए, जी।
बड़ी बड़ी बातें वोह कही नन्वे धोबी की।
चरखा लेके चला आया मैं तेरे पास, जी।"
जीनपोश उतारके भाबूली करहा का,
राजा नीचे लेवे बिछाए, जी।

चलके पाणी को आउती रेवा माळी की,
चली कूएं पे जाए, जी।
"क्या तेरे दामण घालीया ? क्या गळ गाले जंजीर ?
दाख लखेरी छोड़के खावे जांड करीर ? "
"दाख लखेरी तेरी ना चरूं, सुण, रीवा माळी की ;
मेरा रोज का खा जा जांड करीर।"
"कहां से आया ? कहां जाएगा, करहे के असवारा ?
मुझे दीजीए साच बताए जी।"
"नरवरगढ मेरा आउणा, सुण, रेवा माळी की ;
मेरा पिंगलगढ को आउणा, जी।
राजा ढोल मेरा नाम है, सुण रेवा माळी की।"
"येहां से करहा निकाल लूं, करहा के असवारा।
मेरा बाघ कीया था पाएमाल, जी।
बीरवा बूटा सारा खा लीया, जी।
बाग कीया बरबाद, जी।"
बोले ढोल, तू क्या कहे ? "रेवा माळी की,
मेरी सुण ले तू बात, जी :
तेरी माळी की जात है, सुण, रेवा माळी की :
मंदी बोल ना बोल, जी ;
मैं राजा ढोल हूं ; सुण, रीवा माळी की,
तेरी मार उतार दूं खाल, जी।"
सुणके रेवा करे जवाब, जी :
"हाथ जोड़ करूं बिनती, करहा के असवारा ;
तेरी नौबर लागूं पैर, जी।
हम राजा के रखवाळीए ; सुण, राजा ढोला,
हमारे कहणे का बुरा ना मान, जी।"
पूछे ढोल, "सुण, रेवा माळी की,
तू मुझे अपणे भेद और महल बताईए, जी।"
अपणे महल बताउती वोह रेवा माळी की :
दीए मकान की निशानी बतलाए, जी।
"सीधी गळी पे आईयो, करहा के असवारा,
वहां हैगा नीम का पेड़, जी।"

सांझ पड़ी दिन ढुळ गीया, जी ;
धन का लगा भीड़, जी।
चलके नगर को आउता नल राजा का बेटा।
वहां गळी में कूण्टें धान, जी,
धान कूण्टी तग नेवे, "मूसळ की निहारों,

मुझे रेवा की गळी दो बताए, जी।"
"धान कूण्टी हमारा तग नेवे, सुण, करहा के असवारा,
हम हैं मुसळ की निहार, जी।
नीब का पेड़ उस का महल है, करहा के असवारा :
तू जाके लेणा देख, जी।
रहे तू रीधों खिचड़ी, जाए तो रस भर खीर।"
"भीड़ी गळी, खो घर, नहीं मिलण का जोग।"
"नैनां में रस बांध लो, झक मारेंगे लोग।"
चढ़ करहा को आउता राजा नल का बेटा।
करहा को बिठाऊंदा राजा नल का ढोला ;
करहा से नीचे आवे, जी।
नीब के पेड़े से बांधता भाबूली करहा को :
वोह तो देवे नीब से बांध, जी।
सफा दलान अंदर कोठ ई, जी :
रेवा ने पलंग दीया था बिछाए, जी।
"जम जम, ढोल, तुम आ जाओ, नल राजा के बेटा
तुम जाओ पलंग पर बैठ, जी।"
रेवा का माळी वहां आवंदा,
वोह कर रही गरम पाणी, जी।
चंदन चौकी बिछा दी उस रेवा माळी ने।
दही फुलेल लीया मंगाए, जी।
बांधके धार ऊपर गेरती थी रीवा माळी की।
"कित करवा ? कित बकेरू, जी ?
कित सरवर ? कित नीर, जी ?
तू नैन कहां रही लगाए जी ?"
"इत करवा ; इत बकेरू ;
इत सरवर ; इत नीर, जी।
बैसर उलजी हार में नैनों रही सुलजाए, जी।"
नहाया धोया चल आउता वोह माळी का लड़का, जी :
ली रसोई जीम, जी :
चल बागों में आउता माळी का लड़का :
चले ढोल पे आउती रेवा माळी की ;
सारी रात चौपड़ खेलती लड़की माळी की।

हो गई भूलके सवेर, जी।
बोली रेवा ; "सुण, राजा, मेरी बात, जी,
राणी मारवण को लाऊंगी, तुम चलो नौ-लक्खे बाग।"
सुणके करहा पर चढ़ गीया नल राजा का बेटा :
वोह चला बाग को जाए, जी।
चल महलों को आउती रेवा माळी की :



चल महल को जाए, जी :
मारवण से करे जवाब, जी :
"नरवरगढ़ से आ गीया राजा नल का ढोला :
वोह तो आया नो-लक्खे बाग, जी।
अपणी बांदी को भेज दे सहेली के पास, जी।"
उस ने ली सहेली बुलाए,
तीन सौ साठ सहेलियां मारवण की
चली महलों को आवें, जी ?
बोली मारवण, "सुणो मेरे संग की, जी, सहेली,
मेरी सुणती क्यूं नहीं बात, जी ?
तुम करो इक रूप, इक सिंगार :
तुम करो बाग में सैरी साथ,जी।"
चल बागों में आउती राणी मारवण :
वोह चली बाग में जाए, जी।
बोली रेवा, "सुण, करहा के असवारा,
तू सुणता क्यूं नहीं बात, जी ?
किन देसां से तेरा आउणा, करहा के असवारा ?
मुझे मन के भेद बताईए, जी।"
"नरवरगढ़ से मैं आ गीया, सुण, हार-हमेली-वाळी :
नल राजा का मैं ढोल हूं, आया मारवण के पास, जी।
किस राजा के बाग हैं, हार-हमेली-वाळी ?"
बोली,"पिंगल राजा का शहर है, राणी मारवण की बाग, जी।
येहां करहा निकाल ले, करहा के असवारा :
हमारा बाग कीया बरबाद, जी।
तेरे बरगे ढोल बहोत से आए, जी ;
सुण, करहा के असवारा, जी।"
"मेरे बरगा ढोल कोई नहीं आया, सुण, माळी का लड़की :
मैं नलकोटां का राजा हूं, जी।"
बोले ढोल, तू क्या कहे ? "संग की री सहेली,
तेरी मार उड़ा दूं खाल, जी।
आठ कुएं, नौ बाओळी, सोलह सौ पनिहार।
बेटा पूछो राव का, किन छैलां की नार ?"
"आठ कुएं, नौ बओळी, सुण, करहा के असवारा,
हम है सोळह सौ पणिहार, जी।
उन छैलां की गोरीयां, करहा के असवारा,
तेरे बरगे उन के चारवेदार, जी।"
"काहे का तेरा घड़ा, जी ?
काहे का तेरा डोल, जी ?
काहे का लेजू ईंडवी, पाणी के भरणेवाळी ?
क्या, राणी, तेरा मोल, जी ?"
"सोने का मेरा घड़ा, सुण, करहा के असवारा :
रूपे का मेरा डोल, जी।
रतन जतन की ईंडवी, सुण, करहा के असवारा :
रेशम की डोर, जी :
लाख टके म्हारा मोल, जी।"
"मिट्टी का तुम्हारा घड़ा, सुण, पाणी भरणेवाळी :
सड़ी चमड़ी का तुम्हारा डोल, जी :
घास फूस की ईंडवी, पाणी की भरणेवाळी।
थारा काणी कौड़ी मोल, जी।"
सुणके बात रेवा माळी की करे जवाब :
"बावें पार तेरा पांएचा भीजता, करहा के असवारा :
अपणा पाएजा लेणा संभाळ, जी।"
अपणा पाएजा राजा ने लीया उठाए :
सब को गीया पदम तो दिख, जी।
बोली रवा क्या ? "सुणो, राजा, मेरी बात :
सहेलियों में से मारवण ले पहचान, जी।"
बोले ढोल, "तुम सुणो, पाणी की भरणेवाळी ;
तुम सुण लो मेरी बात, जी।
करहा चढ़के मैं बैठूं, सुण, पाणी भरणेवाली,
मेरे सामहणे को सब लख जाओ, जी।
मैं लूंगा, मारवण को लूंगा, पहचान, जी।"
चढ़के करहा, पर खड़ा हो गीया नल राजा का बेटा।
तीन सौ साठ सहेलीयां मारवण की,
वोह लखें करहा के पार, जी।
जब आई राणी मारवण, आई करहा के पास,
करहा ने गेर दी झाग, जी।
बोले राजा ढोल, "तीन सौ साठ सहेली, जी,
तुम सुणो मेरी बात, जी।
अगली से पिछली मारवण नार, जी।"
बोलें सहेलीयां, "सुण, राजाजी, बात :
कितने का तेरा करहा है, जी ?
कितनी की तेरी जान, जी ? "
बोले ढोल, "तुम क्या कहो, सोळह सौ पणिहारी ?
मैं अरजू करूं, सुणो मन लाए, जी।
नौ लाख का येह करहा, सुणो, तुम सारी सहेली,
अठाराह लाख की जान, जी।"

बोली सहेलीयां, "सुण, करहा के असवारा,
हमारी सुणता क्यूं नहीं बात, जी ?"
"दो कौड़ी का तेरा करहा, सुण, करहा के असवारा,
तेरी तीन कौड़ी की जान, जी।"
"तेरी माळी की जात है, सुण, रेवा माळी की,
तू तो कड़े करे जवाब, जी।"
बोले रेवा, "राजा, तू क्या कहे 'माळी' माळी की ?
मेरे से कैसे कड़े जवाब, जी ?
करहा को लेके जाईयो पिंगल की कचहरी, जी :
मारके तीर कटोरी को उतार लो, जी :
कचहरी को आईयो जीत, जी।
उस कचहरी को जीतके काळी बागों में जाए ;
वहां जाईयो नाग को मार, जी।
खसखस के बंगला में जाईयो बैठ, जी।"
चढ़के करहा को चल पड़ा नल का कंवर, जी :
चला कचहरी को जाए, जी।
तरकश कनी निकालके, जी परे टकाए, जी :
जोड़के कनी कटोरी के दीता मार, जी।
गिरके कटोरी नीचे आवे कचहरी के म्हां, जी।
ना कोई दोआ सलाम करे नल राजा का बेटा :
खड़ा कचहरी के बार, जी।
बोले पिंगल, "सुण, करहा के असवारा, जी,
छेड़के करहा को जाईए काळी बागों में।
तेरे बरगे ढोल बहोत आवे, करहा के असवारा।
धसके करहा छेड़ता नल राजा का ढोला,
वोह तो काळी बागों में जाए, जी।
काळी बागों में आउता नल राजा का बेटा,
आवे दरवाजा के म्हां, जी।
वहां डेरा लगा दीया नल राजा के बेटे ने।
आधी रात नौखण्ड गई, ठाकुर ठाकुर मेरा,
निकला वहां से सांप, जी।
राजा ढोल की आंख खुल गई, जी।
खांडा सूतके पांच चार टुकड़े बणा दीए, जी :
ढाल के नीचे दबाउता नल राजा का ढोला।
बड़ी फ़जर पहरा नूर का, सुण, गोबिंद, गोबिंद मेरा,
ढोल चला खसखस के बंगला को जाए, जी।
खसखस बंगला को आउता नल राजा का ढोला :
वोह तो चला बागों में जाए।
पड़के रहा, जी, सोए, जी।
शाम पड़ी, दिन ढुळ गीया, प्रभू, प्रभू मेरा ;
चल कुएं पे आउता नल राजा का ढोला।
नहावे धोए तिलक लगावे, करते को शीश निवावे, जी,
बैठा पलोथी मार, जी।
पहर भर रैन बीत गई नल राजा के बेटे को :
पिंजरा की कुल खोल दी शेरबान ने, जी।
शेर खसखस के बंगला को आवे, जी।
पैदा करता मना लीआ नल राजा के बेटे ने।
पहिला हाथ लगाउता नल राजा का ढोला,
शेर के टुकड़े कर दीए दो, जी।
पड़के वो सो रहा, जी, नल राजा का बेटा, जी।
पहर भर रैन रह गई, प्रभू मेरे ठाकुर ;
चली शेरणी जाए, जी।
बैठी महलों में देखती राणी मारवण।
बोली सहेली, "रानीजी मारवण, जी,
राजा ढोल को येह मार दे शेरणी खुद आके
वोह तो सोते को देवे मार, जी।
इस शेरणी को दे मार, जी, राणी मारवण।"
गेर कमंद नीचे उतर गई राणी मारवण :
वोह तो आवे बागों के म्हां, जी।
सूतके खांडा ले लीया राणी मारवण :
उस ने हाथ में ले ली ढाल।
पैदा कर्ता मना लीया राणीजी मारवण ;
सूतके खांडा जैसी मारती राणी मारवण,
शेरणी कर दीए टुकड़े दो, जी।
पकड़ कमंद चढ़ गई राणी मारवण ;
चली महल को जाए जी।

बड़ी फ़जर, पहरा नूर का, जी।
बोली सहेली, "सुण, राणी मारवण,
इस ढोले को जगाए महल में लाऊं, जी।"
चली सहेलीयां बाग में ;
बोलें सहेलीयां, "नल राजा के ढोला,
तू सुणता क्यूं नहीं बात, जी ?
बहोत सोया, उठ जाग, जी :
करहा अपणा तय्यार करो, नल राजा के ढोला।
राजा, चलो कचहरी के म्हां, जी,

पिंगल राजा पे जाईयो, करो उस से दो बात, जी।"
अपणा करहा सिंगारता नल राजा का ढोला :
जोतिष-रूप मनाएके हुआ करहा पे असवार, जी।
चढ़ करहा को आउता नल राजा का कंवर, जी,
उसी कचहरी के म्हां, जी।
जय जवाहिर करे राजा ढोला,
बोले पिंगल, "सुण, महाराजा ढोला,
किस देसां से आउणा ? क्या है तेरा नाम ?"
नरवरगढ़ से आ गीया ; राजा ढोला मेरा नाम।
संगलदीप को आ गीया, सुण, राजा पिंगल,
मुझे राणी मिलण का जोग, जी।
सारी चौकीआं सरकारी, सुण, राजा पिंगल,
चौकीआं को आया मार, जी।
तेरा हुक्म सब बिरत रहा, राजा पिंगल,
मुझे क्या कुछ देगा जवाब, जी।"
"अपणा पाऊं का कपड़ा उठा ले, नल राजा के बेटे ;
मैं लूं निशानी देख, जी।"
अपणा कपड़ा उठा लीया, नल राजा के बेटे ने :
पैर पदम उस का देखता राजा पिंगल,
माथे में चन्दरमां, जी।
बोले पिंगल, "राजा ढोला, जाओ महल के बीच, जी।"
चलके महलों को आउता नल राजा का बेटा ;
करहा को दीया बागों में छोड़, जी।
नहावे धोए, तिलक लगाउता नल राजा का ढोला ;
कर्ते को शीश निवा, जी।
पांचों लावे बस्तर नल राजा का ढोला ;
पांचों लावे हथियार, जी।
खिलावत-खाना में जा बड़ा नल राजा का ढोला ;
वोह तो खिलावत-खाना में जाए, जी।

बड़ी जो थी सहेली हीरा माळी की,
उस का था रेवा नाम, जी।
बत्तीस अबरण सारती रेवा माळी की :
राजा ढोल पे मारवण बणके जाए, जी।
सेज पर जैसा बैठा नल राजा का बेटा,
पतेल-सोज जैसी बाळती रीवा माळी की।
चली राजा के पास, जी,
सेवा में आणकर फिरी आस पास, जी।

पाएं को खड़ी होवे रेवा माळी की,
राजा सिरहाणे को फिरे मुंह, जी।
हाथ जोड़ करे बिनती राजा से :
"मैं कर रही तेरी आस, जी।"
"मैं राजा का बेटा ; सुण, रेवा माळी की,
मुझे राजाओं-वाळी करणी रीत, जी।"
इतनी बात ढोल ने कही, सुण रेवा माळी की,
अपणे मन में हुई उदास, जी।
चलके मारवण पे आउती रीवा माळी की,
राणी से करे जवाब, जी।
"बाराह खाण के येह ढोल है, जी :
किसी की नहीं सुणता बात, जी।"
"बत्तीस अबरण सारके, लड़की सुनार की,
तुम जाओ ढोल के पास, जी।"
बत्तीस अबरण सारके सुनार की लड़की,
आवे ढोल के पास, जी।
चल सेजां पे आवे सुनार की लड़की ;
देख सूरत को बोलता नल राजा का बेटा :
"भला चाहे, तू जाओ, तुम राणी की सहेली,
तुम जाओ महल से बाहिर, जी।"
मारे शर्म आउती लड़की सुनार की,
वोह तो आवे राणी के बार, जी।
"बेटा है राजपूत का ; सुण, राणी मारवण,
वोह तो किसी की नहीं मानी बात, जी।"
पहिला पहरा नूर का, सुण, ठाकुर ठाकुर मेरा,
वोह तारवण करे जवाब, जी :
बत्तीस अबरण सारके, राणी तारवण,
आवे ढोल के पास, जी :
बोली राणी तारवण, "नल राजा के बेटे,
तू सुणता क्यूं नहीं बात, जी ?
तीन दफा मैं आ चुकी, नल राजा के बेटे,
आई तेरे पास, जी।"
"संगलदीप की पदमनी तुम सब सहेली।
तुम्हारी सब की ही निहार, जी।
जो चिट्ठी मुझ को लिखकर भेजी थी, जी,
उस का हाल सुणा दे, जब मैं जाणूं मारवण।"
बोली तारवण, "सुण, राजा ढोला," –
राजा से करे जवाब, जी –
"हम राजपूतां की बेटीआं, जी।

हम नहीं करती पड़दा फाश, जी।
मोटा चलण तेरे देस का, जी :
मोटी देखी चाल, जी :
और राजपूतां की बेटीआं, जी,
क्यूं आवें तेरे पास, जी।"
"कोई दोहरा अपणा लिखा सुणा देईए, जी,
जब मैं जाणूं मारवण, जी।
जब मेरे दिल को आवे करार, जी।"
हो दिलगीर चल पड़ी राणी तारवण, जी।
बोली तारवण, "सुणो सब सहेलीयो, जी ;
ना चूके तलवार से राजा का बेटा ;
ना चूके तीर से, जी :
वोह तो देगा इक ही रास्ता काढ़, जी।
बत्तीस अबरण सार ले, बहिण मारवण ;
सोळह सोळह ले सिंगार, जी।"
पतेल-सोज बाळके राणी मारवण
आवे राजा ढोल के पास, जी।
राणी मारवण जूं देखा जूं कोड़ा कूएं के बार :
आंगण सूखे बाजरा, भू में सूखे जवार :
राणी सूखे पीऊ की, बड़े मर्द की नार।
बसर रही, बसार दीए, बसार, बसार।
राणी सेज चढ़ी देखी, जी,
जूं कूएं पे देखे पणिहार।
"मुझे टकमा तेरे नाम का, राखीये नाम की टेक।
तीन सौ साठ ढोल बणके आ गई, जी :
दीए बाग से निकाळ, जी।"
पकड़ कलीजा बैठ गई राजा के पास :
वोह तो गई सेजां पे बैठ, जी ;
दीए चौपड़ बिछाए, जी।

खिलावत-खाना में बैठा नल राजा का बेटा ;
वोह खिलावत-खाना में जाएं, जी।
बोले ढोल, "सुण राणी, मेरी बात,
नरवरगढ़ को चल पड़ो, सुणो हमारी बात।"
बड़ी फ़जर पहरा नूर का माता से और सहेलीयों से करे जवाब :
बोली माता, "दान जहेज ले लो, जाईओ ढोल के साथ।"
राजा ढोल करहा पे हुए सवार :
चलके आए नरवरगढ़ के म्हां,
तोड़े नुकारे बाजें नरवरगढ़ के म्हां,
वहां हो रहे मंगळाचार।

***

रागनी सांग का इतिहास दो सौ साल का



पं. मांगे राम

(जुलाई 1905 - 16 नवम्बर 1967)

टेक- हरियाणे की कहाणी सुण ल्यों दौ सौ साल की
कई किस्म की हवा चालगी नई चाल की।।

एक ढोलकिया एक सारंगिया अड़े रहैं थे।
एक जनाना एक मर्दाना दो खड़े रहैं थे।
पन्द्रह-सोलह कूंगर जड़कै खड़े रहैं थे।
गली अर गितवाढ़्यां के म्हं बड़े रहैं थे।
सब तै पहलम या चतराई किशन लाल की।।

एक सौ सत्तर साल बाद फेर दीपचन्द होग्या।
साजिन्दे तो बढ़ा दिए घोड़े का नाच बन्द होग्या।
निच्चे काला दामण ऊपर लाल कन्द होग्या।
चमोले नै भूलग्ये यूं न्यारा छंद होग्या।
तीन काफिए गाए या बरणी रंगत हाल की।।

हरदेवा, दुलीचन्द, चतरू एक बाजे नाई।
घाघरी तै उननै भी पहरी आंगी छुड़वाई।
तीन काफिए छोड़ इकहरी रागणी गाई।
उन तै पाछै लखमीचन्द नै डौल्ली बरसाई
बातां ऊपर कलम तोड़ग्या आज काल की।।

मांगेराम पांणची वाला मन म्हं करै विचार।
घाघरी के मारे मरग्ये अनपढ़ मूढ़ गंवार।
शीश पै दुपट्टा जम्फर पायाँ म्हं सलवार।
इब ता आग्गै देख लियो चौथा चलै त्यौहार।
जिब छोरा पहरा घाघरी किसी बात कमाल की।।

रागनी -2

टेक- कुछ ख्याल रह्या ना दुनियां की चाल बिगाड़ी।
दीपचन्द के खिमा-कुतबी धौली चादर ओढ्या करते।
आड़ा-तिरछा ढूंगा मार कै हाथ तले नै कोढा करते।
गोली की ज्यूं चलै निशाना, तीन काफिए छोड्या करते।
खीमा सोरठ बण जाता फिर दीपचन्द बणता बणजारा।

मरगे कुतबी-मरगे कुतबी, मैरै मारिया फटकारा।
बीजा बणकै आया करता बीन बजाकै सांग दिखार्या।
दो नकली तख्तां के ऊपर बकते बात उघाड़ी।।

हरदेवा तै रांझा बणता, चतरू की बणाई हीर।
शाद्दिक के म्हं चाले काटे कहते देखे मरद और बीर।
मरगे चतरू-मरगे चतरू बोलां के मारै था तीर।
बाजे नै एक झम्मन पाल्या, गिण का डांक मराई तीन।
हाये मरगे-हाये मरगे आंख्यां देख्या करो यकीन।
जमाल नै कुरान पढ़ कै दुनिया का बिगाड्या दीन।
बहुत से माणस हीरामल नै पागल कहैं अनाड़ी।।

दुनियां के मांह शोर माचग्या लकड़हारा गावण लाग्या।
मरगे दादा-मरगे दादा भर-भर डोल रितावण लाग्या।
बहुत सी दुनिया पाछै छोड़ी नये नये सांग सुणावण लाग्या।
लखमीचन्द का माईचन्द था, काठबैल ज्यूं हाल्या करता।
बागां म्हं नौटंकी बण कै खटोले से साल्या करता।
आगै आगै नौटंकी अर पाछै बामण चाल्या करता।
लखमीचन्द माली की बण कै बांध्या करता साड़ी।

धनपत नै एक श्याम बणाया, श्याम खटकग्या सार्यां कै।
पाक्का श्याम डूम का छोरा, काच्चे श्याम कम्हारां कै।
शीलो-शीलो कह कै बोलै लागै खटक गंवारां कै।
आंगलियां के करै इशारे जा लि बलख बुखायां मैं।
शी-शी का एक साँग टोर दिया जणों खाल्यी मिर्च बेतारयां नै।
मुंह जल ज्या तै मिट्ठा खा ले, ले अगले समझ इशारयां नै।
जानी चोर पै आंह्गा ला दिया धनपत पिछल पिछाडी।।

चन्द्रबादी दत्तनगरका तेली एक लेर्या छोरा।
कर्मू तै कर्मबीर बणा दिया जिस पै बांगर पागल होर्या।
मुंह मरकावै करै इशारे आंख्या म्हं स्याही का डोरा।
एक हीर के नै दीप बगाड्या या हिन्दू रह्या ना मुसलमान।
बादियाँ का हुक्का पीवै जाणै सै यू जगत जहान।
बनवारी का टील्ला करकै दत्तनगर पड़वाए कान।
ही-ही करकै रुक्के मारै जणौं लुच्च्यां नै फसल उजाड़ी।।

रामकिशन माईराम का चेला बेड़ेबन्द की पदवी थ्यागी।
दिन धौली पंसारी बणग्या मुस्से नै एक हल्दी पागी।
आंख णींच का पड़कै सोद्या पाले नै तै बकरी खा गी।
किसका पाला किसकी बकरी सहम बण्या सै क्यों रखवाला।
परमेश्वर का भजन कर्या कर, गल म्हं पहर काठ की माला।
ब्यास का ब्यास बण्या रहग्या तू ब्यास बण्या था नारनौंद आला।
यूं धंधा तेरा चालै कोन्या तूं टोहले काम अगाड़ी।।

मांगेराम मसीत्ता तेरा भाई का भाई रहग्या।
मांगेराम सुरजमल तेरा पाई का पाई रहग्या।
मांगेराम टेकचन्द तेरा नाई का नाई रहग्या।
चौथी बारां एक कपूरां रोकें खड्या रकाने नै।
ध्रुव भगत अर कृष्ण जन्म के ओटै कोण निशाने नै।
बाप और बेटी सुणा बैठ कै पाटगी जाण जमाने नै।
मांगे राम ग्यान लुटग्या तेरी खुल्ली पड़ी किवाड़ी।।

***

सरवण और फरीजन के तीन संस्करण

जैसा कि देहली और करनाल जिलों से कही गई गाथा

(सरवण और फरीजन दिल्ली, गुड़गांव, करनाल, हिसार और रोहतक जिलों में खूब गाथा जाने वाली गाथा का नाम है।

यह विशेष तौर पर दिलचस्प है कि यह पूर्ण रूप से मिथक है। पिछले पचास सालों में गढ़ा गया है। राजनीतिक कारणों से लोगों की बीच स्थायी दंतकथा बन गई)

(फरीजन, फरीदन, फरीजर और फरीजान मि. विलियम फ्रेजर के नाम का विकृत रूप हैं। जो दिल्ली के मुगल सम्राट के भूतपूर्व राजनीतिक रेजीडेंट थे। 22 मार्च 1835 को लोहारू के नवाब शमसुद्दीन खान के उकसावे पर जिनकी हत्या कर दी गई थी। हत्या की न्यायिक जांच हुई और 3 अक्तूबर 1835 को नवाब को फांसी दी गई थी। वह बहुत स्वछंद चरित्र का व्यक्ति था। दिल्ली में उसके दरबारी व कृपा पात्र लोगों को उसकी अच्छी तरह से याद है। इन महिलाओं को उसकी प्रशांसा में गीत गाने की आदत थी। निस्संदेह इस पूर्ण मिथक के जिम्मेदार हैं। मि. फ्रेजर के संबंध में कि सरवण एक जमींदार अथवा किसान की पत्नी थी , जिसके हाथों मारा गया। विलियम सलीमन ने 1844 में Rambles and Recollections of an Indian Official, Vol. II के पृष्ठ 210 पर संमि. फ्रेजर की हत्या का पूरा विवरण दिया है। इसके अनुसार सन् 1798 में, बनारस में, मि. चेरी व अन्य के हत्यारे वजीर अली की प्रशंसा में दरबारियों ने नरसंहार के बीस साल बाद समान कारण से प्रशंसा में गीत गाए।)

(सच्ची कहानी यह है कि मि. फ्रेजर ने नवाब शमसुद्दीन खान को संपति के मामले में दिल्ली का फैसला स्वीकार नहीं था। इस फैसले से वह बहुत परेशान था। लेकिन नहीं आया। अपने पुराने नौकरों करीम खान और उनिया को फ्रेजर को मारने के लिए छोड़ दिया। 22 मार्च 1835 को उसे मौका मिल गया जब मि. फ्रेजर राजा किशनगढ़ द्वारा दी गई दावत से लौट रहा था रात के करीब 11 बजे करीम खान उसे गोली से मार दिया। बाद में उसने न्यायधीश मि. कालविन के समक्ष मि. साइमन फ्रेजर संबंधी अपराध में अपनी शिरकत को स्वीकार कर लिया और पूरी घटना का ब्यौरा दिया। परिणामस्वरूप करीम खान और नवाब को फांसी दी गई।)

उर्दू के कार्य 'तारीख मखज़न पंजाब' लाहौर 1877 के लेखक मुफ्ती गुलाम सरवर कुरेसी ने पृष्ठ 26 पर मि. फ्रेजर की हत्या के संबंध में निम्न विवरण दिया है – " नवाब शमसुद्दीन खान लोहारू के नवाब अहमद बख्श खान के उत्तराधिकारी थे। उसके दो भाई थे, अमीनुद्दीन खान और जियाउद्दीन खान। उन्होंने अपने पिता की वसीयत के अनुसार संपति में दावा किया। मुकदमा मि. विलियम फ्रेजर के समक्ष आया, जो दिल्ली सरकार के प्रतिनिधि थे। उसने सरकार को रिपोर्ट किया कि पिता की वसीयत के अनुसार तीनों भाइयों का संपति में हिस्सा बनता है। इसके प्रतिशोध में अक्तूबर 1835 में नवाब शमसुद्दीन खान के लोगों ने उसकी हत्या कर दी। एक साल तक चली जांच-पड़ताल के बाद उन्हें दोषी पाया गया और फांसी दी गई और फिरोजपुर में उसकी संपति को गुड़गांव जिले में शामिल कर दिया गया।" सर विलियम सलीमन, हालांकि, इस विचार के थे कि बंटवारे संबंधी सरकारी कार्रवाई का हत्या के साथ बहुत कम संबध है।)

आर. सी. टेम्पल

1.

मि. फरीजर की हत्या की कहानी

(करनाल जिले के निगधू गांव के किसान मान सिंह ने 22 फरवरी 1884 को यह कहानी सुनाई)

आर. सी. टेम्पल को इस कहानी के तीन संस्करण मिले, लेकिन उन्होंने पहले संस्करण को यथावत रूप में नहीं दिया, क्योंकि इसके मूल रूप को प्रस्तुत करने का कोई महत्व नजर नहीं आया। इस कहानी का भावानुवाद प्रस्तुत कर दिया। हम यहां इस कहानी का अविकल अनुवाद की अपेक्षा सार दे रहे हैं।

गुघीयाणा गांव का अमींचद नामक सुंदर युवक को किसी कारण से सजा हो गई। सजा के दौरान वह नहर पर काम कर रहा था। एक दिन मि. फ्रेजर काम का निरीक्षण करने के लिए आया। अमींचद को देखकर उसने बार बार कहा कि कितना सुंदर युवक है। उसके बार बार ऐसा कहने पर उसके अधिकारी ने कहा कि इसकी बहन की सुंदरता के मुकाबले में तो यह कुछ भी नहीं।
फ्रेजर ने प्रस्ताव रखा कि यदि वह अपनी बहन को ला दे तो उसे छोड़ दिया जाएगा। अमीचंद उससे स्वीकृति देता है। धोखे से अपनी बहन सरवण को उसे सौंप देता है। सरवण का पति अपनी पत्नी को ढूंढते हुए मि. फ्रेजर तक पहुंचता है और अपने प्रति किए अन्याय की गुहार लगाता है। लेकिन उसे कोई उत्तर नहीं मिलता और अपनी पत्नी के अपहरण के लिए फ्रेजर की हत्या करने का मौका तलाशता है)



14051 Professional dancing girls in the streets of old Delhi, India.
COPYRIGHT 1907 BY H. C. WHITE CO.

2. सरवण और फरीदण का गीत

(दिल्ली से प्राप्त संस्करण)

धुर कलकत्ते से चला फरीदन, पांचों पीर मनाए।
लांडा घोड़ा बुढ़ा फरीदन सरवन ढूंढण जाए।
पांच मुकाम दिल्ली में बोले, छठा घूंगाणा गांऊ।
धौळे कूएं पर तंबू तण गए, मेखें दे गड़वाए।

गळी गळी चुपरासी डोलें, सरवण लाझदी नाहीं।
बछड़े चुगावंदा अमी चंद पकड़ा मुशकीन दे बंधवाए।

"मुशकीन मेरी छोड़ दे, फरीदण ; सरवण दूं बतलाए।
बड़े बगड़ से सरवण निकसी, छोटे बगड़ नूं जाए
सरवण बाजरे म्हां।"

बाजरा काटती सरवण पकड़ी, दांती ढूंगी म्हां।
सिर पर पीढ़ा, बगल में चरखा, पूणी लटकती जाए :
हाथ में बेला, बेले में कंघी दौड़ी नाईन के जाए ।

"उलटी सुलटी मेंढियां गंधती, ठाड़ा लेवण जाए।
ओ, री बहिनो, मिल लो, सुहेली : फिर मिला नहीं जाए।"

ऊंगळी पकड़के, पोंचा पकड़ा, हौदे ली बिठलाए।
हाथी के हौदे बैठी, सरवण टप टप रोंदी जाए।
"शहर घुंगाणा, जम जम बसीयो। अमी चंद बसीयो नाहीं।"

आधी रात पहर का तड़का तारे गिणदी जाए।
पांच पीर का मळीदा सूखा फौजों में बटा जाए।

"लहंगे का पहिना छोड़ दे, मेरी सरवण, साया सीना लगाए।
सूप का पहिना छोड़, मेरी सरवण, टोपी से नेहा लगाए।
अंगी का पहिना छोड़ दे, मेरी सरवण, पेटीकोट से नेहा लगाए।
पीढ़ी का बैठणा छोड़, मेरी सरवण, कुरसी से नेहा लगाए।"

"टोपी का पहिना छोड़ जाए, रूई के, पगीया बंधन ले।
पतलून का पहिना छोड़ जाए, रूई के, धोती का बंधन ले।
कोट का पहिना छोड़ जाए, रूई के, मिरजाए का पहिना ले।
बूट का पहिना छोड़ जाए, रूई के, जूती से नेहा लगाए।
गिट-पिट बोली छोड़ दे, फरीदण, सीधी बोली ले।"

3.
सरवण और फरीजन का गाथागीत

(यह संस्करण लोहारू के नवाब शमसुद्दीन खान के भतीजे स्वर्गीय नवाब अलाऊद्दीन अहमद खान द्वारा फारसी लिपि में सुंदर ढंग से लिखित पांडुलिपि से है। उन्होंने इसे सन् 1872 में मि. डेलमेरिक के पास भेजा था। यह उनके हस्तलेख में है। इसके साथ अंग्रेजी में उनके द्वारा 26 टिप्पणियां भी हैं। इस व्यक्ति की उल्लेखनीय साहित्यिक उपलब्धियां थीं।)

1

धुर कलकत्ते से चला फरीजण, पांचों पीर मनाए।
पांच मुकाम दिल्ली के बोले, छठा गुंगाणा गांए।
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

2

धौळी कूएं पर तम्मू गड़ाए, मेखें दी गड़वाए।
हुक्का कीता मीन चंद पकड़ा, बेड़ी दी ठुकवाए।
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

3

"इक चीज तेरी, कहे, अमीं चंद, दूसरी कहू की नाए।"
"मेरी हो, तो दे दूं, फरीजण ; दूसरी की दे ना जाए।"
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

4

"सरवण का जो भेद बता दे, हाथी दूं इनाम।"
घर के भेदी भेद बताया, "सरवण बाजरा माए।"
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

5

धौला घोड़ा भूरा फरीजण बाजरा कूंदता जाए।
बाजरा काटती सरवण पाकड़ी, दरांती ढूंगी माए।
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

6

हाथ पकड़कर घोड़े बिठला ले, टीस टीस आंसू जाए।
पांच पीड़ बाजरा काटा, छठा ना काटा जाए।
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

7

"बाप को तेरे चौधरी कर दूं, भाई थाणेदार।"
"चाची ताई सब आ मिल लें, मीन चंद मिलणा नाए।"
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

8

"मिलणा हो, तो मिल ले, मीन चंद; फिर मिलणे की नाए।"
हाथ में बिलवा, बिलवे में कांघी, नाई के घर जाए।
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

9

"उलटी सुलटी मेंढी गुंधे, नाई की : गुंधण फिर नाए।"
हाथ पकड़कर हौदे बिठा ली, हिरणी की जूं डाकर आए।
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

10

आधी रात पहर का तड़का तारे गिणते जाए।
"पीढ़ी बैठणा छोड़ दे, सरवण ; कुरसी बैठणा सीख।"
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

11

"लहंगा पहरणा छोड़ दे, सरवण, साया पहरणा सीख।"
आगे सुनार की, पीछे मुनिहार की, बीच में सरवण जाए।
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

12

"पांच मोहर का टीका घड़ा दूं ; माथा दमकता जाए।
अस्सी मोहर की नाथ गड़वा दूं, तोता फड़कता जाए।"
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

13

"अस्सी गज का लहंगा सिला दूं पड़ू फड़कता जाए।"
"पांच भाई के पाग उतारे, फिर बांधण के नाए।"
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

14

बड़े भाई ने देणे कहे थे, छोटा देता नाए।
पांच गांऊ कर लीए बस में, मीन चंद बस में नाए।
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

15

छोटी बगड़ से सरवण निकसी बड़े बगड़ को जाए।
गळी गळी चुपरासी फिर गए, घर घर थाणेदार।
अल्लाह जाणे, री, पांचों पीर मनाए।

धुर कलकत्ते से चला फरीजण, पांचों पीर मनाए।

पांच पीर – ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी ऊसी दिल्ली, सन् 1235 ; ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, अजमेर सन् 1236
शेख निजामुद्दीन औलिया ; दिल्ली सन् 1325 नसीरुद्दीन अबूलखैर अबदुल्लाह इब्न ऊमरा अल बैजारवी; सन् 1286 ; सुलतान नसीरहद्दीन महमूद, दिल्ली के सम्राट सन् 1266 ।

पंज पीरों की उत्पति पांच पवित्र व्यक्तित्वों से है – मुहम्मद, अली, फातिमा, हसन और हुसैन ।

गुंगाणा गांव – नवाब के अनुसार दिल्ली जिले की सुनपत तहसील में है।

देस हरियाणा प्राप्त करने के लिए संपर्क करें

कुरुक्षेत्र	-	विकास साल्याण	9991878352
	-	योगेश शर्मा	9896957994
यमुनानगर	-	बी मदन मोहन	9416226930
अंबाला शहर	-	जयपाल	9466610508
करनाल	-	अरुण कैहरबा	9466220145
इंद्री	-	दयालचंद जास्ट	9466220146
घरौंडा	-	राधेश्याम भारतीय	9315382236
	-	नरेश सैनी	9896207547
कैथल	-	कुलदीप	9729682692
जीन्द	-	मंगतराम शास्त्री	9516513872
टोहाना	-	बलवान सिंह	9466480812
नरवाना	-	सुरेश कुमार	9416232339
सोनीपत	-	विरेंद्र वीरु	9467668743
पानीपत	-	दीपचंद निर्मोही	9813632105
पंचकुला	-	सुरेंद्र पाल सिंह	9872890401
	-	जगदीश चन्द्र	9316120057
रोहतक	-	अविनाश सैनी	9416233992
	-	अमन वासिष्ठ	9729482329
भिवानी	-	का. ओमप्रकाश	9992702563
दादरी	-	नवरत्न पांडेय	9896224471
सिरसा	-	परमानंद शास्त्री	9416921622
	-	राजेश कासनिया	9468183394
हिसार	-	राजकुमार जांगड़ा	9416509374
महेन्द्रगढ़	-	अमित मनोज	9416907290
मेवात	-	नफीस अहमद	7082290222
शिमला	-	एस आर हरनोट	01772625092
राजस्थान (परलीका)	-	विनोद स्वामी	8949012494
चंडीगढ़	-	ब्रजपाल	9996460447
	-	पंजाब बुक सेंटर, सैक्टर 22	
दिल्ली	-	संजना तिवारी , नजदीक श्रीराम सेंटर,	
	-	आरके मैगजीन , मौरिस नगर, थाने के सामने	
	-	एनएसडी बुक शॉप	
ई-प्राप्ति	-	www।notnul।com/desharyana	